वर्ष : 2 ✦ અંક : 4
જુલાઈ-ઑગસ્ટ, 2012
સળંગ અંક : 10

कर भला होगा भला
- છગનભા

માત્ર સંસ્થાકીય
પ્રસાર માટે

સર્વ વિશ્વવિદ્યાલય-વૃત્ત

કડી સર્વ વિશ્વવિદ્યાલય, ગાંધીનગરનું વૃત્તપત્ર

સંપાદક : મણિભાઈ પ્રજાપતિ

પ્રથમ દૃષ્ટિએ જ જીતી લે તેવો પ્રેમનીતરતો મુખભાવ. મરક મરક કરતો કુમાશભર્યો ચહેરો. આંખોમાં જાણે યુગોનાં સૌદર્ય-દર્શનનો રોમાંચ આંજ્યો હોય ! જન્મજાત શિક્ષક. સાહિત્ય અને કળાના રસભોગી ભાવક-વિવેચક. સૌન્દર્યદર્શી કવિનું કુતૂહલ અને શિક્ષકની પ્રસન્નતા તેમના વક્તવ્યમાંથી ઝરે. તેનો ચેપ તેમના વિદ્યાર્થીઓ અને રસિક શ્રોતાઓને પણ લાગતો.

– ધીરુભાઈ ઠાકર

✴

સાહિત્ય અને સંસ્કારના ક્ષેત્રના મણિ, 'પદ્મશ્રી' પુરસ્કાર વિજેતા શ્રી ભોળાભાઈ પટેલની વિદાયથી ગુજરાત ગરીબ થયું છે. એમને અપાયેલી ભાવભરી અંજલિઓ તેમના શિક્ષણ, સાહિત્ય અને સંસ્કારક્ષેત્રે તેમણે આપેલા ઉત્તમ અને બહોળા પ્રદાનની પ્રશસ્તિઓ છે.

– કુલીનચંદ્ર યાજ્ઞિક

✴

કડીના સર્વ વિદ્યાલયની વાતનો પ્રારંભ કરે, ત્યારે ભોળાભાઈનું નાન્દી વાક્ય એ હોય કે 'અમારા જમાનામાં કડીનું સર્વ વિદ્યાલય એ કાશી ગણાતું હતું.' કાશીમાં પંડિતો જે રીતે વિદ્યાયજ્ઞ કરે, તેવો વિદ્યાયજ્ઞ કડીના સર્વ વિદ્યાલયમાં ચાલતો હતો. કડીનું પુસ્તકાલય શાળા ખૂલે તે પહેલાં એક કલાક અગાઉ ખૂલી જતું અને શાળા બંધ થાય પછી એક કલાક બાદ બંધ થતું. ભોળાભાઈ કહેતા કે 'કડી એ મારું કાશી અને એનું પુસ્તકાલય એ મારું તીર્થસ્થાન.'

– કુમારપાળ દેસાઈ

સર્વ વિદ્યાલય, કડી કેમ્પસમાં
કેન્દ્રિય કમ્પ્યૂટર લેબોરેટ્રીનું
ઉદ્દ્ઘાટન કરતા સર્વ વિદ્યાલય
કેળવણી મંડળ, કડીના
પ્રમુખશ્રી ડૉ. રામભાઈ પટેલ.

સર્વ વિદ્યાલય, કડી કેમ્પસમાં કેન્દ્રિય
કમ્પ્યૂટર લેબોરેટ્રીના ઉદ્દ્ઘાટન
પ્રસંગે ઉપસ્થિત મહાનુભાવો
સર્વશ્રી ચેરમેન વલ્લભભાઈ પટેલ,
ડૉ. રામભાઈ પટેલ, ડૉ. મણિભાઈ પટેલ,
શ્રી ખોડભાઈ પટેલ વગેરે.

એસ. એસ. પટેલ કોલેજ, ઓફ
એજ્યુકેશન, ગાંધીનગર દ્વારા તા.
૧૬–૧૭ જુલાઈ, ૨૦૧૨ના દિવસોમાં
આયોજિત પરિસંવાદનું દીપપ્રાક્ટય કરી
ઉદ્દ્ઘાટન કરતા સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી
મંડળ, ગાંધીનગરના ઉપપ્રમુખ ડૉ.
કનુભાઈ પટેલ, શ્રી ડી.ટી. કાપડિયા,
ડૉ. જિતેન્દ્ર પંચોલી, ડૉ. વીણાબહેન
પટેલ વગેરે.

માત્ર સંસ્થાકીય પ્રસાર માટે

कर भला होगा भला

\- છગનભા

સર્વ વિશ્વવિદ્યાલય-વૃત્ત

કડી સર્વ વિશ્વવિદ્યાલય, ગાંધીનગરનું વૃત્તપત્ર

વર્ષ : ૨, અંક : ૪, જુલાઈ-ઓગસ્ટ, ૨૦૧૨; સળંગ અંક : ૧૦

સંપાદક : મણિભાઈ પ્રજાપતિ

અનુક્રમ

૧.	सादगी भरे जीवन का एक असाधारण व्यक्तित्व	इन्द्रनाथ चौधुरी	૨
૨.	નહીં ભૂંસાનારી છબી	પ્રા. દિનકર દેસાઈ	૫
૩.	સર્જકતા અને વિદ્વત્તાનો સુભગ	ભગવતીકુમાર શર્મા	૯
૪.	ભોળાભાઈ પટેલ સાથેની અંગત સંગત	મણિલાલ હ. પટેલ	૧૦
૫.	સ્મૃતિશેષ સારસ્વત-શિક્ષક	પ્રસાદ બ્રહ્મભટ્ટ	૧૨
૬.	વડીલ સ્વજનની જેમ કાર્યનિષ્ઠ	મોહન પરમાર	૧૫
૭.	ભોળાભાઈ : ગરવી ગુજરાતી રાણીના લાડકા વકીલ	કેશુભાઈ દેસાઈ	૧૭
૮.	અવિસ્મરણીય વ્યક્તિત્વ	ડૉ. કિશોરસિંહ સોલંકી	૨૦
૯.	શ્રી ભોળાભાઈ : એક સ્વજન	પુરુષોત્તમ ગો. પટેલ	૨૨
૧૦.	સૌમ્ય સારસ્વત	ડૉ. સોમભાઈ સી. પટેલ	૨૩
૧૧.	....અને ભોળાભાઈએ એ મહેણું ભાંગ્યું	ગણેશભાઈ કા. પટેલ	૨૫
૧૨.	'मैं भोलाभाई बोलता हूँ...'	આલોક ગુપ્તા	૨૮
૧૩.	ભારે કરી... ભોળીદા !	પ્રિ. ઊજમભાઈ પટેલ	૩૧
૧૪.	हमारे गुरुदेव : डॉ. भोलाभाई पटेल	डॉ. बिन्दु भट्ट	૩૩
૧૫.	तब गुरु मिलिया आइ	डॉ. मृदुला पारीक	૩૫
૧૬.	ન જાણ્યું જાનકીનાથે...	માયા પટેલ	૩૭
૧૭.	मेरे 'सर'....	वीरेन्द्रनारायणसिंह	૪૦
૧૮.	માનવીય ગૌરવના ઉપાસક અને પ્રતિભાસંપન્ન સર્જક	મણિભાઈ પ્રજાપતિ	૪૪
●	સંસ્થા સમાચાર – યુનિવર્સિટી કૉલેજ વિભાગ, શાળા વિભાગ		૫૦
	ગ્રંથસૌરભ	મણિભાઈ પ્રજાપતિ	૫૯
	● રવીન્દ્રનાથ ટાગોરનો વિનોદવૈભવ		
	● સ્નાતક પછી શું ?		
	● સંસ્થા પરિચય – મમતા આઈ.એ.એસ. ટ્રેનિંગ સેન્ટર		૬૩

પત્રવ્યવહારનું સરનામું

મણિભાઈ પ્રજાપતિ : ડાયરેક્ટર ઑફ પબ્લિકેશન્સ, કડી સર્વ વિશ્વવિદ્યાલય, એલ.ડી.આર.પી. એન્જિનિયરિંગ કૉલેજ કૅમ્પસ, સેક્ટર-૧૫, ગાંધીનગર-૩૮૨૦૧૫ ફોન : ૦૭૯-૨૩૨૪૪૬૯૦, મો. : ૯૬૦૧૨૭૩૮૩૬

भोलाभाई पटेल

सादगी भरे जीवन का एक असाधारण व्यक्तित्व

इन्द्रनाथ चौधुरी

भोलाभाई पटेल मेरे बहुत दिनों के मित्र थे। बहुत ही नम्र स्वभाव वाले, मितभाषी, आलोचना में गहरी पैठ रखने वाले, गुजराती के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला के अच्छे ज्ञाता और आकर्षक व्यक्तित्व — साहित्य अकादेमी में पहले-पहल मुलाकात होते ही हम एक-दूसरे के मित्र बन गए थे।

भोलाभाई के माध्यम से ही मेरा गुजराती साहित्य से परिचय हुआ था। उमाशंकर जोशी की कवि-प्रतिभा से परिचय कराने वाले भोलाभाई थे। रघुवीर चौधरी की उपन्यास कला की खूबियों के बारे में बोलने वाले भी भोलाभाई थे। मगर इन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण टैगोर साहित्य का उनका ज्ञान था। शांतिनिकेतन में रहते हुए उन्होंने टैगोर का गहरा अध्ययन किया था - टैगोर के काव्य पर उनकी गहरी पैठ थी।

मुझे उनका एक भाषण अभी भी याद है। रवीन्द्र के दर्शन को लेकर बोल रहे थे - रवीन्द्र के गीत की एक पंक्ति, ''सीमा के बीच असीम तुम अपना मधुर स्वर मुखरित करते हो'' को आधार बनाकर भोलाभाई ने असीम ब्रह्म एवं सीमित मानव के बीच के तादात्म्य (एकात्म नहीं) को दार्शनिक गहराई परंतु इतने रोचक ढंग से प्रस्तुत किया कि श्रोता मुग्ध हो गए थे। इस तादात्म्य का आधार सूत्र है, प्रेम। रवीन्द्र के प्रेम गीतों का उदाहरण देते हुए भोलाभाई ने रवीन्द्र के ईश्वरीय और मानवीय प्रेम के बीच के गहरे रिश्ते को बखूबी स्पष्ट किया था। श्रोताओं को तो मुग्ध होना ही था।

भोलाभाई मूलतः तुलनात्मक साहित्य के विद्वान थे। इस अनुशासन का संपर्क सूत्र उन्हें उमाशंकर जोशी से प्राप्त हुआ था। उमाशंकर, भोलाभाई ओर दूसरे तुलनात्मक साहित्य के अध्येताओं की दृष्टि में भारतीय साहित्य की अवधारणा ही अपने आप में तुलनात्मक साहित्य है क्योंकि यहां एक से अधिक साहित्य की ओर संकेत है। भारतीय तुलनात्मक साहित्य एक बहुभाषिक स्थिति में प्रसारित स्वाभाविक रूप से तुलनात्मक है और इसके विपरीत पाश्चात्य तुलनात्मक साहित्य नाना भाषाओं की एक असदृश दुनिया है जहां तुलना को रूप देना पड़ता है।

भोलाभाई का कहना था कि एक ही प्रकार के ऐतिहासिक तथा साहित्यिक स्रोतों से प्रभावित होने के कारण यहां सादृश्यमूलक अध्ययन के लिए अधिक अवसर है। इसका तात्पर्य कोई सार्विक अनुभूति का सादृश्यमूलक अध्ययन नहीं वरन् एक निश्चित ऐतिहासिक स्थिति में उभरने वाली घटनाओं से प्रभावित साहित्यों का अध्ययन है जिनमें आपस में और कोई दूसरा प्रतीयमान संबंध नहीं है जैसे देश-विभाजन की ऐतिहासिक स्थिति के आश्रय से शरणार्थियों की अनुभूतियों को लेकर हिंदी, गुजराती और वांग्ला के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन।

उनके क्लास में दिए गए भाषणों का विद्यार्थीयों पर बड़ा प्रभाव पड़ता था - बड़े मधुर स्वर में, अपने गुजराती लहजे में जब वे बात करते थे तो छात्र अपने आप उनके प्रति आकर्षित हो जाते थे। वे तुलनात्मक साहित्य के उन विद्वानों

की कतार के थे जो भारतीय साहित्य की एकक अवधारणा के पक्षघर थे। कहते तो यह अवश्य थे कि भारतीय साहित्य विभिन्न भाषाओं में लिखे गए साहित्य का समाहार है। ये सारे साहित्य अलग-अलग सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनैतिक परिस्थितियों से प्रभावित होकर स्वतंत्र रूप ले विकसित तो अवश्य हुए हैं परंतु एक ही प्रकार के ऐतिहासिक तथा साहित्यिक स्रोतों से प्रभावित होने के कारण इनमें विविधता तथा एकता दोनों के दर्शन हो जाते हैं।

भोलाभाई की स्पष्ट धारणा थी कि एकक व्यवस्था स्तर पर एकल साहित्य के रूप में भारतीय साहित्य के इतिहास की अवधारणा का निर्माण बहुत ही जरूरी है। हमारी साहित्यिक परंपरा के ऐतिहासिक पुनर्निर्माण को हम अभी तक पूरा नहीं कर पाए हैं। एकक साहित्य के रूप में भारतीय साहित्य की अवधारणा का निर्माण तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन के आश्रय से ही पूरा किया जा सकता है जिसमें भारतीय साहित्य की विविधता के माध्यम से उसकी एकता की पहचान कराई जाती है।

मेरे साहित्य अकादेमी के सचिव पद पर रहते हुए सन् १९९२ में उन्हें अपनी भ्रमण यात्रा पुस्तक 'देवोनी घाटी' पर साहित्य अकादेमी का पुरस्कार मिला था। पुरस्कार समारोह में अपनी सादगी में वे उपस्थित थे - शर्ट पैंट पहने हुए। उनके चेहरे पर सादगी के अतिरिक्त एक गंभीरता झलकती थी। समारोह के दूसरे दिन 'लेखक सम्मेलन' में पुरस्कृत लेखक अपनी पुस्तकों के बारे में वक्तव्य देते हैं। भोलाभाई ने अपने वक्तव्य में देवताओं की घाटी की उनकी यात्रा का बहुत ही मन-मनोहारी ढंग से परिचय दिया था। उनकी खूबी रही है कि परोक्ष रूप से साहित्यिक स्थितियों के साथ जोडक़र वे विभिन्न स्थानों के बारे में अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं। उनकी भ्रमण-यात्रा का और एक प्रसिद्ध ग्रंथ है, विदिशा। एक सृजनशील लेखक के वक्तव्य और अनुभूतियों के साथ जोडक़र विभिन्न स्थानों की यात्रा का वर्णन करने में भोलाभाई सिद्धहस्त थे। परिणामत: उनके यात्रा वर्णन मात्र नीरस वर्णन न बनके साहित्यिक सरसता के साथ प्रस्तुत हो पाए हैं।

'पूर्वोत्तर' डायरी शैली में भारत के पूर्वांचल असम और अन्य प्रांतो के वर्णन का एक बहुत ही रोचक वृत्तांत है। मुझे इन वर्णनों का कुछ हिस्सा हिंदी में सुनने का अवसर मिला था। इनमें साहित्यिक ढंग से विभिन्न स्थानों का टाइपोग्राफिकल उल्लेख के साथ-साथ उनका छोटे से छोटे बिंदुओं का गहरा अवलोकन इन संस्मरणों को व्यक्ति-निबंध (पर्सनल ऐसे) का रूप प्रदान करता है।

भोलाभाई ने हिंदी में एम.ए. किया था और उनकी पीएच.डी. हिंदी के बहुत ही प्रसिद्ध कवि अज्ञेय पर था। गुजरात विश्वविद्यालय के वे बहुत वर्षो तक विभागाध्यक्ष रहे और इसी सूत्र में मेरा उनके साथ और एक परिचय था। उन्होंने सैकड़ो विद्यार्थीयों को केवल हिंदी ही नहीं पढ़ाया, हिंदी में निष्णात बना के उन्हें अध्यापक बनने में सहायता की। केवल अध्यापक बनाना ही नहीं बहुत से नवोदित और स्थापित कवि-लेखकों के वे मार्ग-निर्देशक भी थे। उनमें एक स्वाभाविक नम्रता के साथ-साथ तीव्र बुद्धि संपन्नता थी, असाधारण अंतर्दृष्टि थी। गहरी संवेदनशीलता, विस्तृत अध्ययन के साथ-साथ सृजनात्मक कला का गहरा परिचय था और इसी कारण गुजराती साहित्य के वे प्रतिमा-मूर्ति बन पाए थे।

मुझे उनकी प्रतिभा का जो पक्ष बहुत अधिक प्रभावित करता था, वह उनकी बहुभाषिकता थी - गुजराती, हिंदी, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, मराठी, असमिया और संस्कृत का उन्हें विस्तृत ज्ञान था। कदाचित् इसी कारण वे अनुवाद-कार्य के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बना पाए थे। हिंदी के प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत के अत्यंत लोकप्रिय काव्यग्रंथ 'चिदम्बरा' का उन्होंने रघुवीर चौधरी के साथ मिलकर गुजराती में

अनुवाद के साथ-साथ रवीन्द्र के उपरांत सर्वाधिक प्रसिद्ध बांग्ला के आधुनिक कवि जीवनानंद दास के अति लोकप्रिय काव्य-ग्रंथ 'बनलता सेन' का गुजराती में अनुवाद किया था। और इस आधार पर केवल गुजराती ही नहीं, सर्व-भारतीय स्तर पर अनुवाद जगत में अपना स्थान बना लिया था। उमाशंकरभाई के सर्वाधिक प्रसिद्ध दो काव्य-ग्रंथो 'प्राचीना' और 'निशीथ' का उन्होंने हिंदी में अनुवाद कर साहित्यिक जगत के सामने यह स्पष्ट कर दिया था कि वे एक बहुभाषिक अनुवादक है। और यह बात शत्-प्रतिशत सही थी। मराठी के विनायक अथवले के ग्रंथ 'विष्णु दिगंवर', गोपाल सिंह का 'गुरु नानक', महेश्वर नियोग का 'शंकर देव,' वासुदेव शरण अग्रवाल का 'हर्षचरित', सुनील गंगोपाध्याय का उपन्यास 'स्वर्गनी नीचे मनुष्य' और बुद्धदेव बसु का काव्य ग्रंथ 'तपस्विनी ओ तरंगिणी' के अनुवाद उनके बहुभाषिक अनुवाद-कर्म के परिचायक हैं। अनुवाद कर्म में उनकी कुशलता ने ही उन्हें रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित विश्व-भारती विश्व-विद्यालय में तुलनात्मक साहित्य के 'फेलो' का पद प्रदान किया था। उन्होंने केवल भारतीय साहित्य ही नहीं अंग्रेजी साहित्य के जगत प्रसिद्ध लेखकों - टी. एस. एलियट तथा जेमस जायेस की साहित्यिक कृतियों का भी अनुवाद किया था। उनकी दो गुजराती पुस्तकें - 'बांगला साहित्यना इतिहासनी रूपरेखा' तथा 'समकालीन असमिया कविता' को पढ़ने से ही उनकी अनुवाद कुशलता का परिचय मिल जाता है।

एक साहित्यिक गोष्ठी, पता नहीं कहां, दिल्ली या अहमदाबाद में, शाम को चाय-नाश्ता करते हुए मेरे मित्र और गुजराती के प्रसिद्ध आधुनिक उपन्यासकार रघुवीर चौधरी ने भोलाभाई के बारे में बात करते हुए कहा था कि वे उनके छात्र थे और एक छात्र की दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि भोलाभाई एक आदर्श अध्यापक रहे हैं जो विद्यार्थीयों के साथ नजदीकी, गहरा और अनौपचारिक संबंध स्थापित कर लेते थे। रघुवीरभाई ने आगे कहा था कि उनके बारे में यह बात बहुत अधिक प्रसिद्ध थी कि एम.ए. के विद्यार्थियों को काव्य-विश्लेषण के तत्त्व समझाते हुए वे आमतौर पर चाय की दुकान के पास के वृक्ष के सायवान के नीचे विद्यार्थीयों के साथ दिखाई देते थे। उनकी छात्रों में लोकप्रियता का राज उनका यह अनौपचारिक व्यवहार था।

भोलाभाई के साथ पिछले दो वर्षो में कई बार मेरी मुलाकात का सौभाग्य हुआ था। एक तो वर्ष २०१० के मार्च के महीने में केन्द्रीय गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद में आयोजित अंतरर्राष्ट्रीय तुलनात्मक साहित्य संमेलन में भोलाभाई पटेल के साथ मुझे भी संमेलन ने विशिष्ट सम्मान से विभूषित किया था। सारे दिन हम इकट्ठे थे। अपने स्वीकृति भाषण में उन्होंने 'भारतीय साहित्य की अवधारणा' पर एक संक्षिप्त परंतु बहुत ही सारगर्भित भाषण दिया था। उनका भाषण सुनते हुए बहुत साल पहले साहित्य अकादेमी में 'संवत्सर भाषण श्रृंखला' में दिए गए उमाशंकरभाई का भाषण 'द आइडिया ऑफ इंडियन लिटरेचर' का बार-बार स्मरण हो रहा था। दोनों की आलोचना दृष्टि में भारतीय जातिगत स्वभाव/दृष्टि (इथोस) को प्रकट करने की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति थी, मानो दोनों भारत की जमीन से जुड़कर भारत की बात करने में तत्पर हैं। इसको पारंपरिक आलोचना-दृष्टि कहकर टाला नहीं जा सकता - यह आलोचना दृष्टि इस बात को कभी भूलती नहीं है कि भारत का साहित्य भारतीय जनता की स्मरणीय अभिव्यक्तियों का समाहार हैं। यह सत्ता राजनैतिक अनिवार्यता से निर्धारित नहीं हुई वरन् समुदाय की भावना से निर्धारित हुई है जो भावना सदियों से हमारे बीच मौजूद हैं। और इस समुदाय की भावना के फलस्वरूप धार्मिक, जातीय सांस्कृतिक, सामाजिक विविधताओं के बावजूद हजारों वर्षों से रूप कों,

बिंबों, मिथकों, अनुश्रुतियों, परिपाटियों, नियमों का एक जैसे निकाय का विस्तार हुआ है और परिणामत: एक भारतीय आलोचन दृष्टि का प्रसार संभव हो पाया हैं। मैंने यह स्पष्ट अनुभव किया है कि इस देश के बड़े आलोचकों में - रवीन्द्रनाथ, अज्ञेय, निर्मल वर्मा, ए.के. रामानुज में इसी आलोचना दृष्टि का प्रसार है।

भोलाभाई के साथ मेरा पिछले दो वर्षो में दूसरी मुलाकात २०१२ के जनवरी के महीने में हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय में हुआ था। वहां विश्वविद्यालय ने मुझे 'श्री मोहनलाल पटेल भारतीय साहित्य व्याख्यानमाला'में बोलने के लिए निमंत्रण दिया था। भोलाभाई शायद ट्रस्टी के रूप में वहां उपस्थित थे और उन्होने सभा में मेरा परिचय दिया था। आज जब मेरे बारे में उनके द्वारा कहे गए शब्दों का स्मरण करता हूं तो मेरी आंखे नम हो जाती हैं। उन्होंने मेरी भूयसी प्रशंसा की थी और कहा था कि मैं अंग्रेजी और हिंदी का एक प्रभावशाली वक्ता हूं और सबसे बड़ा प्रदान तो केन्द्रीय साहित्य अकादेमी के सचिव के रूप में सालों तक की हुई सेवा है।

मेरा अंतिम मिलन भोलाभाई के साथ इस वर्ष २०१२ के मई के महीने में गुजराती साहित्य परिषद के 'रवीन्द्र महोत्सव' में हुआ था। उन्होंने गुजराती साहित्य परिषद के अध्यक्ष के नाते मुझे रवीन्द्र पर बोलने के लिए निमंत्रण दिया था। उद्‌घाटन सभा में हम दोनों को बोलना था। भोलाभाई ने गुजराती में भाषण दिया - जिसे समझने में मुझे कोई कठिनाई नहीं हुई। रवीन्द्र के काव्य का विश्लेषण करते हुए मैंने उस काव्याधारा में उन्हें अवगाहन करते हुए देखा और जो बातों हॉल में खचा-खच भरी हुई श्रोताओं को उन्होंने कहा वह आलोचना नहीं थी - कविता थी।

आज उनको स्मरण करते हुए जब यह लेख मैं लिख रहा हूं तो उनके द्वारा अनुदित जीवनानंद दास की कविता 'बनलता सेन' की वह पंक्ति बार-बार याद आ रही है :

फुराय ए-जीवनेर सब लेनदेन ॥
પૂરી થાય જીવનની બધી લેણદેણ ॥

નહીં ભૂંસાનારી છબી

પ્રા. દિનકર દેસાઈ 'વિશ્વબંધુ'

''મૈત્રી હંમેશાં સરખા સ્વભાવ અને સરખાં સુખદુઃખવાળાઓની સાથે જ થાય છે'' એવા પંચતંત્રના વાક્યમાં તથ્ય હશે. પણ મને તો પ્રેમચંદજીનું કહેવું સાચું લાગે છે કે વખત પસાર કરવા માટે લાયક મિત્ર મળવાનું કોઈ ભાગ્યશાળીના જ નસીબમાં હોય છે. ભોળાભાઈ રહે પ્રોફેસર કોલોનીમાં અને હું રહું વિજય ચાર રસ્તા પર આવેલા ઉજ્જ્વલ એપાર્ટમેન્ટમાં. હું એચ. એલ. કૉલેજ ઑફ કૉમર્સ અને પછી એલ. ડી. આર્ટ્સ કૉલેજમાંથી અને ભોળાભાઈ મારા પછી બે-ત્રણ વર્ષે ભાષા સાહિત્ય ભવનમાંથી નિવૃત્ત થયેલા. તે પહેલાં એ પુસ્તકપ્રેમી અભ્યાસી મહાશય ડાબા ખભે ઝોળો લટકાવી, મક્કમ પગલે ગુજરાત યુનિવર્સિટીમાં લાઇબ્રેરીમાં કે ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદમાં જતા હોય. એ રહ્યા ખરા સજ્જન એટલે મને જુએ, હાથ ઊંચો કરે અને વણથોભ્યા ગતિ પકડે. હું રહ્યો મનમોજી, નવરોધૂપ પણ સમજુ, એટલે ઊભા ન રાખું. ગુજરાતી ભાષાની ઉત્તમ સેવા કરવાનું વ્રત

લેનારને રોક્યા વિના જવા દેવાનું રાખું અને માનું કે મેં પણ સાહિત્યસેવામાં કંઈક ફાળો આપ્યો છે !

અમે બંને નિવૃત્ત થયા. પ્રોફેસર કોલોનીની પાછળ આવેલા શરદ પાર્ટી પ્લોટના બાગમાં સ્વાસ્થ્ય સુધારવાના પ્રયત્નો શરૂ કર્યા. બાગમાં પાંચેક આંટા મારીએ અને પછી એકાદ બાંકડાના માલિક હોઈએ તે રીતે બેસીએ. હું ગુજરાતીનો અધ્યાપક ખરો, પણ એન.સી.સી.માં મેજર બનીને નિવૃત્ત થયેલો, એટલે અમારા બાંકડા પર ત્રીજાને બેસવા પણ ન દઉં. ભોળાભાઈ રહ્યા મૂઠી ઊંચેરા માનવી અને મિતભાષી, એટલે નારાજગી દર્શાવે. એમને આવું વર્તન ગમે નહીં. પણ હું કહું, 'આપણી ધીરગંભીર વાતોમાં ત્રીજાને સમજ ન પડે, એટલે એ દૂર સારો.' એમની સલાહે મારામાં થોડી-નહીં જેવી નમ્રતાએ પ્રવેશ કરેલો. પછી હુકમને બદલે વિનંતીને આવકારતો થયેલો. અત્યારે મારામાં જે નમ્રતાની એકાદ ટકાની હાજરી દેખાય છે તે ભોળાભાઈના પ્રતાપે જ, એવી મારી નમ્ર માન્યતા છે. બાકી મારા સંપર્કમાં આવેલા લોકો કહેતા સંભળાય છે કે દિનકરભાઈ ને નમ્રતા કદી સાથે હોય નહીં ! ભોળાભાઈ આ અર્થમાં સુધારક છે.

'પ્રિય દિનકરભાઈને

આપણી રમ્ય, રમ્યતર સાંજોની

સ્મૃતિઓ સાથે' એવું લખાણ લખી ભોળાભાઈએ એમનાં બે પુસ્તકો-'ચિત્રકૂટના ઘાટ પર' અને 'તેષાં દિક્ષુ' આપેલાં, જે મેં સહર્ષ સ્વીકારેલાં અને બાકીનાં 'વાંચવા આપજો, ભેટ નહીં' એવી ઉદાર સલાહ આપેલી. પછી એમણે જે આપેલાં તે વાંચીને પાછાં આપેલાં. આમ કરવા પાછળ કારણ એક જ હતું, તે એ કે પ્રકાશકો માંડ પચ્ચીસ પુસ્તકો લેખકને આપતા હોય છે, તેમાં ભોળાભાઈની ઉદારતાનો ગેરલાભ હું ન ઉઠાવી શકું, મિત્ર બન્યા તો મિત્ર બની જાણવું ! આપણાથી જે બહેતર હોય એને જ મિત્ર બનાવવો.

મહેસાણા જિલ્લાનું સોજા નામનું નાનું ગામ ભોળાભાઈ શંકરભાઈ પટેલનું વતન. 'તેષાં દિક્ષુ'માં ભોળાભાઈ એમના ગામ વિશે લખે છે, ''મારા એ ગામના પાદરમાં થઈને એક નદી વહેતી હોત તો કેવું સારું ? નદી નથી તો નથી, પણ એવું થાય તે ભલે, પણ મારું ગામ કોઈ ડુંગરની તળેટીમાં હોત તો કેવું ! નદીય નથી. ડુંગરેય નથી પણ ગામની બહાર નીકળતાં કોઈ ગાઢ જંગલ શરૂ થઈ જતું હોત તો કેવું સારું નદીય નથી, ડુંગરેય નથી અને જંગલ પણ. એ અભાવ ખરો, પણ મારા ગામ વિશે કશુંય કાવ્યાત્મક પણ ના મળે. કશુંય અસાધારણત્વ નહીં. ભાગોળે પાળિયા જેવું ય નહીં, ગામને જાણે લાંબા-ટૂંકો ઇતિહાસેય નથી''– આવા અભાવમાંથી ભોળાભાઈનો ભ્રમણ-સ્વભાવ ઘડાયો હશે ? અભાવની વાત કરીએ તો ભોળાભાઈના બાલ્યકાળમાં ''ગરીબી ત્યારે વધારે દારુણ હતી, જીવન નર્યું પરિશ્રમી હતું અને અભાવ એ જ જાણે જિંદગીનો પર્યાય હતો'' ત્યારે તો ભોળાભાઈ પૈસા પાછળ જ પડ્યા હોત, ધનનો જ્યાં સતત વ્યય થતો રહે તેવા પ્રવાસોમાં ન જોડાત. પ્રવાસ લેખો કે ગ્રંથો લખવાનો સંભવ જ ન રહેત. કોઈ અભાવના કારણે નહીં, પણ ભોળાભાઈમાં રહેલાં સૌંદર્યલુબ્ધ સર્જકે સફાળા જાગી જઈને એમની પાસે કાકાસાહેબ કાલેલકરની ઘડીભર યાદ અપાવે તેવાં પુસ્તકો લખાવ્યાં હશે, એવું અનુમાન ખોટું પડવાનો સંભવ સાવ ઓછો છે.

એક દિવસ સંકોચ સહિત ભોળાભાઈ કહે, 'દિનકરભાઈ એલ. ડી. આર્ટ્સ કૉલેજમાં જઈને મારું એક કામ કરવાનું છે, થશે ? યુ.એસ.એ.માં રહેતી દીકરીએ અંગ્રેજી વિષય લઈને, બી.એ. કરેલું છે, પણ પ્રિ.યુનિ.થી ટી.વાય. સુધીના ગુણ અને સીટ નંબરો જોઈતા હતા, જેની મદદથી ગુજરાત યુનિવર્સિટીમાંથી છાપેલાં ગુણપત્રકો મેળવી શકાય.' કૉલેજવાળા કશુંય સાંભળતા ન હતા, કારણ કે

વર્ષો વીતી ગયેલાં અને જૂના કબાટમાં જૂના ચોપડા ધૂળ ખાતા પડ્યા હતા. મેં કહ્યું, 'દીકરીનું આખું નામ અને આશરે ભણતરનું વર્ષ આપો.' હું નિવૃત્ત થયેલો, પણ મારા મિત્ર પ્રિન્સિપાલ શ્રી.એ. યુ. પટેલ જે પછીથી ગુજરાત યુનિવર્સિટીના વાઇસ ચાન્સેલર બનેલા, તેમને મળ્યો. કબાટની ચાવીઓ લીધી. ઉઘાડ્યું. ધૂળ, ધૂળ, કપડાં બગડ્યાં. બધા ચોપડા ખંખેરી ખંખેરીને જોયા. ખોળી કાઢ્યું ત્યારે જંપ્યો. ભોળાભાઈ કહે, 'આભાર, તમે તો મારું મોટું કામ કર્યું, દીકરીની નોકરી માટે જરૂરી હતું.' મેં કહ્યું, 'મારાથી થાય એવું હતું તે મેં કર્યું, એમાં આભાર શેનો માનવાનો હોય ?' ભોળાભાઈ એમની ટેવ પ્રમાણે બોલ્યા-ચાલ્યા વિના મંદમંદ હસતા રહ્યા. સો ટકા સજ્જન માણસ. આભાર માનવાનું સૌજન્ય પ્રગટ કર્યા વિના રહી જ શી રીતે શકે ?

હું પ્રત્યેક શનિવારે એમ. જે. લાઇબ્રેરીમાં ચાલતા 'સાહિત્ય ચોરા'માં કાવ્યવાચન માટે જતો. ભોળાભાઈએ પૂછેલું, 'તમે કેમ શનિવારે જ દેખાતા નથી ?' મેં કહ્યું, 'કાવ્યવાચન માટે જાઉં છું.' એમને આશ્ચર્ય થયું કે આ બાંકડા-મિત્ર કવિ બનવા જઈ રહ્યો છે ? એ કહે, 'સર્જનના પ્રારંભે મેં પણ થોડીક કાવ્યરચનાઓ કરેલી.' મેં કહ્યું, 'એમ જ હશે, નહીં તો તમે કવિ ઉમાશંકર જોશીના ભારતીય જ્ઞાનપીઠ વિજેતા કાવ્યગ્રંથ 'નિશિથ'નો અને શ્રી, રઘુવીર ચૌધરી સાથે 'પ્રાચીના'નો હિંદી અનુવાદ શી રીતે કરી શક્યા હોત ?' પછી ભોળાભાઈ કહે, 'આવતા શનિવારે શું રજૂ કરવાના છો ? કાલે લેતા આવજો.'

'ઓછું નથી' કાવ્ય પહેલું વંચાયું. એમાંની એક પંક્તિ એમને ગમી, 'સહરાના રણમાં તરસ્યા કાફલાને, રણદ્વીપ રસ્તે મળે, ઓછું નથી,' પછી તો 'પુરાવો,' 'યાદ આવે છે,' 'કોઈ તો છે,' 'વરખડો ને વેલી,' અને 'કહેવાનું જે હતું' – આ બધાં કાવ્યો ગેય હતાં, ગાયેલાં. ભોળાભાઈ કોઈ ધ્યાનસ્થ યોગીની માફક આંખો બંધ કરી. કાન સરવા રાખી શાંત-ચિત્તે સાંભળતા રહે. પૂરું થાય એટલે આંખ ખોલે, ટીકા–ટિપ્પણ કરે, ફરી લખવાનું કહે, ક્યાંક કોઈ કઠતો શબ્દ બદલવાનું કહે. પાછો સુધારું. ભોળાભાઈની ધીરજનેય ધન્યવાદ કે દરરોજ ઉત્સાહથી, આગ્રહ કરીને વારંવાર વંચાવે. પછી તો કેટલાંક કાવ્યો 'શબ્દસર'માં છપાયાં. જોઈને રાજી થયા અને કહે, 'દિનકરભાઈ આપણી મહેનત લેખે લાગી.' એમાંનું એક કાવ્ય 'કહેવાનું જે હતું' સ્વ. રમણલાલ જોશીના 'ઉદ્દેશ' માટે લાયક થયું અને છપાયું. મને થયું ભોળાભાઈ મારા માર્ગદર્શક બન્યા હોત નહીં, મને ઉત્તેજન મળ્યું ન હોત; તો જેવો છું તેવો પણ કવિ તો ન જ બન્યો હોત. મારા માટે ભોળાભાઈ ફ્રેન્ડ, ફિલોસોફર અને ગાઈડ હતા. ભોળાભાઈ એક સારા વક્તા હતા તે તો બધા જ જાણે છે, પણ મારી અણઘડ કવિતાઓને ધ્યાનથી સાંભળનારા અને દોષ શોધી આપનારા એ એક ઉત્તમ શ્રોતા પણ હતા ! મારું ભાગ્ય કેવું ઉજ્જવલ કે મને આવા દુર્લભ શ્રોતા પ્રાપ્ત થયેલા !

ભોળાભાઈએ મને પુસ્તકો ભેટ આપેલાં. મને થયું મારેય આપવાં જોઈએ. પણ પુસ્તકોની બાબતમાં હું એમના જેટલો ધનવાન ન હતો, સાવ ખાખીબંગાળી હતો. ૧૯૭૦માં હાસ્ય-કટાક્ષ-વ્યંગના પચાસ નિબંધોનું પુસ્તક 'જોયું હળવી નજરે' જેની ૧૫૦૦ નકલો પ્રકાશકે છાપેલી, જે હવે બજારમાં અપ્રાપ્ય છે અને મારી પાસે ચારેક નકલો સચવાઈ હતી, તેમાંથી એક આપી અને બીજું ધર્મકથાઓનું પુસ્તક 'ધરતીનું અમૃત' જેની ત્રણ આવૃત્તિઓ થઈ છે, તે આપ્યું. વાંચ્યા પછી ભોળાભાઈના મુખમાંથી શબ્દો સરી પડ્યા, લખો, લખો.' મેં કહ્યું, ''ભોળાભાઈ'' હું તો પૈસા પછળ પડ્યો છું, લખવાનું ભૂલી ન જાઉં એટલે કોઈવાર લખું છું, બાકી નિઃસ્પૃહ રહી અવિરત સાહિત્યસેવા કરનારા અને ખરા લખનારા તો તમે જ ! તમે

તો પચ્ચીસ વર્ષ સુધી 'પરબ' સામાયિકનું સંપાદન કર્યું, પરામર્શક સમિતિમાં રહ્યા, 'પરબ'માં, 'શબ્દસૃષ્ટિ'માં અને અન્ય સ્થળે પણ ઘણું લખ્યું અને સાહિત્યપ્રવૃત્તિમાં સદા હૂંફાળો સાથ આપ્યે રાખ્યો છે.''

અવારનવાર ભોળાભાઈને ત્યાં જવાનું બનતું હોવાથી એમનાં ધર્મપત્ની શકરીબહેન પણ મને ઓળખે. વચમાં ભોળાભાઈએ ઓપરેશન કરાવેલું અને કરોડજ્જુની પણ કોઈ તકલીફ હતી. ત્યારે સદા આમન્યા રાખતાં મૃદુભાષી શકરીબહેને મને કહ્યું, 'તમારા મિત્રને કહો ને કે બોલવાનું ઓછું કરે (ભાષણો કરવા ન જાય), રાતે ઉજાગરા ના કરે (વાંચે નહીં, લખે નહીં), અને શરીરનું ધ્યાન રાખે (સમયસર જમે), તમારું એ સાંભળશે.' મેં ભોળાભાઈ સામે જોયા વિના કહ્યું, 'શકરીબહેન ! તમને ખબર નથી ? આ ભાઈ હવે પદ્મશ્રી થયા છે, એટલું ઓછું હોય તેમ ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના પ્રમુખ પણ છે. આપણું ના સાંભળે. હવે આપણે એમને સાંભળવા પડે. સાંભળવા ના હોય તો સંભોળો. એમને સાહિત્યસેવાની ધૂન લાગી છે, અટકાવનાર આપણે કોણ ?' ભોળાભાઈ મૌનને શરણે !

ભોળાભાઈનો પડોશ છોડીને મારે ૨૦૦૭માં સત્યાગ્રહ છાવણીમાં બનાવેલા મારા બંગલે જવાનું થયું. બંગલાના વાસ્તુ પ્રસંગે ભોળાભાઈ આવ્યા અને કહે, 'મારે આજે અત્યારે જ એક સ્થળે ભાષણ કરવા જવાનું છે, પણ તમારે ત્યાં તો મારે આવવું જ પડે, એટલે આવ્યો છું, જમવા રોકાઈ નહીં શકું.' એમને આવેલા જોઈને મને જે આનંદ થયો હતો, તેનો ક્ષણમાં વિલય થઈ ગયો. ભોળાભાઈને ત્યાં લગ્નપ્રસંગો યોજાય ત્યારે મને અચૂક આમંત્રણ આપે. આમ ભોળાભાઈ સંબંધોના માણસ હતા, ખરા આત્મિયજન હતા. એમની 'નહીં ભૂંસાનારી છબી' મારા હૈયામાં છે.

ડૉ. ભોળાભાઈ પટેલ જેવા ઉત્તમ શિક્ષક, સંવેદનશીલ સર્જક, કેળવણીકાર અને પ્રામાણિક મહાનુભાવને મંડળના પ્રમુખ તરીકે મેળવીને સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળ, કડી ધન્ય બન્યું હતું. કર્મચૂડામણિ માણેકલાલ પટેલના દેહવિલય બાદ, આ બીજો કુઠારાઘાત સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળ, કડી પર થયો છે. સ્વ. માણેકલાલ પટેલના સુપુત્ર શ્રી. વલ્લભભાઈ પટેલ (સરદાર) આ અણચિંતવી ઘટનાથી અત્યંત ઉદાસ થયા છે, આખું ગાંધીનગરનું કેળવણી સંકુલ સ્તબ્ધ બની ગયું છે, ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ-પરિવારનું હાસ્ય વિલાઈ ગયું છે, ગુજરાતી સાહિત્ય અકાદમીના પૂર્વ પ્રમુખ હતા, એટલે ત્યાં પણ શોકની છાયા પથરાઈ છે. ગુજરાતના બુદ્ધિજીવીઓ કંઈક ખોયાની લાગણી અનુભવી રહ્યા છે. સાહિત્યાકાશનો એક તારલો ખરી ગયો !

યોગાનુયોગ હો કે બનનાર ઘટનાની પૂર્વ છાયા હો. મેં શનિવાર તા. ૧૯-૫-૨૦૧૨ના રોજ જે કાવ્ય રજૂ કરેલું, તેની પ્રથમ બે પંક્તિઓ–

''સમય થાય એટલે બધાંને જવું પડે
રાય હો કે રંક હો, કાલ તો બધાંને નડે''–

અને એ કાળમુખો કાળ મારા પ્રિય મિત્ર ભોળાભાઈને નડી ગયો, મારી આંખોને ભીંજવતો હતો.

ફૂલ ગયું, ફોરમ રહી, હવે સ્મરણો ભીનાં......

૧૭/૩૪૨ સત્યાગ્રહ છાવણી, ઇશરો સામે,
ભાવનિર્ઝર મંદિર પાછળ, સેટેલાઈટ,
અમદાવાદ-૩૮૦૦૧૫

સર્જકતા અને વિદ્વત્તાનો સુભગ

ભગવતીકુમાર શર્મા

મારા મિત્ર સ્વર્ગીય ડૉ. ભોળાભાઈ પટેલને પહેલવહેલો હું કદાચ કોઈક સાહિત્યિક સમારંભમાં જ મળ્યો હોઈશ અને તે પણ ઘણુંખરું અમદાવાદમાં. સાઈઠથી એંશીના દાયકા સુધી મારે વારંવાર અમદાવાદ જવાનું થતું અને ત્યારે તેઓ ક્યાંક ને ક્યાંક મળી જતા પણ એ તો અછડતો જ પરિચય લેખાય. કદાચ એંશીના દાયકામાં મારી ''શ્રેષ્ઠ વાર્તાઓ''નો સંગ્રહ પ્રકાશિત થવાનો હતો, તેને વિશે પુસ્તકમાં ભોળાભાઈ લખે એવી મારી ઇચ્છા. મેં તેમને પત્ર દ્વારા વિનંતી કરી, તેમણે તે સહર્ષ સ્વીકારી. મારા એ પુસ્તકના પાછલાં પ્રચ્છદપટ પર ઝીણાઝીણા પણ સુવાચ્ય અક્ષરોમાં તેમનો એ સંપૂર્ણપણે આસ્વાદલક્ષી પરિચ્છેદ પ્રગટ થયેલો. મેં આભારવશતા પ્રગટ કરેલી.

અમદાવાદમાં જ તેમનાં કેટલાં બધાં વિદ્વતાસભર, બહુભાષી વ્યાખ્યાનો સાંભળવાનો મને મોંઘેરો અવસર પ્રાપ્ત થયો હતો. તેમાંયે જ્યારે તેઓ સંસ્કૃત, બંગાળી, અસમિયા, અંગ્રેજી વગેરે ભાષાઓનાં અવતરણો ઔચિત્યપૂર્વક ટાંકે તેથી હું તો ધન્યતા અનુભવતો. બંગકવિ બુદ્ધદેવ બસુના વિખ્યાત કાવ્ય ''વનલતાસેન''નો મૂળ ભાષામાં પાઠ અને તેનો રસલક્ષી આસ્વાદ તેમને મુખે સાંભળવાના લ્હાવા મને એકથી વધુ વાર પ્રાપ્ત થયેલા. મને લાગે છે કે એ માત્ર મારી નહિ, બધાં ગુજરાતીભાષી કાવ્યપ્રેમીઓની ધન્યતા હતી.

પછી તો એમનાં કેટલાં બધાં લલિત પ્રવાસ નિબંધોનાં પુસ્તકોની જાણે વર્ષા થઈ ! એ બધાં પુસ્તકોમાં એમની સ્વકીય સર્જકતા અને વિરલ બહુશ્રુતતાનો સુભગ સમન્વય તંતોતંત અનુભવ્યો હતો. પાંડિત્ય પૂરું, પણ રસલક્ષિતા અભરે ભરેલી. કાકાસાહેબ કાલેલકર વગેરે નિબંધ સર્જકો પછી પ્રવાસ નિબંધોની સાવ જુદી અને આગવી, ઉચ્ચ કેડી સ્વર્ગસ્થ ભોળાભાઈએ કંડારી હતી. જેણે ગુજરાતી ભાષાના પ્રવાસ સાહિત્યને અદકેરી ઊંચાઈ અને સમૃદ્ધિ અર્પી હતી. હિમાલયની ભવ્યતા જેવી એ ઊંચાઈ હવે ફરીથી આંબી શકાય ત્યારે ખરી !

અઢીએક વર્ષ પહેલાં 'ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ'નું જ્ઞાનસત્ર મોડાસામાં યોજાયું હતું. પરિષદ પ્રમુખ તરીકે મારે તેમાં હાજરી આપવાની હતી. આયોજકોએ અદ્દ્ભુત સૂઝ દાખવી ભોળાભાઈને અને મને એક જ અતિસુવિધા સંપન્ન ઓરડામાં ઉતારો આપ્યો હતો. અમારા બંનેની સમાન વય અને ડગુમગુ તબિયતને તેઓએ કદાચ ધ્યાનમાં રાખી હશે, પણ એ અઢી-ત્રણ દિવસ મારે માટે મહામૂલાં સંભારણાં સમાન બની ગયા. તેમની સરળતા અને વિનોદવૃત્તિનો મને ત્યારે પહેલો જ પરિચય થયો.

'પરિષદ'ના મારા અનુગામી પ્રમુખ તરીકે જવાબદારી સંભાળવા તેમણે સંમતિ આપી ત્યારે મને અતિ આનંદ થયો હતો. આ પદ માટેની તેમની પાત્રતા તો ક્યારની સિદ્ધ થઈ ચૂકી હતી. 'પરિષદ'ને તેમણે અનેક રીતે સેવાઓ આપી હતી. તેમાં 'પરબ'નું સંપાદન શિરમોર હતું. પ્રમુખ તરીકે પરિષદને અને ગુજરાતી સાહિત્ય રસિકોને હજુ ઘણી આશા હતી ત્યારે જ સાવ અકલ્પ્ય રીતે તેમણે તેમનો જીવનગ્રંથ સમાપ્ત કરી દીધો એ આપણી ભાષા અને સાહિત્યનું દુર્ભાગ્ય.

ભોળાભાઈ પટેલ સાથેની અંગત સંગત

મણિલાલ હ. પટેલ

પ્રો. ભોળાભાઈ પટેલને પહેલી વાર જોવા-મળવાનું થયું એ દિવસો યાદ છે. ૧૯૮૦ આસપાસનો એ સમય હતો. વિદ્યાપીઠના સાદરા ખાતે, પ્રેમચંદજીની (કદાચ) જન્મશતાબ્દી નિમિત્તે, દેશભરમાંથી હિન્દીના વિદ્વાનો આવ્યા હતા. ઉમાશંકર જોશી 'કફન' વાર્તા વિશે, જુદા જ દૃષ્ટિકોણથી અને નૂતન અર્થઘટન કરીને બોલ્યા હતા એ પણ યાદ છે. ભોળાભાઈને આ સૌ વિદ્વાનો વચ્ચે જોયા હતા. એમને, અમે ઈડરથી ત્યાં ગયેલા, મિત્રો મળ્યા હતા. પ્રો. નામવરસિંહને મેં તો ત્યારે પ્રથમ વાર સાંભળેલા. મનમાં થયું હતું કે વિવેચન પણ આટલું રસાર્દ્ર અને મૂળગામી હોઈ શકે છે ! વાહ ! ભોળાભાઈ '''નિર્મલા' – નારીસંવેદનાની કથા' વિષય પર બોલ્યા હતા. રઘુવીર ચૌધરીને પણ પહેલી વાર 'ગોદાન' વિશે બોલતા જોયા હતા. મારું મન 'વક્તવ્યો કેવી રીતે કરી શકાય' એની સહજ તાલીમ મેળવતું હતું. આ રીતે પણ એ ભણવાના જ દિવસો હતા. ને એવું ભણવાનું તો આજે ય ચાલે છે. ઉમાશંકરની જેમ ભોળાભાઈ પણ કહેતા હતા કે 'ભણવાનું તો કદી મટતું જ નથી.' ભોળાભાઈ રસિક અને વિદ્વાન હતા – કેમકે એ આજીવન વિદ્યાર્થી હતા.

પછી તો ભોળાભાઈને મળવાનું વધવા માંડેલું.

એ 'પરબ'ના તંત્રી હતા ને બામણા – ઈડરની પ્રકૃતિ તથા ત્યાંની ઋતુલીલાઓ વિશેના મારા નિબંધો હું એમને મોકલતો હતો. 'પરબ'માં મારા ઘણા નિબંધો-લેખો એમણે પ્રકાશિત કરેલા. મારા પ્રથમ નિબંધ સંચય 'અરણ્યોમાં આકાશ ઢોળાય છે'-ની પ્રસ્તાવના પણ એમણે જ લખેલી. એ લેખમાં આજે પણ એ વર્ષો તથા એ સમયની મુદ્રા સચવાયેલી છે. તટસ્થ રહીને છતાં ભાવપૂર્ણતા સાથે લખનારા તો હવે ઓછા જ રહ્યા છે. એ જ વર્ષોમાં 'સાહિત્ય'માં 'વિદિશા'ના નિબંધો આવતા હતા. ત્યારે મારા મનમાં પ્રવાસી ભોળાભાઈ છવાયેલા રહેતા હતા. અમે પ્રવાસો કરતા થયા ત્યારે આપોઆપ, ભોળાભાઈ અદૃશ્ય રહીને ય અમારી સાથે જ છે – એવું અનુભવતા. સ્થળોને વર્તમાનમાં ઊભા રહીને, એનાં ઇતિહાસ-ભૂગોળ ભૂલ્યા વિના જોવાં-માણવાં તથા સાંપ્રતની ક્ષણોની જીવંતતા વચ્ચે રહીને ચાહવાં એ જાણે 'વિદિશા'ના નિબંધોનો પ્ર-બોધ છે.

ભોળાભાઈ પટેલની વધુ નિકટ રહીને કામ કરવાની એક તક મને મળેલી. ગાંધીનગરમાં મધ્યસ્થ ગ્રંથાલય ખાતે પુસ્તકચયન માટે પાંચ-છ દિવસો રહેવાનું થતું. બે વર્ષ આ રીતે મળવાનું બન્યું ત્યારે શ્રી કુલીનચન્દ્ર યાજ્ઞિક અને શ્રી મોહનદાસ પટેલ (એમ. જે. લાઇબ્રેરીના ગ્રંથપાલશ્રી) પણ હતા. પુસ્તકો, લેખકો, પ્રકાશકો, વાચકો અને ગ્રંથાલયોની ખાસ્સી વાતો – ચર્ચાઓ થતી હતી. મને એમના પ્રતિભાવોને તુલનાથી જોવાનું ગમતું. ભોળાભાઈ ધોરણોના આગ્રહી હતા પણ લોકપ્રિયતાના વિરોધી નહોતા. અલબત્ત, એ 'લોકભોગ્યતા'ની જિકર કરતા રહેતા. ભોળાભાઈ ઘણી ભાષાઓ જાણતા હતા ને વધુ ભાષાઓ જાણવા ઉત્સુક રહેતા. એ જાણતા હતા એ ભાષાઓના લેખકો અને એમનાં પુસ્તકો વિશે પણ અમને એ દિવસોમાં ભોળાભાઈ પાસેથી જાણવા મળતું. 'સ્વર્ગની નીચે મનુષ્ય' તથા 'તપસ્વી અને તરંગિણી' જેવાં બંગાળી પુસ્તકો (જેમના અનુવાદો એ કરી રહેલા) વિશે એ જ દિવસોમાં એમને મુખે

સાંભળવાની તક મળેલી. જમતી વખતે એમણે અનુવાદની કળા વિશે અનૌપચારિક રીતે કરેલી વાતો યાદ રહી ગઈ હતી. યાજ્ઞિકસાહેબ (આઈ.એ.એસ.) પાસેથી ત્યારે સાંભળેલી વહીવટની વાતો હમણાં હમણાં લેખરૂપે પુનઃ વાંચવા મળી ત્યારે ગાંધીનગરના એ દિવસોની છાલક ભીંજવી રહી.

સાંનિધ્ય શીખવે છે – હું એ વાતનું પ્રમાણ પણ છું. ૧૯૭૩થી ૧૯૮૦ પછીનાં એટલે કે ૧૯૮૦થી ૧૯૮૬નાં મારાં ઈડર કૉલેજનાં વર્ષો વધુ મહત્ત્વનાં રહેલાં. હિન્દી-ગુજરાતી સાહિત્ય વિશેના સંયુક્ત પરિસંવાદોનો એ સમય હતો. યુજીસી પ્રેરિત એ રાષ્ટ્રિય પરિસંવાદોમાં દેશભરમાંથી બંને ભાષાના વિદ્વાનો આવતા. ઉમાશંકર – પન્નાલાલની એ ભણતર-ઘડતર ભૂમિ. એ પણ હોય. પહેલી વાર ઉમાશંકર જોશીને તેડવા માટે ટેક્સી લઈને 'સેતુ' (અમદાવાદ) ઉપર પહોંચ્યો ત્યારે ભોળાભાઈ – યશવંત શુક્લ તથા ચન્દ્રકાન્ત શેઠ વગેરે પણ હાજર હતા. બધા બામણા – ભિલોડા – ઈડર પ્રવાસમાં જોડાવાના હતા. આખે રસ્તે ઉમાશંકર અને ભોળાભાઈ વચ્ચે ભારતીય સાહિત્યની ચર્ચાઓ ચાલેલી. વચ્ચે પ્રકૃતિનાં દશ્યો અને સ્થળ સંદર્ભોની પણ વાતો થતી. ઉમાશંકરને એમના વતનઘરની પડસાળમાં પ્રસન્ન જોવાની એ પળો મેં ભોળાભાઈ સાથે માણી હતી. ત્રીશીની મુગ્ધતા ચહેરા પર રતુંબડી થઈ ઊઠેલી. ભિલોડામાં ઉ. જો.નું ભવ્ય સ્વાગત થયું હતું. ને પછી ઈડર તથા પહાડોમાં રખડવાની મજા આવેલી. ઉમાશંકર અને ભોળાભાઈ જેવાઓની સાથે આટલુંય ફરવા મળે એ તો અહોભાગ્ય !!

૧૯૮૪ જાન્યુઆરી ૨૪થી ૨૬ દરમિયાન પણ ઈડર ખાતે આવો જ ધન્ય અવસર હતો. ૨૬-૧-૧૯૮૪ની સવારે મારા નવા ઘરનું મેં 'વાસ્તુ' રાખેલું. ૨૪-૨૫ જાન્યુ. સેમિનાર પછીનો દિવસ. ગૃહપ્રવેશ ! ઉમાશંકર-ભોળાભાઈ-નંદિનીબહેન-યશવંત શુક્લે મારા કલરવના ઘરમાં પ્રવેશ કર્યો... દીવો પ્રગટાવી પુસ્તકો મૂક્યાં ને દરેકને ઉમાશંકરે પુસ્તકો ભેટ આપ્યાં. બધાંએ એક એક કવિતા વાંચી ને પછી કંસાર ખાધો – ચાખ્યો ! વિશિષ્ટ રીતિનું આ વાસ્તુપૂજન ખરેખર તો સર્જકો વડે થયેલું સાચ્ચું વાસ્તુપૂજન બની રહ્યું છે. આ સૌનો ફોટોગ્રાફ મેં સાચવી રાખ્યો છે – ભોળાભાઈના એ ચહેરા પર હાસ્ય શમતું જ નથી !

ઈડર કૉલેજમાં ૨૬-૧-૧૯૮૪નું ધ્વજવંદન ઉમાશંકરજીને હાથે થયું... ત્યારે ભોળાભાઈ ઈડરના પહાડો પર ઊતરેલો કોમળ તડકો માણતાં માણતાં બોલ્યા હતા –

'ઢળી પીતો શૃંગ સ્તનથી તડકો શાંતિ – અમૃત !
મુખે કેવું એને વિમલ શુભ એ દૂધ સુહતું !' (ઉ. જો.)

આ ક્ષણો રમણીય ને અવિસ્મરણીય હતી...! હુંય કવિવરની પંક્તિઓ ગણગણતો હતો – 'મને બોલાવે ઓ મૃદુલ તડકો દક્ષિણ હવા...' વગેરે.

ધ્વજવંદન પછી અમારે રતનપુર (પાલનપુર પાસે) પરિષદના જ્ઞાનસત્રમાં પહોંચવાનું હતું. રસ્તે સાબરમતી-ધરોઈ આવ્યાં. ભોળાભાઈએ અને યશવંત શુક્લે 'સાબરનો ગોઠિયો' ગીત ગાયું... આખી વાટ આનંદ હતો ને મારા પક્ષે નર્યો ઉલ્લાસ !!

એ પછી તો, ભોળાભાઈને ભાષાભવનમાં, પરિષદ-અકાદમીના પરિસંવાદોમાં, એમને ઘરે અને અમારા વલ્લભ વિદ્યાનગરમાં વારંવાર મળવાનું થતું રહ્યું છે. મળે એટલે પૂછે – 'વિદ્યાનગરમાં ક્યાં નવાં ફૂલો ખીલ્યાં છે ?!' હું કહું : 'રુદ્રપલાશનાં કેસરી ફૂલો !' કે 'ઝાકારાન્ડાનાં પરપલ ફૂલો !' વિદ્યાનગરમાં અશોકનાં ફૂલો જોવાં ને વીરેશ્વરનાં જંગલોમાં પલાશ ખીલેલાં જોવા ભોળાભાઈ નીકળી આવતા ત્યારે હું એમની સાથે હોઉં... હવે અશોક-પલાશ અને ઝાકારાન્ડા મ્હોરશે ત્યારે એને જાણનાર માણનાર – પૂછીને પ્રેમ કરનાર ભોળાભાઈ નહિ હોય... મને ભોળાભાઈ બહુ યાદ આવ્યા કરશે...

સ્મૃતિશેષ સારસ્વત-શિક્ષક

પ્રસાદ બ્રહ્મભટ્ટ

સન ૧૯૭૩માં હું કડી કૉલેજમાં બી.એ.ના અંતિમ વર્ષમાં અભ્યાસ કરતો હતો ત્યારે શ્રી ભોળાભાઈ વ્યાખ્યાન આપવા આવ્યા હતા. ત્યારે તેમને પહેલી વાર જોયા, સાંભળ્યા હતા. પાછા વળતાં અનવધાનમાં તેઓ (અમારા બંનેના ગુરુ) શ્રી મોહનલાલ પટેલનાં ચપ્પલ પહેરી ગયા હતા. અમદાવાદ પહોંચ્યા પછી તેમના ધ્યાનમાં આવ્યું ! પછી મોહનભાઈ સાહેબને કહે, 'તમારા પેંગડામાં પગ નાખવાનું સાહસ કર્યું છે !' ચપ્પલની અદલાબદલી કરાવવાનું કામ મારા માથે આવેલું. એ નિમિત્તે પહેલી વાર તેમના ઘરે જવાનું, મળવાનું થયેલું.

થોડા મહિના પછી બી.એ. થઈ એમ.એ. કરવા ગુજરાત યુનિવર્સિટીના ભાષા સાહિત્ય ભવનમાં દાખલ થવાનું થયું. વિષયો તો મેં ગુજરાતી-સંસ્કૃત રાખેલા તેથી સીધી રીતે ભોળાભાઈના વિદ્યાર્થી બનવાનું શક્ય ન હતું; પણ એમ.એ. પાર્ટ-૧માં સાહિત્ય સ્વરૂપ ટૂંકી વાર્તાના પ્રથમ પ્રશ્નપત્રમાં અમારે ચૌદ વાર્તાસંગ્રહો (સ્વરૂપ-વિકાસ ઉપરાંત !) ભણવાના હતા. તેમાં એક હતો રવીન્દ્રનાથ ટાગોરની વાર્તાઓનો અનૂદિત સંગ્રહ 'રવિ કિરણો' (અનુવાદ – કિસનસિંહ ચાવડા) પુસ્તક ઉપલબ્ધ ન હતું. અમારા અધ્યાપક શ્રી અનંતરાય રાવળ પાસે પણ પ્રત નહીં ! વિચાર્યું બંગાળી શીખીને ટાગોરની વાર્તાઓ મૂળમાં જ કેમ ન વાંચવી ? ભોળાભાઈને વાત કરી. તેમણે બંગાળી શીખવવાની હા પાડી. ભવનમાં તેઓ ફ્રી હોય ત્યારે તેમના રૂમમાં પહોંચી જતો. તેમણે ઘરે આવવાનું કહ્યું. હું યુનિ. હોસ્ટેલમાં રહેતો હતો. તેમનું ઘર ચાલતા જઈ શકાય એટલું દૂર હતું. સાંજનું ભોજન પતાવી તેમના ઘરે જતો. મારો રૂમપાર્ટનર કમલેશ દવે (ડૉ. જગદીશ દવેનો સૌથી નાનો ભાઈ) પણ સાથે જોડાયો. એકાદ કલાક અમારું અધ્યયન ચાલતું. નીકળીએ ત્યારે ભોળાભાઈ અમને મૂકવા ખાસ્સા દૂર સુધી આવતા ! આ રીતે રવીન્દ્રનાથ અને બંગાળી નિમિત્તે આત્મીય સંબંધ બંધાયો.

એમ.એ.ના અભ્યાસ દરમિયાન ગુજરાતી-સંસ્કૃતના અધ્યાપકો કરતાં ભોળાભાઈ સાથે વધારે ઘનિષ્ઠ આત્મીય સંબંધ બંધાયો જે પછી જીવનપર્યંત રહ્યો.

એમ.એ. થઈ બાલાસિનોર કૉલેજમાં હું જોડાયો. એ બે વર્ષ દરમિયાન જ્યારે પણ અમદાવાદ આવવાનું થતું ત્યારે તેમને મળવા અચૂક જતો. બે વર્ષ પછી શિક્ષણની નવી તરાહને કારણે કૉલેજમાંથી સંખ્યાધિક થઈ કડીની ઝવેરી હાઈસ્કૂલમાં જવાનું થયું. પીએચ.ડી. કરવાનો વિચાર આવ્યો. વડોદરા જઈ સુરેશભાઈ જોષીને મળી આવ્યો. 'આધુનિક ગુજરાતી કવિતામાં લય' એવો વિષય નક્કી કર્યો. પછી ભોળાભાઈને મળીને જાણ કરી. તરત તેમણે પ્રતિભાવ આપ્યો : 'તેં વિષય અને માર્ગદર્શક બંને એવા પસંદ કર્યા છે કે પીએચ.ડી. ક્યારે પૂરું થશે એ કહી ન શકાય !' હું સમજી ગયો. મેં તેમને સૂચવવા

કહ્યું. તેમણે વિષય સૂચવ્યો – 'રાજેન્દ્ર-નિરંજન યુગની કવિતા' અને માર્ગદર્શક સૂચવ્યા ડૉ. ચિમનભાઈ ત્રિવેદી. એક મહિનામાં જ રજિસ્ટ્રેશન થઈ ગયું અને બે વર્ષમાં (લઘુતમ સમયગાળામાં) પીએચ.ડી. પૂરું થયું ! તેમનું માર્ગદર્શન-મદદ મળતાં જ રહેલાં !

પીએચ.ડી. થઈ ૧૯૮૦માં ઈડર કૉલેજમાં જોડાયો ત્યાં તપ પૂરું કર્યું. એમ.એ. થઈ મેં લખેલો પહેલો વિવેચનલેખ વાંચી તેમણે વિવેચનમાં કઈ બાબતોનું ધ્યાન રાખવું એ અંગે સમજાવેલું. ખાસ તો વિશેષણોના વપરાશમાં વિવેક જાળવવા જણાવેલું. તેમનાં સૂચનોનો અમલ આજે પણ કરું છું.

કડી નોકરી કરતો હતો એ દરમિયાન તેમના મોટા પુત્ર મધુસૂદનને કડીમાં નોકરી મળેલી. મધુ સાથે મૈત્રી થઈ. એના લગ્નમાં ભોળાભાઈના પટ્ટશિષ્ય પંચક (જેમનો ઉલ્લેખ 'દિવ્યભાસ્કર'માં તેમના અવસાનના દિવસે પ્રગટ થયેલ અજ્ઞેય વિષયક પુસ્તકના પત્રરૂપ અવલોકનના પ્રારંભે થયો છે) સાથે હું પણ સમ્મિલિત થયેલો. મારાં લગ્ન એ પછી થયેલાં. એમાં ભોળાભાઈની સાથે મધુ અને સૌ. શર્મિષ્ઠા પણ આવેલાં. ફોટોગ્રાફીનું કામ શર્મિષ્ઠાએ કરેલું.

ભોળાભાઈ કડી અને ઈડરના અમારા નિવાસે અનેક વાર આવેલા. મારા કરતાં પણ મારી પત્ની અરુણા પર તેમનું વાત્સલ્ય વધુ વરસતું. હું જ્યારે તેમને એકલો મળું ત્યારે અરુણાના સમાચાર અચૂક પૂછતા.

હું ઈડર હતો ત્યારે શ્રી પન્નાલાલ પટેલને જ્ઞાનપીઠ પુરસ્કાર મળ્યો એ સંદર્ભે અમે કૉલેજમાં બે દિવસનો સેમિનાર કરેલો. શ્રી ઉમાશંકરભાઈ બંને દિવસ હાજર રહેલા. સેમિનારના વિષયો-વક્તાઓ પસંદ કરવામાં ભોળાભાઈનું માર્ગદર્શન મળેલું. ભોળાભાઈ અને ઉમાશંકરભાઈ સાથે શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર વિહાર પર જવાનું બનેલું.

૧૯૮૩માં ભોળાભાઈને વિશ્વભારતી, શાંતિનિકેતનમાં એક વર્ષ માટે તુલનાત્મક ભારતીય સાહિત્યના વિઝિટિંગ ફેલો તરીકે જવાનું થયેલું. રવીન્દ્ર સાહિત્યનું સઘન અધ્યયન કરવા મળ્યું તેનો તેમને વિશેષ આનંદ હતો. પરંતુ સુખ-દુઃખ, આનંદ-વિષાદ જોડાયેલા જ હોય છે. તેઓ ત્યાં હતા તે દરમિયાન તેમની એક માત્ર પુત્રી મંજુલા નાની વયે વિધવા થઈ. આગલા વર્ષે જ તેમણે માતાને ગુમાવ્યાં હતાં, પણ પુત્રીની વેદના સહેવી તેમને માટે કપરી થયેલી. થોડા મહિના પછી હું અમદાવાદ આવેલો અને ભોળાભાઈની સાથે કંઈક કામે યુનિવર્સિટી ગયેલો. ત્યાં અમને ડૉ. પ્રવીણ દરજી મળી ગયા. તેમણે ભોળાભાઈને ખબરઅંતર પૂછ્યા. પાછો પેલો ઘા તાજો થયો. પુત્રીના વૈધવ્યની વાત કરતાં કરતાં તેઓ ધ્રુસકે ધ્રુસકે રડી પડ્યા ! મેં અને પ્રવીણભાઈએ માંડ માંડ તેમને શાંત પાડેલા.

હું ઈડર હતો તે દરમિયાન મારે સાહિત્ય અકાદમીના પશ્ચિમ વિભાગના એક વર્કશોપ માટે મુંબઈ જવાનું થયેલું. ગુજરાતમાંથી ભોળાભાઈ, પ્રમોદકુમાર પટેલ અને વિજય શાસ્ત્રી પણ હતા. તેમના દ્વિતીય પુત્ર આનંદ માટે મુંબઈથી માગું આવ્યું હતું. વર્કશોપ દરમિયાન મને લઈ તેઓ આનંદ માટે કન્યા જોવા ગયા. ઘર આવ્યું એટલે એમણે બગલથેલો મને આપી દીધો ! કન્યા જોઈ. સુંદર, સુશીલ, સંસ્કારી અને શ્રીમંત હતી પણ બહાર નીકળી મને કહે, 'આનંદને નહીં ગમે.' મેં પૂછ્યું, 'કેમ ?' તો કહે, 'આનંદને આ દેશી લાગશે !' બીજા દિવસે અમે એક સાહિત્યકારના

ઘરે મળવા ગયા. એમની દીકરી મોડર્ન અને સુંદર હતી, કુંવારી પણ. મેં હળવેથી કહ્યું, ‘આનંદ માટે આ ના ચાલે ?’ મને કહે, ‘ચાલે.’ મેં કહ્યું, ‘તે તો વાત કરો ને !’ કહે : ‘એવી રીતે વાત ના કરાય.’

વર્કશોપમાં ગુજરાતી સાહિત્યની ગતિવિધિ વિશે પ્રમોદકુમારે વાત કરવાની હતી. આગલી સાંજે અમારી ત્રણ જણ સામે તેમણે તેમનું પેપર વાંચ્યું. પેપર અભ્યાસપૂર્ણ હતું પણ વધુ પડતું કડક હતું. ભોળાભાઈએ તેમને કહ્યું કે અન્ય ભારતીય ભાષાઓના અભ્યાસીઓ આગળ આપણા સાહિત્યની વાત કરતી વખતે આવા કડક થવાની જરૂર નથી. પ્રમોદકુમાર સમજ્યા અને બીજા દિવસે તેમણે વક્તવ્યનો ટોન બદલી કાઢ્યો.

ડૉ. રમણલાલ જોશી નિવૃત્ત થયા પછી ગુ. યુનિ.માં પ્રોફેસરની પોસ્ટ એડ્વર્ટાઈઝ થઈ. મેં અરજી કરી. એ જાણી ભોળાભાઈ રાજી થયા. તેમનાથી શક્ય એ બધી મદદ પણ તેમણે કરેલી. ૧૯૯૧માં હું ભાષાભવનમાં જોડાયો. ૧૯૯૪માં તેઓ નિવૃત્ત થયા. ત્રણ વર્ષ તેમની સાથે કામ કરવાનું મળ્યું એ લહાવો હતો. હું ચા નહોતો પીતો છતાં રોજ રિસેસમાં સ્ટાફરૂમમાં અવશ્ય જતો. અડધા કલાકની રિસેસ દરમિયાન સાહિત્ય અને શિક્ષણજગત વિશે ઘણું જાણવા-શીખવા મળેલું. તેમણે નિવૃત્ત થતાં પહેલાં શિષ્યા રંજના અરગડેની વિભાગમાં નિમણૂક કરેલી. રીડર્સ રો હાઉસીસમાં રંજના મારી પડોશમાં રહેવા આવેલી. હિન્દીના વરિષ્ઠ કવિ શમશેર બહાદુરસિંહ તેની સાથે રહેતા હતા. એને લીધે ભોળાભાઈ વારંવાર તેને ત્યાં આવતા. બાજુમાં જ અમે રહીએ એટલે અરુણાને ખોટું ન લાગે માટે અમારે ત્યાં પણ આવતા. મોટે ભાગે એમને મૂકવા હું ચાર રસ્તા સુધી જતો. એક દિવસ અમે હેલ્થ સેન્ટર સુધી પહોંચ્યાં ત્યાં જબરદસ્ત વાવાઝોડું આવેલું !

ટાગોરની સાર્ધશતાબ્દીના સમાપન પ્રસંગે પરિષદમાં રવીન્દ્ર મહોત્સવ થયો અને સફળ રહ્યો તેથી ભોળાભાઈ ખુશ હતા. મેં લખેલું ટાગોરનું ચરિત્ર ‘કવિ ગુરુ રવીન્દ્રનાથ’ની નકલો મારી પાસે આવી કે તરત ૧૮મી મેના રોજ સાંજે ફોન કરીને તેમના ઘરે ગયો. સાડા પાંચે પહોંચ્યો. છ વાગ્યે AMAમાં એક વ્યાખ્યાન હતું તેમાં મારે જવું હતું. વિચારેલું કે પુસ્તક આપી પંદરેક મિનિટમાં નીકળી જઈશ. પણ લાંબા સમયે અમારે મળવાનું થયું હતું. તેથી વાતોનો સિલસિલો ચાલ્યો. હું ચા નથી પીતો એ તેઓ જાણતા એટલે શકુબહેનને કહે, ‘પ્રસાદ માટે સુખડી લાવો.’ ગળ્યાનો હું શોખીન. પ્રેમથી આરોગી. ટાગોરની જીવનીનાં પાનાં ફેરવ્યાં. ‘દિવ્યભાસ્કર’માં તેમની સાહિત્ય વિષયક કૉલમની બાજુમાં જ મારી ‘ગીતાંજલિ ગુંજન’ શરૂ થયેલી એનું કટીંગ તેમના ટેબલ પર જ પડેલું. પ્રસન્નતા પ્રગટ કરી, કેટલાંક સૂચનો પણ કર્યાં. મને કહે, ‘અમારો સમય હવે પૂરો થયો. હવે તમારે સંભાળવાનું છે.’ તેમની કૉલમમાં ‘કવિ ગુરુ રવીન્દ્રનાથ’ વિશે લખવા મેં કહ્યું તો અજ્ઞેયનાં મોટાં વોલ્યુમ બતાવી કહે, ‘માંડ માંડ આના વિશે લખી શક્યો છું. ટાગોર વિશે લખવાનું તો મને ગમે જ પણ મને નથી લાગતું કે હવે હું લખી શકું.’ મને આશ્ચર્ય થયું. મેં ના પાડી તોયે મને મૂકવા બહાર આવ્યા. સામે જ પુત્રવધૂ માયા મળી. ‘આવજો’ કહી હું નીકળ્યો. રવિવારે ‘દિવ્યભાસ્કર’માં મારી અને તેમની કૉલમ વાંચતો હતો ત્યાં રંજનાનો ફોન આવ્યો : ‘પ્રસાદભાઈ, તમને ખબર પડી ને, પટેલ સર હવે આપણી વચ્ચે નથી !’ સાંભળી હું થોડી વાર તો અવાક્ થઈ ગયો !

વડીલ સ્વજનની જેમ કાર્યનિષ્ઠ

મોહન પરમાર

શ્રી ભોળાભાઈ પટેલનો પરિચય મને એમના અવસાન પૂર્વેના છ મહિનામાં વિશેષ થયો છે. 'પરબ'ના સહતંત્રી તરીકે અને ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદની કારોબારી / મધ્યસ્થ સમિતિના સભ્ય તરીકે તેમની નજીક આવવાનું બન્યું ત્યારે એ કેવા મિલનસાર અને નિખાલસ સ્વભાવના હતા તે અનુભવ્યું. તે પહેલાં ભોળાભાઈનો પરિચય નહોતો તેવુંય નહોતું. સાહિત્યના મેળવડાઓમાં કે યુનિવર્સિટીમાં ભોળાભાઈને અવારનવાર મળવાનું થતું. તે વખતે મને યાદ છે કે ભોળાભાઈ ખભે બગલથેલો ભરાવીને યુનિવર્સિટીથી ચાલતા ઘરે જવા નીકળતા. યુનિવર્સિટીની બહાર રોડ પર એમની સાથે સાહિત્ય સંગોષ્ઠિ કર્યાનું મને સ્મરણ છે. હું ક્યારેય કોઈ વડીલ સાહિત્યકારની માનમર્યાદા ઓળંગીને વર્ત્યો નથી. ભોળાભાઈને મેં એક વડીલ સાહિત્યકાર તરીકે હંમેશાં માન આપ્યું છે. એ પ્રવાસલેખક હતા તે સાચું પણ સર્જનાત્મક લલિત નિબંધોમાં વિવેચકોએ એમને વખાણ્યા એટલે એક સાહિત્યકાર તરીકે મને એમના માટે આદરભાવ હતો.

શ્રી ભોળાભાઈને ખાસ યાદ કરવા પડે તેમ હોય તો તેમના અનુવાદકાર્યને કારણે. કેટકેટલી બંગાળી કૃતિઓ ગુજરાતીમાં એ લાવ્યા. સુનીલ ગંગોપાધ્યાયની 'સ્વર્ગ નીચે મનુષ્ય', રવીન્દ્રનાથ ઠાકુરની નવલકથા 'ચાર અધ્યાય', જીવનાનંદ દાસની કવિતા 'નગ્નનિર્જન હાથ' જેવા અનુવાદો ગુજરાતી સાહિત્યમાં લાવીને એમણે સાહિત્યની સાચી સેવા કરી છે.

શ્રી ભોળાભાઈ પટેલનું ગામ સોજા અમારા મહેસાણા જિલ્લામાં આવેલું છે. સોજાની આજુબાજુનાં ગામડાંઓમાં અમારાંય સગાંવહાલાં. આ ગામડાઓમાં વારંવાર જવાનું થતું. સોજા ગામ પરથી બસ પસાર થાય ત્યારે મનમાં અચૂક થઈ આવે કે અરે, આ તો અમારા ભોળાભાઈનું ગામ ! એક નાનકડા ગામનો ખેડુપુત્ર શહેરમાં આવી હિન્દીનો અધ્યાપક બને અને ગુજરાતી સાહિત્યમાં લલિતનિબંધ, અનુવાદ, વિવેચન અને રસાળ વક્તવ્યોથી પોતાની આભા વિસ્તારી લોકપ્રિય બને તે કાંઈ નાનીસૂની ઘટના નથી. મેં ૧૯૮૦થી આજસુધીનાં વર્ષોમાં એમની સ્થિતપ્રજ્ઞ અવસ્થા જોઈ છે. સદાય હસતો ચહેરો. આ માણસ ક્યારેય ગુસ્સે થયા હશે કે કેમ એવો પ્રશ્ન થાય.. દલિત સાહિત્ય વિશે મિત્રો ક્યારેક એમને પ્રશ્નો પૂછીને મૂંઝવી નાખે ત્યારે એમને સ્વસ્થ ચિત્તે જવાબો આપતા મેં જોયા છે. એમની સાથેની વાતચીત પરથી મને તો પ્રતીતિ થઈ છે કે દલિત સાહિત્ય પ્રત્યે એમને નફરત નહોતી. નિબંધ-લેખક તરીકે એમની ગણના મોટા સાહિત્યકાર તરીકે થાય છે તે સાચું, પણ સાહિત્યના અભ્યાસી તરીકે ન ભૂલી શકાય તેવું એમનું કાર્ય છે. એમણે ભારતની ભાષાઓનું જ માત્ર અધ્યયન કર્યું છે તેવું નહોતું, વિદેશી ભાષાઓ સાથે પણ એમનો નાતો હતો.

વધારે પ્રીતિ તો એમને પોતાની ગુજરાતી ભાષા માટે હતી. ગુજરાતી સાહિત્યનાં બધાં સ્વરૂપો વિશે એમણે અધ્યયન કર્યું છે. સારું લાગ્યું તે વાંચ્યું અને એના વિશે એમણે લખ્યું પણ છે. કોઈ સર્જકની સારી કૃતિઓ વિશે સમયના અભાવે લખી શકાયું ન હોય તો મળવાનું બને ત્યારે અચૂક આપણી સારી કૃતિઓ વિશે એ વાત કરે. મારા વાર્તાસંગ્રહ 'અંચળો'ને કેન્દ્રીય સાહિત્ય અકાદમી, દિલ્હીનો એવૉર્ડ મળ્યો ત્યારે એ બેહદ ખુશ હતા. ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના અધિવેશન જૂનાગઢમાં પ્રેમથી ભેટીને એમણે મને દિલસટોસટ અભિનંદન આપ્યા હતા. 'મોહનભાઈ, ખરેખર તમે આ એવૉર્ડ માટે લાયક હતા.' એમ કહીને ભીની આંખે મારી સામે જોઈ રહેલા તે દૃશ્ય મારી આંખો સામેથી આજેય ખસતું નથી. તે વખતે પ્રેમથી લથપથ ભોળાભાઈ મને મારા સ્વજન જેવા લાગેલા. એમણે મારા ખભા પર હાથ મૂકીને કહેલું : 'એવૉર્ડ લેવા દિલ્હી ક્યારે જાઓ છો ?' મેં કહ્યું : 'ફેબ્રુઆરીમાં.' તરત જ એમણે મને કહ્યું : 'ઓઢવાનું લેતા જજો. તે વખતે દિલ્હીમાં ઠંડી વધારે હોય છે...' હું એમની પ્રેમસભર આંખોને જોતો જ રહી ગયેલો. કોઈના સુખમાં કે કોઈના દુઃખમાં કોઈ સહભાગી થાય ત્યારે સમજવું કે એ માણસ ઈર્ષાભાવથી પર છે. મને ભોળાભાઈ પટેલ ઈર્ષાભાવથી પર લાગેલા. કોઈના સુખમાં જે માણસ સહભાગી થતો નથી તે ક્યારેય કોઈના દુઃખમાં સહભાગી થઈ શકતો નથી. કેમકે સુખદુઃખની લાગણીઓ માણસને થાય છે. ને એમાં સહભાગી થનાર માણસ જ હોય છે. ભોળાભાઈ સુખદુઃખમાં સહભાગી બને તેવા વિરલ પુરુષ મને લાગ્યા છે.

શ્રી ભોળાભાઈ ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના પ્રમુખ ઘણા મોડા થયા. મોડા તો મોડા પણ પ્રમુખ થયા પછી ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના વિકાસમાં એ સતત કાર્યરત રહ્યા છે. ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના જૂનાગઢ ખાતેના અધિવેશન-૨૦૧૧માં એ પ્રમુખ થયા અને છ મહિનામાં તો એમની જીવનલીલા સંકેલાઈ ગઈ. આ છ મહિનામાં અનેક વાર એમની સાથે મિટિંગોમાં હું હાજર રહ્યો છું. એમના મોઢે માત્ર સાહિત્ય અને સાહિત્ય પરિષદના વિકાસની વાતો સિવાય બીજું કશું જ ન હોય. ૭૮ વર્ષની જૈફવયે સાહિત્ય માટે આવી કાર્યશીલતા દાખવવી તે એમની સાહિત્યપ્રીતિને આભારી છે. છેલ્લા છ મહિનામાં મેં એમને સાવ નજીકથી જોયા છે, ઓળખ્યા છે – ખરેખર એ એક ધબકતા માણસ હતા, માણસાઈ એમની રગેરગમાં વહેતી હતી. એ જેટલા માયાળુ, મળતાવડા સ્વભાવના હતા તેટલા જ સ્પષ્ટવક્તા હતા. સાહિત્ય પરિષદની મિટિંગોમાં કે અન્યત્ર એમને જેવું લાગ્યું તેવું જ કહ્યું છે. સાહિત્ય પરિષદના પ્રમુખ થયા પછી એક વડીલ સ્વજનની જેમ એ કાર્યનિષ્ઠ રહ્યા છે. ભારત અને ભારતની બહાર એમણે અનેક પ્રવાસો કર્યા છે. ગુજરાતી સાહિત્યમાં પ્રવાસ-લેખનમાં એમનું મહત્ત્વનું યોગદાન રહ્યું છે. લલિત નિબંધમાં એમનું સાહિત્યકૌશલ્ય પૂર્ણપણે ખીલેલું જોઈ શકાશે. જે દૃશ્યો એમણે જોયાં તે ચિત્રાત્મક રૂપે શબ્દસ્થ કર્યાં. સાહિત્ય સાથે પનારો પાડનાર આ સર્જક છેક સુધી સાહિત્ય સંગે રહ્યા. સાહિત્યનાં કાર્યોમાં જ રમમાણ રહીને અવસાન પામ્યા છે. એમનો સાહિત્ય સાથેનો આ નાતો કાયમ માટે આપણા સ્મરણમાં રહેશે. ભોળાભાઈના અવસાનથી સાહિત્યજગત સ્તબ્ધ છે. પણ એમના નિબંધોમાં રહેલી સૌંદર્યદૃષ્ટિ આપણને સતત સચેત કરતી રહેશે.

ભોળાભાઈ : ગરવી ગુજરાતી રાણીના લાડકા વકીલ

કેશુભાઈ દેસાઈ

મૃત્યુના થોડાક જ દિવસ પહેલાં ભોળાભાઈનો ગૂર્જર પ્રકાશનના પંચવટી ખાતે આવેલા કાર્યાલયમાં ભેટો થઈ ગયો હતો. સૂર્યકાંત પરીખના વડપણ હેઠળ ચાલતી શૌચાલય પ્રવૃત્તિ ('નાસા ફાઉન્ડેશન')ના ત્રૈમાસિક 'શૌચમંગલ'નું મેટર આપવા હું શારદા મુદ્રણાલયના કાર્યાલયમાં – અગાઉ રોહિત કોઠારી બેસતા એ ખંડમાં બેઠો હતો. સવા દસનો સુમાર હશે. ઓચિંતી અનસૂયાની સૂની કુટીરમાં જાણે બ્રહ્મા-વિષ્ણુ-મહેશ જેવી ત્રિપુટી પ્રવેશી. ચિમનલાલ ત્રિવેદી, ભોળાભાઈ પટેલ અને સ્વનામધન્ય નિરંજન ભગત. વિવેક દાખવવા મેં મારી ખુરશી પરથી ઊભા થઈ એમનાં અડધાંપડધાં પાયલાગણ કર્યાં અને પાસે પડેલા સોફા પર બેસવા જતા ભગતસાહેબ અને ભોળાભાઈને ખુરશીની 'ઑફર' કરી. ભગતસાહેબે હળવી મજાક કરી : 'સ્થાનભ્રષ્ટ ના થશો, આમેય આજકાલ ભ્રષ્ટાચાર બહુ વધી ગયો છે!' મેં હોઠવગો શ્લોક (સુભાષિત) સંભળાવી એ ત્રિદેવને મારી સામે સોફા પર બેસવા દીધા :

स्थानभ्रष्टाः न शोभन्ते दन्ताः केशाः नखाः नराः।
इति विज्ञाय मतिमान स्वस्थानं न परित्यजेत् ॥

– ભોળાભાઈ મલકાયા. ભગતસાહેબ આગળ મારી પ્રશંસા કરતાં કહેવા લાગ્યા : ખૂબ લખે છે. જ્યાં જુઓ ત્યાં કેશુભાઈનું નામ નજરે ચડે ! કવિતાઓ પણ લખવા માંડ્યા છે હમણાં તો !

મને પણ મજાક સૂઝી : તમે ફક્ત લખાણ ઉપરનું નામ જ વાંચો છો, એટલે મારું તો એકનું એક લખાણ બે-ત્રણ જગ્યાએ છપાતું હોય છે...

ભોળાભાઈ બહુ 'લખતા' નહોતા; એ બહુ 'વાંચનારા' અને 'વાગોળનારા' વિદ્યાપુરુષ હતા. બોલવાનું પણ બહુ અનિવાર્ય હોય ત્યાં અને ત્યારે જ બોલતા. એમને વાંચવામાં જે આનંદ આવતો એ લખવામાં નહીં આવતો હોય એટલું અનુમાન જરૂર બાંધી શકાય. વળી, એ વાંચવા જેવું લાગે એ જ વાંચતા. એથી કોઈ નવોસવો લેખક જ્યારે આશાભરી નજરે એનું પુસ્તક આપવા પહોંચી જતો ત્યારે બહુ ઠાવકાઈપૂર્વક એનાં રંગરૂપનાં વખાણ કરી આ વરિષ્ઠ સાક્ષર એને સાચી વાત સંભળાવી દેતા : પુસ્તક આપ્યું એ બદલ આભાર પણ હું એ વાંચી શકીશ કે કેમ, એની ખાતરી નથી આપી શકતો !

એમનો આવો પ્રતિભાવ સામા માણસને સ્વાભાવિક લાગતો. આવડી મોટી રાષ્ટ્રીય હસ્તી પર તો રોજેરોજ પુસ્તકોનો વરસાદ વરસતો હોય. આપણા જેવા મામૂલી લેખકોને વાંચવાનો વખત જ શાનો મળે એમને ? બલકે આપણા પુસ્તકને એમનો હાથ અડ્યો, એ જ આપણું અહોભાગ્ય.

'ભોળાભાઈ' નામ કોઈ ગામડાના ખેડૂતને શોભે એવું નામ હતું. પરંતુ વિદ્યાક્ષેત્રે કાઠું કાઢ્યા છતાં એમણે ન તો એમાં કશો ફેરબદલો કર્યો કે ન કોઈ નરવું-ગરવું તખલ્લુસ ધારણ કર્યું. એમને પોતાની મૂડી પર જ વેપાર કરવો હતો અને એ મૂડીમાં એમણે ઉત્તરોત્તર સતત વધારો કર્યો હતો. ખેડૂત પરિવારનું ફરજંદ એટલે એ સખત પરિશ્રમ કરી શકતા હતા. એમને એક વાર એમ.એ.

કરવાથી સંતોષ ન થયો, તેથી બીજી વાર અંગ્રેજી વિષયમાં એમ.એ. કર્યું. એ જમાનામાં હિંદીને રાષ્ટ્રભાષા તરીકે ઉપસાવવાની ઝુંબેશ ચાલતી હતી, એથી ભોળાભાઈ, રઘુવીરભાઈ અને ચંદ્રકાંત મહેતા જેવા તેજસ્વી વિદ્યાપુરુષોએ હિંદી સાહિત્ય લેવું શ્રેયસ્કર માન્યું હશે. સાહિત્યના ખેતરમાં એ જરા મોડા પ્રવેશ્યા. રઘુવીર ચૌધરી એમના વિદ્યાર્થી હતા અને સર્જક તરીકે જ નહીં બલકે સાહિત્યક્ષેત્રના સંયોજક તરીકે એમના નામના સિક્કા પડવા લાગ્યા હતા. એમના આગ્રહથી જ કદાચ ભોળાભાઈએ થોડા સંકોચ સાથે અક્ષર-પ્રવેશ કર્યો હતો. આમ શિષ્યના પગલે ગુરુનો સાહિત્યપ્રવેશ થયો, એ સાહિત્યજગતની વિરલ ઘટના છે. એમણે વાર્તા-કવિતામાં છબછબિયાં કર્યાં પરંતુ એમની રગ 'શિક્ષક'ની હતી. એટલે એમને ફાવટ આવી નિબંધ, વિવેચન અને અનુવાદમાં. 'વિદિશા' પછી તો એમનો ચારે દિશાઓમાં જયજયકાર થઈ ગયો. આવ્યા પાછળથી, પણ સૌથી આગળ નીકળી ગયા – સડસડાટ ! સાહિત્ય પદાર્થની એમની સમજણ ઘણી ઊંડી હતી. કાલિદાસથી રવીન્દ્રનાથ સુધીના આપણા મહાન સર્જકો એમને હૃદયવગા બલકે જીભવગા હતા. એમને 'મેઘદૂત' વિશે બોલવા સાંભળવા એ લહાવો હતો અને રવીન્દ્રસાહિત્યના તો તેઓ દેશભરમાં આંગળીના વેઢે ગણાય એવા 'માસ્ટર' હતા. કાકાસાહેબના પ્રવાસનિબંધની પાવનકારી ગદ્યગંગાને એમણે ગિરા ગુર્જરીના અભિનવ ભગીરથની જેમ પુનઃ વહેતી કરી; હિમાલયથી હેઠી ઉતારી, એમ કહીએ તોય ખોટું નહીં. એમના લાલિત્યપૂર્ણ પ્રવાસનિબંધોથી ગુજરાત અને ગુજરાતી – બેઉ રળિયાત થયાં. એથીય અદકેરું પ્રદાન એમણે પૂર્વોત્તર પ્રદેશની શ્રેષ્ઠ કૃતિઓને માતૃભાષામાં અવતારીને કર્યું. એ રીતસર એક અદના વિદ્યાર્થીની જેમ બંગાળી, ઉડિયા અને અસમિયા જેવી ભારતીય ભાષાઓ 'ભણ્યા' અને એક રીતે એ સાહિત્યસંસ્કારોને ગુજરાત સાથે જોડવામાં સેતુરૂપ બની રહ્યા. છેલ્લે જ્ઞાનપીઠ પ્રવરપરિષદના અધ્યક્ષ અને ઉડિયા ભાષાના વરિષ્ઠ કવિ સીતાકાંત મહાપાત્રની કવિતાઓનું એક રૂપકડું સંકલન ગુજરાતને ચરણે ધર્યું. કોઈ પણ કામ હાથ ઉપર લીધા પછી એને પૂરેપૂરો ન્યાય મળે, એ મુદ્દે તેઓ ખૂબ જ જાગ્રત રહેતા. સીતાકાંત મહાપાત્ર જ્ઞાનપીઠની પ્રવર પરિષદની બેઠક વખતે મને દર વખતે એમની કવિતાઓના અનુવાદ-સંપાદન કાર્યની પ્રગતિ વિશે પૃચ્છા કર્યા કરતા. દર વખતે દિલ્હીથી પાછો ફરી પહેલું કામ હું ભોળાભાઈને એમની 'ઉઘરાણી'ની યાદ અપાવવાનું કરતો. એકાદ વાર તો રૂબરૂ મળી આવેલો. કામ ચાલુ જ હતું, પરંતુ એનું પ્રકાશન તો એના અનુવાદક-સંપાદકને સંતોષ થાય એ રીતે જ થવું જોઈએ. ભોળાભાઈએ 'નિર્વાચિત કવિતા' શીર્ષક હેઠળ ઉડિયાના શ્રેષ્ઠ કવિની કવિતાઓના અનુવાદનું એક યાદગાર કહી શકાય એવું સંપાદન આપ્યું ત્યારે ખુદ મૂળ સર્જકને પણ લાગ્યું કે ભલે થોડું મોડું થયું પરંતુ ગુજરાત સાહિત્ય અકાદમીએ ભોળાભાઈ અને સીતાકાંત બેઉના નામને શોભે એવું કામ કરી બતાવ્યું છે.

હું એમને પહેલવહેલો રઘુવીર ચૌધરીના સાંનિધ્યમાં મળ્યો હતો. રઘુવીરભાઈ પણ ત્યારે પ્રોફેસર કૉલોનીમાં જ રહેતા. બેઉ ધરખમ વિદ્યાપુરુષ ખેડૂત સમાજમાંથી આવતા હતા, હું પણ ધરતીનો જ છોરું. મજાકમાં હું એ બે 'ધુરંધરો'ને ગુજરાતી સાહિત્યક્ષેત્રની બે બળદની જોડી કહી 'બિરદાવતો' રહ્યો છું. ધુરંધરનો તો એક અર્થ બલકે મૂળ અર્થ જ બળદ થાય છે. શ્રેષ્ઠતા સૂચક સંદર્ભ તરીકે પણ 'પુરુષર્ષભ' – પુરુષોમાં શ્રેષ્ઠ જેવો પ્રયોગ ક્યાં નથી થયો ? ભોળાભાઈ એવા સાહિત્યઋષિ અને શબ્દવૃષભ હતા. હતા જ વળી.

છેલ્લે મળ્યા ત્યારે એ નિરંજન ભગત અને ચિમનલાલ ત્રિવેદી સાથે ગૂર્જર પ્રકાશનની 'શ્રેષ્ઠ' શ્રેણીના 'શ્રેષ્ઠ રા. વિ. પાઠક'ને આખરી ઓપ

આપવા આવેલા હતા. આ 'શ્રેષ્ઠ' શબ્દને ગુજરાતી ભાષાસાહિત્યમાં કૉઈન કરવાનું શ્રેય પણ નિરંજન ભગતની ભાગીદારીમાં એ ધરતીપુત્રને મળવું જોઈએ. અંગ્રેજીમાં essential વિશેષણ પ્રયોજી થતાં સંપાદનોનું જ આ સર્જનાત્મક અનુકરણ ગણાય.

ભોળાભાઈને સાહિત્યકાર હોવા ઉપરાંત પાટીદાર હોવાનું પણ ગૌરવ હતું જ. જો એમ ન હોત તો સાહિત્યજગતનાં શ્રેષ્ઠ સન્માન પ્રાપ્ત કરનાર વિદ્યાપુરુષ ગાંધીનગરના ટાઉનહૉલમાં શંકરલાલ ગુરુ પ્રેરિત 'પાટીદાર રત્ન' જેવું સન્માન સ્વીકારવા ઉપસ્થિત રહે ખરા ? કડી સર્વ વિદ્યાલય સાથે એમને આજીવન લોહીની સગાઈ રહી. રવીન્દ્રનાથ વિશે બોલતા હોય એટલી જ નિષ્ઠાથી એ સર્વ વિદ્યાલયના કર્ણધાર માણેકલાલ કે સ્થાપક છગનભા વિશે વાત કરતા. સર્વ વિદ્યાલયનાં બાળકો સાથે એ વત્સલ દાદા બની જઈ એમની પ્રવાસ-ભૂખ વહેંચતા. એમણે જીવનમાં એક સાદું સૂત્ર અપનાવ્યું હતું : 'ખાના ? તો નહીં ખાના; જાના ? તો જાના !' એમણે લાંબી યાત્રાએ જવાનો કૉલ આવ્યો ત્યારે પણ તાબડતોબ ઊપડી જવાનું જ પસંદ કર્યું ! એમનાં કેટલાંક ગૃહીતો સાથે મતભેદ હોવા છતાં હું એમનો ખૂબ આદર અને અદબ જાળવતો. પૂછવા જેવું પૂછતો. કેન્દ્રીય હિંદી નિદેશાલય તરફથી મને ૨૦૦૮ના ગુજરાતી સાહિત્યનું વાર્ષિક અવલોકન કરવાનું કામ સોંપાયું ત્યારે હું એક વિદ્યાર્થીની જેમ એમની સામે નોંધો ટપકાવવા બેસી ગયેલો. ક્યારેક સારું સૉનેટ લખાઈ જાય તો એની નકલ એમને મોકલાવતો. એમનો ત્વરિત પ્રતિભાવ પણ આવતો. 'હવે આટોપી લો' શીર્ષક હેઠળનું મારું સૉનેટ એમને એટલું બધું ગમી ગયેલું કે એની ઉમળકાભરી ટૂંકી સમીક્ષા લખી મોકલાવેલી, જે મેં ભવિષ્યમાં કાવ્યસંગ્રહ કરું ત્યારે એમાં સમાવવા માટે સાચવી રાખી છે. દલપતરામની ભાષામાં 'ગરવી ગુજરાતી રાણી'ની વકીલાત કરનારા ભોળાભાઈ વિદ્યાપુરુષ તરીકે હતા એટલા જ એક માણસ તરીકે પણ ઊંચા હતા. ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના પ્રમુખપદે ચૂંટાયા ત્યારે મેં મારો આનંદ વ્યક્ત કરતો એક લેખ અમારા પ્રકાશક આર. આર. શેઠ ઍન્ડ કંપનીના હાઉસ મૅગેઝિન 'સર્જક-ઉદ્ગાર' માટે લખી આપેલો. એ લેખ વાંચી એ ગદ્ગદ થઈ ગયા હતા. જ્યારે કેટલાક મહિનાઓ પછી સાહિત્ય પરિષદના સભાગૃહમાં રૂબરૂ મળ્યા ત્યારે કહે, 'કેશુભાઈ, તમારી લાગણીનો શો પ્રતિભાવ પાઠવવો એ નક્કી નહોતો કરી શક્યો એટલે તમને આભાર માનતો પત્ર નહોતો લખ્યો !'

જ્ઞાનપીઠ પારિતોષિક ચયન સમિતિના સદસ્ય તરીકે મારી નિમણૂક થઈ ત્યારે સૌથી પહેલું કામ મેં ભોળાભાઈને મળીને માર્ગદર્શન મેળવવાનું કર્યું હતું. એમને સારું લગાડવા માટે નહીં, પરંતુ મારો આદર વ્યક્ત કરવા મેં સહજભાવે પૂછ્યું હતું : 'હું આપનું નામ રજૂ કરું તો ચાલે ?' ત્યારે એક ક્ષણનોય વિલંબ કર્યા વગર એ બોલી ઊઠ્યા હતા, 'હું મારી જાતને એટલો મોટો સર્જક નથી ગણતો મેં તો થોડા નિબંધો લખ્યા છે, કેટલાંક પ્રવાસવર્ણનો આપ્યાં છે; અનુવાદો આપ્યા છે. જ્ઞાનપીઠ એવૉર્ડ માટે મારું પ્રદાન ઘણું નાનું પડે. એ માટે તમારે કોઈ મોટા ગજાના સર્જનાત્મક સાહિત્યકારનું જ નામ સૂચવવું જોઈએ...' એટલું કહી એમણે હોઠે ચડ્યું એવું એકાદ નામ પણ સૂચવી દીધેલું.

આથી મોટી સમજણ કઈ હોઈ શકે ! સાહિત્યસર્જકને ગરિમા અર્પે એવો સંયમ આ 'પદ્મશ્રી' ગુજરાતી વિદ્યાપુરુષમાં અભરે ભર્યો હતો. ભોળાભાઈએ ભલે નિબંધો જ લખ્યા હોય, પરંતુ મારે મન એમનું સર્જનકાર્ય મોટા ગજાના રાષ્ટ્રીય સ્તરના સર્જક કરતાં કોઈ પણ માપદંડથી માપતાં ઊણું નહોતું.

અવિસ્મરણીય વ્યક્તિત્વ

ડૉ. કિશોરસિંહ સોલંકી

આપણા જીવનમાં કેટલા બધા લોકો આવતા હોય છે ! બધા જ યાદ રહે, એવું ના બને. કેટલાક લોકો એવા પણ હોય છે કે, જો આપણે ભૂલવા ઇચ્છીએ તોય ના ભુલાય. એમની સ્મૃતિ, પ્રેમ, હૂંફ, આનંદ કાયમી સાથે રહે, એવા ભોળાભાઈ પટેલનું વ્યક્તિત્વ હતું. જે જીવનમાં ક્યારેય ભૂલી શકાશે નહિ.

ત્યારે, હું ગુજરાત યુનિ.ના ભાષા-ભવનમાં નવોસવો દાખલ થયો હતો. કોઈપણ શૈક્ષણિક સંસ્થા / યુનિવર્સિટી સમેત, એના તેજસ્વી અને પ્રતિભાશાળી શિક્ષકો / અધ્યાપકો દ્વારા ઓળખાતી હોય છે. હું ભણતો ત્યારે ભવનમાં જે વિદ્વાનો હતા, એમની સુગંધ ગુજરાત અને ગુજરાત બહાર પણ ઘણી મોટી હતી. એમાં ભોળાભાઈ એક હતા. અમે તો પ્રથમ વર્ષના વિદ્યાર્થી પણ બીજા વર્ષના જે મિત્રો હોય તે આંગળી ચીંધીને અધ્યાપકોનો પરિચય કરાવે; આપણે ધન્ય બની જઈએ !

જ્યારે ભાષા-ભવનનો સમય થાય, એ પહેલાં અમે તો લાઇબ્રેરીમાંથી સીધા જ ભવનમાં આવી જઈએ. ભવનનાં પગથિયાં પાસેના ઓટલે બેસીએ, ગપ્પાં મારીએ. પણ જ્યારે સામેથી, બે જ અધ્યાપકો એવા, કે જેમને આવતા જોવાનો એક લ્હાવો છે. મારી આંખોમાં આજે પણ એ દૃશ્ય અકબંધ સચવાયેલું છે. કોમર્સ કૉલેજ તરફના રસ્તેથી આવતા હોય અનંતરાય રાવળ સાહેબ અને વિજય ચાર રસ્તા તરફથી આવતા હોય ભોળાભાઈ ! બંનેની ઊંચાઈ, ચાલવાની અદા, એમનો ઠસ્સો અને ચહેરા પર ચમકતો પ્રભાવ ઊડીને આંખે વળગતો હતો. ભોળાભાઈના ખભે થેલો – એમનો કાયમી સાચો સાથીદાર – તો હોય જ, એકલા એકલા ચાલતા હોય, તોય ચહેરા પર હાસ્યની લકીર ! જાણે વૃક્ષો-પર્ણો-ઘાસ-જીવ-જંતુઓ, પ્રાણીઓ, અરે ! વાહન અને રસ્તા સાથે જાણે એમનો સંવાદ ન ચાલતો હોય ! હાસ્ય પણ કેવું ? એકદમ નિખાલસ ! બાલસહજ હાસ્ય ! હાસ્યમાં બીજાની જેમ કોઈ જ શિયાળવૃત્તિ તો ભૂલમાં પણ નહિ ! કોઈપણ વિદ્યાર્થી માટે એમને ક્યારેય કોઈ વાંધોવચકો, મારા-તારાપણું, કશું જ નહિ. શૈક્ષણિક અને સાહિત્યિક વ્યક્તિઓ / સંસ્થાઓનું રાજકારણ જુદા જ પ્રકારનું હોય છે; એમાં ભોળાભાઈ તો સૌના; કોઈના પ્રત્યે સહેજ પણ અણગમો નહિ, એવા ભલા.

શરૂઆતમાં ભવનના પ્રથમ માળે હું એમને મળ્યો. મેં વંદન કરીને મારું નામ એમની આગળ ધર્યું. એમણે તરત જ કહ્યું : 'કુમાર'માં તમારું 'ગામ' સૉનેટ સરસ હતું. હું એકદમ ચોકી ઊઠ્યો ! એમની સ્મરણશક્તિને સલામ કરીને કહ્યું : 'સાહેબ, મારે તમારા વર્ગમાં આવવું છે.' 'તો તમારા વર્ગનું શું થશે ?' એમણે પૂછ્યું. 'આજે રમણલાલ જોશી સાહેબનો પિરિયડ ફ્રી છે.' 'જરૂરથી !' કહેતા હસીને પૂંઠ ફેરવી તો સામે જ દિગીશભાઈ મહેતા મળ્યા. ભોળાભાઈ સહજ ભાવે, હસતાં હસતાં બોલ્યા : 'આ ગુજરાતીનો વિદ્યાર્થી મારો વર્ગ ભરવા આવે છે.' બાળસહજ ! બંને હસ્યા. છૂટા પડ્યા. હું જ્યારે ફ્રી હોઉં ત્યારે અચૂક ભોળાભાઈનો વર્ગ ભરતો. એક નખશિખ – સાચો

શિક્ષક કોને કહેવાય ? તો સીધી આંગળી ચીંધાય ભોળાભાઈ સામે. એ રીતે એમનો શિષ્ય પણ ખરો.

અમને ઘણી વખત કહેતા : 'યુવાન છો, ખભે થેલો ભરાવીને નીકળી પડો. પ્રકૃતિને માણો. નવું નવું જોતા રહો. આ દુનિયા કેટલી વિશાળ છે ? યુવાનોએ તો રખડપટ્ટીનો ખાસ આનંદ લેવો જ જોઈએ.' ભોળાભાઈ, તમે તો ૭૮ વર્ષે પણ યુવાન હતા, વૃદ્ધ થઈ ગયા હોઈએ, તો અમે !

અમે બંને એક વખત મહુડી ખાતે 'ઉચ્ચતર માધ્યમિક આચાર્ય સંઘ'ના અધિવેશનમાં વક્તા તરીકે ભેગા થઈ ગયેલા. મારે ભોળાભાઈના પહેલાં બોલવાનું હતું. મેં પચીસેક મિનિટ વાત કરી હશે. તે ધ્યાનથી મને સાંભળી રહ્યા હતા. હું બોલીને બેસવા જતો હતો ત્યાં ભોળાભાઈએ ઊભા થઈને મારી પીઠ થાબડી ! બધાની વચ્ચે કહ્યું : 'કિશોરસિંહને હું આજે પહેલી વખતે જ જાહેરમાં સાંભળું છું. શું અદ્‌ભુત બોલ્યા !' મને અભિનંદન આપીને ખડખડાટ હસેલા. એમણે એમના વક્તવ્યમાં કહ્યું : 'કિશોરસિંહ અમારા ભાષાભવનનો તોફાનીમાં તોફાની વિદ્યાર્થી છતાંય કવિ !' બોલીને હસી પડ્યા.

મારી 'અરવલ્લી' નવલકથા લખાયા પછી મેં સૌપ્રથમ ભોળાભાઈને વાંચવા આપેલી. મેં એમાં 'લલિત નવલ' એવું લખ્યું હતું. દસમા દિવસે એમનો ફોન સામેથી આવ્યો. મને અભિનંદન આપ્યા. 'તમે ખૂબ સરસ કામ કર્યું છે, અરવલ્લી પર્વત જ નહિ પણ નાયક તરીકે ઊભર્યો છે.' હું ભોળાભાઈને મળવા ગયો. એ ઘણા જ પ્રભાવિત હતા. એમાં ક્યાંક થોડા સુધારા સૂચવ્યા અને પછી કહ્યું : 'આમાંથી ઘણાં પ્રકરણ એવાં છે કે, જે તમે અલગ અલગ સામયિકોમાં મોકલી આપો.' એમાંથી કેટલાંક પ્રકરણ એમણે તારવી પણ આપ્યાં. પછી 'પરબ', 'ઉદ્દેશ', 'શબ્દસર'માં 'અરવલ્લી'નાં કેટલાંક પ્રકરણ છપાયાં પણ ખરાં.

ભોળાભાઈની વૃત્તિ જે કંઈ ઉત્તમ છે, એ શોધીને બીજાની આગળ મૂકવાની હતી. ઊભરતા સાહિત્યકારને પ્રોત્સાહન આપવાની એમની આગવી સૂઝ હતી. એક મિત્ર ભાવે મળે, નાના-મોટાનો કોઈ જ આંતરો ના મળે.

'અરવલ્લી' નવલકથાનો ભારતીય જ્ઞાનપીઠ દ્વારા હિન્દીમાં અનુવાદ પ્રગટ થયો. ૧લી જાન્યુઆરી, ૨૦૧૨ના રોજ હિન્દી આવૃત્તિનો લોકાર્પણ કાર્યક્રમ અમદાવાદમાં રાખવામાં આવ્યો હતો. એમાં દિલ્હીથી હિન્દીના જાણીતા વિવેચક શ્રી પુરુષોત્તમ અગ્રવાલ આવવાના હતા. અહીંથી સ્વ. અંબાશંકર નાગરસાહેબ અને શ્રી મહાવીરસિંહ ચૌહાણ પણ હતા. મેં માત્ર ફોન પર ભોળાભાઈ સાથે વાત કરી તો એમણે રાજીપો વ્યક્ત કર્યો. 'તમારે એ માટે મળવા આવવાની જરૂર નથી. હું ચોક્કસથી આવીશ.' આવ્યા. 'અરાવલી' વિશે એમણે અડધો કલાક વાત કરી. પંદર મિનિટ સુધી ઊભા રહ્યા, પંદર મિનિટ બેસીને બોલ્યા, 'અરાવલી' વિશે ભોળાભાઈ જે બોલ્યા તે ન ભૂતો ન ભવિષ્યતિ !

ભોળાભાઈને 'પદ્મશ્રી' એવૉર્ડ મળ્યો, ત્યારે એનો આનંદ વ્યક્ત કરવા માટે હું ફૂલ લઈને ગયો : 'આની શું જરૂર છે ?' 'તમને તો ફૂલ ગમે છે ને ? એટલે જ સ્તો.' હસી પડ્યા. એ જ પલંગ, એ જ પુસ્તકો – આસપાસ આકાશમાં, ઘાસ-ચાસની પાસ પણ શબ્દપતિનો વાસ ! વાહ ! ઘણી વાતો કરેલી !

મણિભાઈ, ભોળાભાઈ વિશે, એમના સાહિત્ય અને એમના વ્યક્તિત્વ વિશે તો ઘણા મિત્રો લખશે. જ પણ એમની આડશે મેં મારી વાત કરીને, મારી જાતને ધન્ય બનાવી છે, એનો યશ એકમાત્ર ભોળાભાઈને જ જાય છે.

ભોળાભાઈ અજાતશત્રુ અને દેવાનંદની જેમ સદા બહાર હતા.

શ્રી ભોળાભાઈ : એક સ્વજન

પુરુષોત્તમ ગો. પટેલ

સ્વ. ભોળાભાઈને મળ્યા પહેલાં જ તેમના સાથે એકપક્ષીય રીતે સ્વજનનો નાતો બંધાયો. શ્રી મોહનલાલ પટેલ લઘુકથાના જનક, સાહિત્યકાર સાથે સગપણથી નાતો જોડાયો. શ્રી ભોળાભાઈને તેમના શિષ્ય તરીકે અને શ્રી ભોળાભાઈના શિષ્ય તરીકે શ્રી રઘુવીર ચૌધરી. સાહિત્યકારોમાં આ ત્રિપુટીનું અનોખું, ઐતિહાસિક સ્થાન. ત્રણે સાથે સમ્માનપૂર્વકનો લાગણીનો તંતુ જોડાયેલો. આદરપૂર્વક આ ત્રણે અંગે અનેક પ્રસંગોએ બોલાઈ જાય.

શ્રી ભોળાભાઈને પ્રત્યક્ષ મળ્યા પહેલાં જ ચાહતો થયો હતો. મારા દાદા પણ 'ભોળાભાઈ' જેમને હું વહાલો હતો જે મને પણ ખૂબ વહાલા હતા. શ્રી ભોળાભાઈ ધોરણ-૧૧ પછી શિક્ષક થયા અને તે સાથે જ ઉચ્ચ શિક્ષણ મેળવ્યું. મારે પણ ધોરણ ૧૧ પછી તરત જ માધ્યમિક શિક્ષક તરીકે જોડાવાનું થયું અને નોકરી સાથે ઉચ્ચ શિક્ષણનો અભ્યાસ કરવાનું થયું. આ સમાનતા જાણવા સાથે તેમના માટે સ્નેહથી સહજ રીતે જોડાણ થઈ ગયું. તેમણે પ્રાપ્ત કરેલી ડિગ્રીઓમાં સન્માનજનક ઊંચાઈ તો આદરપૂર્વક પ્રેરણાદાયક બની રહે તેવી હતી. ભણવામાં તેમનો શિષ્ય બની શકું તેટલા વર્ષ પાછળ શ્રી રઘુવીર ચૌધરીના સમાંતરે.

શ્રી ભોળાભાઈને પ્રત્યક્ષ મળવાનું થયું વર્ષ ૧૯૬૬-૬૭ના વર્ષ દરમિયાન. અમે એક જ સોસાયટી – વિજય કૉલોની, સરદાર પટેલ કૉલોની પાસે ભાડાના મકાનમાં આમનેસામને રહેતા હતા. તેઓ સરદાર પટેલ આર્ટ્સ કૉલેજના અધ્યાપક હતા, હું માધ્યમિક શાળામાં શિક્ષક હતો અને એમ.એડ.નો અભ્યાસ કરતો હતો. તેઓ સતત અભ્યાસરત એટલે ક્યારેક 'હલો', 'કેમ છો ?' એમ પૂછી લેવાના અમારા સંબંધ હતા પણ નિરભિમાનીપણાની ભરપૂર ઝલક તેમના વહેવારમાં તરી આવતી.

હું ગૂજરાત વિદ્યાપીઠમાં અધ્યાપક તરીકે જોડાયો, તેઓ ગૂજરાત વિદ્યાપીઠમાં બંગાળી શીખવવા આવતા ત્યારે તેમના પાસે 'બંગાળી' ભાષા શીખવા વર્ગો ભરવાનું શરૂ કર્યું. તેમની ભણાવવાની શૈલી ખૂબ જ રોચક, સાહિત્યને સાંકળી ભાષા-વ્યાકરણ શીખવતા જાય. તે રીતે તેમનો શિષ્ય થયો. કામના બોજથી બંગાળી શીખવાનું અધૂરું છોડેલું પણ શ્રી ભોળાભાઈ સાથે આત્મીયતા બંધાવાનો એક અનોખો લાભ મળેલો.

અવારનવાર મળવાનું થયા કરતું. પાઠ્યપુસ્તક મંડળમાં હિન્દીના પાઠ્યપુસ્તકોના સંપાદનની રીતે મળાયું. તેમનાં પ્રવચનો સાંભળવાનું થતું. તેમના પ્રવાસવર્ણન વાંચી વાતચીત કરવાનું થતું. પ્રગતિશીલ શિક્ષણમાં તેમના લેખ લેવાનું થતું. 'ગુરુ વંદના'ના વિશેષ અંકમાં તેમણે ખાસ લખી મોકલેલો. છેલ્લાં ચાર-પાંચ વર્ષથી 'વિદ્યાસભા'ની કારોબારીના સભ્ય તરીકે તેમના સાથેનો સંબંધ ઘનિષ્ઠ થયો. વિદ્યાસભાના તેઓશ્રી પ્રમુખ તરીકે કામગીરી બજાવતા હતા ત્યારે વિદ્યાસભામાં એક આંતરિક સમસ્યા થયેલી તે વખતે તેના અંગે અભ્યાસ કરીને અહેવાલ આપવા એક સમિતિ નીમવામાં આવી.

આ સમિતિમાં ડૉ. કુમારપાળ દેસાઈ અને મારી નિયુક્તિ કરવામાં આવેલી. આ સમિતિની બેઠકો નિમિત્તે અને પ્રશ્નના ઊંડાણમાં સમજ મેળવવા માટે વિદ્યાસભાના સભ્યો અને શ્રી ભોળાભાઈ સાથેના સંબંધો વધારે ઘનિષ્ઠ થયા. શ્રી ભોળાભાઈનું વહીવટમાં તાટસ્થ્ય અને પારદર્શિતા કાબિલેદાદ હતાં. વિદ્યાસભાના તેમના કાર્યકાળ દરમિયાન અનેક બાબતોના તેમણે સલુકાઈથી ઉકેલ કરેલા.

શ્રી ભોળાભાઈ સાથે ઈ.ટી.વી.ના એક કાર્યક્રમમાં શ્રી કાકાસાહેબ કાલેલકર વિશે બોલવામાં અમે બંને સાથે હતા. તેમની સ્મૃતિશક્તિ અજબગજબની. એન્કરીંગ કરનાર શ્રી રઘુવીરભાઈની પુત્રવધૂ સુનીતા હતાં. તે રજૂઆત મારા માટે પ્રેરણાદાઈ પ્રસંગ સમાન બની રહી છે. સાહિત્ય અને સાહિત્યકારો અંગે ઊંઘમાં પણ તેમને પૂછીએ તો તરત જ સંદર્ભ સાથે તેઓ વીગતો આપી શકતા. એક વખતે 'ગ્રામલક્ષ્મી'નાં પાત્રો અંગે તેમના સાથે વાતચીત કરેલી તો બીજેથી ક્યાંય ન મળેલા તેવા પ્રશ્નોના જવાબ તેમની પાસેથી તરત જ મળી ગયેલા. પ્રવચનોમાં વિવિધ ભાષાઓમાંથી, તેમાં રવીન્દ્ર ટાગોરના બંગાળી અવતરણો તો તેમના મોંએથી સાંભળવા એક લ્હાવો બની રહેતો.

શ્રી ભોળાભાઈના જવાથી, ગુજરાતી સાહિત્યને વિવિધ ભાષાઓ સાથે સેતુબંધ કરનાર એક વિદ્વતજનની ન પુરાય તેવી ખોટ પડી છે. વ્યક્તિગત રીતે એક સ્વજન ગુમાવ્યાની વ્યથા છે.

સૌમ્ય સારસ્વત

ડૉ. સોમભાઈ સી. પટેલ, કેમ્પસ ડાયરેક્ટર સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળ, ગાંધીનગર

ડૉ. ભોળાભાઈ સાથે પહેલો પરિચય ક્યારે થયો તેનું ચોક્કસ સ્મરણ નથી. વર્ષો પહેલાં ગુજરાત યુનિવર્સિટીમાં કોઈક કામ નિમિત્તે હું જતો ત્યારે ભાષાભવનમાં પણ કંઈક કામ નિમિત્તે જવાનું થતું. ત્યારે ત્યાં ડૉ. ભોળાભાઈ હિન્દી અનુસ્નાતક વિભાગના અધ્યક્ષ હતા તે જાણવા મળેલું. તેમની વિદ્યાર્થી વત્સલતા અને ઉત્તમ અધ્યાપકીય સજ્જતા પણ તે સમયે જાણવા મળેલી. વ્યક્તિગત પરિચય થયો નહોતો પણ ભોળાભાઈનું નામ મારા મન પર ત્યારથી જ છવાયેલું રહ્યું છે. ચંદ્રને રોજ રાત્રે જોઈએ છીએ, પણ નજીકનો પરિચય થતો નથી, છતાં તેની પ્રતિભાનો પરિચય મન પર સતત છવાયેલો રહે છે તેવું જ ભોળાભાઈના પરિચય અંગે મારે હંમેશાં બન્યું છે.

'સર્વ વિદ્યાલય', ગાંધીનગરમાં ઉમા કૉલેજના પ્રિન્સિપાલ તરીકે ૧૯૯૧માં હું આવ્યો તે પહેલાં પાટણની કોટાવાળા આર્ટ્સ કૉલેજમાં હું પ્રોફેસર હતો. મારી સાથે ડૉ. ચંપકભાઈ મોદી પણ હતા. હું પુસ્તક વાચનનો શોખીન છું તે વાતની તેમને ખબર હતી, એક દિવસ તેમણે મને કહ્યું : 'સોમભાઈ, મારું મન ઘણા દિવસથી અશાંત રહે છે. કાંઈ સારું પુસ્તક મને વાંચવા આપો.' તેવામાં ભોળાભાઈનું નવું પ્રવાસપુસ્તક 'વિદિશા' બહાર પડેલું. તે મેં વાંચ્યું હતું અને તેનાથી પ્રભાવિત થયેલો હતો. આ પુસ્તક મેં ચંપકભાઈને વાંચવા આપ્યું. પુસ્તક પૂરું કર્યા પછી પાછું આપતાં બોલ્યા : 'સોમભાઈ, તમારો આભાર, તમે અદ્‌ભુત પુસ્તક મને વાંચવા આપ્યું. પુસ્તક વાંચીને મારું

મન શાંત અને પ્રસન્ન થઈ ગયું છે.' ડૉ. ભોળાભાઈનાં મને મળ્યાં તેટલાં પુસ્તકો હું વાંચી ગયો છું અને તેનાથી તેમની વિદ્વત્ પ્રતિભાની છાપ મારા મન પર અંકિત થઈ ગઈ છે.

ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ, ગુજરાત સાહિત્ય અકાદમી વગેરે અનેક સંસ્થાઓ દ્વારા અવારનવાર યોજાતા કાર્યક્રમોમાં ડૉ. ભોળાભાઈને અનેક વાર સાંભળ્યા છે. તેઓ દિલથી બોલે છે. શબ્દપસંદગી તો તેમની જ. તેમની શૈલી બીજા વક્તાઓથી જુદી જ પડે. નથી બોલવું છતાં બોલવું જ હોય તો શું બોલવું ને કેમ બોલવું તે ભોળાભાઈ પાસેથી શીખવા જેવું છે.

૧૯૯૧માં 'સર્વ વિદ્યાલય' ગાંધીનગરમાં આવ્યા પછી તેમની સાથેનો પરિચય વધતો ગયો. પ્રોફેસરોનાં ઇન્ટરવ્યૂમાં તેઓ વિષય નિષ્ણાત તરીકે આવતા. પ્રશ્નો પૂછવાની અને ઉમેદવારને ન્યાય આપવાની તેમની પદ્ધતિ માન ઉપજાવે તેવી હતી. તેમના પ્રશ્નકાળ દરમિયાન શાંત, સ્વસ્થ અને પ્રસન્ન વાતાવરણ સર્જાતું. અને ઉમેદવારની ખરી ક્ષમતા બહાર આવે તેવી તક તેઓ રચી આપતા.

ડૉ. ભોળાભાઈ 'સર્વ વિદ્યાલય' કડીના ભૂ.પૂર્વ છાત્ર હતા તે વાત અવારનવાર સાંભળવા મળ્યા કરતી. તેમના ગુરુજી શ્રી મોહનલાલ પટેલ હતા. મોહનલાલ વિશે ભોળાભાઈ જ્યારે જ્યારે બોલ્યા છે ત્યારે તેમની વાણીમાંથી હંમેશાં શિષ્યભાવ પ્રગટ્યો છે ને 'સર્વ વિદ્યાલ, કડી વિશે જ્યારે જ્યારે તેઓ બોલ્યા છે ત્યારે 'શાળા અમારી તીર્થભૂમિ' જેવો ભાવ પ્રગટતો મેં જોયો છે. ભોળાભાઈને સર્વ વિદ્યાલયે અને મોહનભાઈએ ચાહ્યા છે તેનો ઋણભાવ હમેશાં તેઓએ વ્યક્ત કર્યો છે.

ડૉ. ભોળાભાઈના વક્તવ્યોમાં શાંતિનિકેતન, રવીન્દ્રનાથ ટાગોર, મહાકવિ કાલિદાસ, મેઘદૂત, શાકુંતલ વગેરેના સંદર્ભો સતત આવ્યા કરે. ભારતીય સંસ્કૃતિ સૌંદર્યબોધ, પ્રસન્નતા વગેરે ઘણુંબધું તેમનાં વક્તવ્યોમાંથી ઝર્યા કરતું હોય છે.

ડૉ. ભોળાભાઈ પ્રાદેશિકતાના સીમાડા વટાવી, રાષ્ટ્રીય અને આંતરરાષ્ટ્રીય સ્તરો સુધી પહોંચ્યા હતા. પરિણામે યોગ્ય રીતે જ ભારત સરકાર તરફથી તેમને પદ્મશ્રીનો પુરસ્કાર મળ્યો. ભોળાભાઈના વ્યક્તિત્વને માન્યતાની મહોર વાગી એમ ગણાય. સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળે તેમના સન્માનનો ભવ્ય કાર્યક્રમ પણ રાખેલો અને પછી તો પોતાના આ ભૂતપૂર્વ તેજસ્વી અને યશસ્વી વિદ્યાર્થીને સંચાલક મંડળે સંસ્થાના પ્રમુખપદની ઑફર કરી. ભોળાભાઈ ના, ના કરતા રહ્યા. બોલ્યા : 'હું તો સંસ્થાનો નમ્ર વિદ્યાર્થી છું. મારે પ્રમુખપદ ન હોય. મને વિદ્યાર્થી જ રહેવા દો.' પરંતુ સંસ્થાએ તેમને પ્રમુખપદ આપ્યું અને તે તેમણે સૌજન્યપૂર્વક શોભાવ્યું.

...આ સાંજ, આ પવન, આ નદી, આ પહાડ, આ અરણ્ય, આ આકાશ, આ નિર્જનતા ધીરે ધીરે તેમાં અંધકાર ભળી ગયો. અરણ્યનો આદિમ અંધકાર.

એ આદિમ અંધકારમાં આ પુરાણાં જંગલો વચ્ચેથી પસાર થતાં પવનનો અવાજ એ આદિમ, એ આવ-જા વધતો ગયો. માનસનો ઘુઘવાટ પણ વધતો ગયો. સમુદ્રના ઘુઘવાટ સાથે એને સરખાવી શકાય.

(રાધે તારા૦ પૃ. ૮૦)

...અને ભોળાભાઈએ એ મહેણું ભાંગ્યું

ગણેશભાઈ કા. પટેલ

આમાર સોનાર સર્વ વિદ્યાલય. અમારી સર્વ વિદ્યાલય સોનાની છે. એના સોનેરી સ્પર્શની તે શી વાત કરવી ? એના સ્પર્શે હજારો વિદ્યાર્થીઓના જીવન બાગ બાગ બની ગયાં.

અપાર વૈવિધ્યોથી ભરેલો આવડો મોટો દેશ અને અનેક અજાયબીઓથી ભરપૂર આવડી મોટી દુનિયા ફરી વળવા માટે, જોવા માટે એક જન્મારો નહીં પણ અનેક જન્મારા (જન્મ)ની જરૂર પડે એવું સ્વપ્ન લઈને જીવેલા ભોળાભાઈનું ગામ કલોલ તાલુકાનું સોજા. બહુ જાણીતા નહીં એવા સોજા ગામમાં એમણે એકડો ઘૂંટ્યો. પિતા શંકરભાઈ શિક્ષક પણ એમનાં માતુશ્રી નિરક્ષર. શિક્ષકપિતાનાં સંતાનો મોટે ભાગે યશસ્વી કારકિર્દી ધરાવતાં હોય છે એવું આ લખનારનું નિરીક્ષણ છે. (જે ખોટું પણ હોઈ શકે) પિતા શંકરભાઈ નાનીમોટી પૌરાણિક વાર્તાઓ-કથાઓ બાળ ભોળાભાઈને કહ્યા કરે. એમનાં બા પણ ધાર્મિક પ્રકૃતિનાં. કોઈનું કહ્યું-કથ્યું નકામું જતું નથી. જમીનમાં દાટેલું બી પાણીનો સ્પર્શ થતાં જમીન ફાડીને બહાર નીકળે છે. વિદ્યાર્થી તરીકે ભોળાભાઈના મનમાં એક વસ્તુનો સળવળાટ થયા કરે : સર્વ વિદ્યાલય એ વખતે અને આજે પણ સૌની જાણીતી અને માનીતી સ્કૂલ. ત્યાં ભણવા મળે તો કેવું સારું ! અને આ નાના ભોળાભાઈ ત્યાંના છાત્રાલય અને શાળામાં દાખલ થયા.

આચાર્ય હતા નાથાભાઈ ના. દેસાઈ. કોઈ પણ યુનિવર્સિટીનું વાઈસ ચાન્સેલર પદ શોભાવે તેવા. (ભોળાભાઈએ એમનાં પ્રવચનો અને લખાણોમાં વખતોવખત આ બાબતનો હરખભેર ઉલ્લેખ કર્યો છે.) વિદ્યાર્થીઓને નામથી ઓળખે-બોલાવે. આ બાબત વિદ્યાર્થીને તમારો કરી દે છે. છાત્રાલય એટલે નિરંતર ચાલતી શાળા. ત્યાં અને શાળામાં કેળવણી અને વ્યક્તિત્વને પોષક એટલી બધી પ્રવૃત્તિઓ ચાલે કે છાત્રો અને વિદ્યાર્થીઓનું ઘડતર પ્રચ્છન્ન રીતે થયા કરે. નાથાભાઈ સાહેબની શાળા વર્ગોમાં કેદ નહોતી. બહાર પણ એ ચાલતી. આ પ્રવૃત્તિઓએ ભોળાભાઈની વૈચારિક યાત્રાને પ્રાણવાન બનાવી.

વળી વર્ગને સ્વર્ગ બનાવે એવા ધુરંધર અને વિદ્યાવ્યાસંગી એવા શિક્ષકો – ગૃહપતિઓ અંબાલાલભાઈ શિ. પટેલ (સ્કોલર ટીચર), સાહિત્યકાર અને પાછળથી આચાર્ય બનેલા મોહનલાલ પટેલ, રામભાઈ પટેલ (ચાંદણકી ગામ), આજના બાળલેખક અને સમર્થ શબ્દકોશ-રચયિતા રતિભાઈ સાં. નાયક તથા અન્ય નિષ્ઠાવાન શિક્ષકોના શિક્ષણ અને ઉમદા ચારિત્ર્યનો રંગ ભોળાભાઈને જબરો લાગ્યો.

ભોળાભાઈનો ખરો ઉઘાડ અહીં સર્વ વિદ્યાલયમાં થયો. એ વખતે મોહનલાલ પટેલ એટીકેટવાળા અને કપડેલત્તે પણ સુઘડ-અસ્ત્રીબંધ પેન્ટ-શર્ટ અને વળી યુવાન. જેને 'મેન ઓફ મેનર્સ' કહીએ તેવા. વળી વાર્તાકાર તરીકે પણ સુખ્યાત. પૂરી શહેરી રીતભાતવાળા. યોગ્ય સમયે પોતાની વાતચીતમાં Please અને થેંક્યું (thank you)

શબ્દનો અવારનવાર ઉપયોગ કરે. વર્ગમાં ગુજરાતી ભણાવતી વખતે જે તે લેખક-કવિના સંદર્ભો અને તેમનાં પુસ્તકોનો ઉલ્લેખ પણ કરે. ઉપર કહી તે 'good manners' અને સાહિત્યની વાતોએ ભોળાભાઈ ઉપર ભૂરકી નાખી. આમેય ભોળાભાઈ ભારે જિજ્ઞાસુ તો હતા. જિજ્ઞાસા એ જ્ઞાનની બારી છે. ભોળાભાઈ ઉપર પેલી 'thank you'વાળી વાત અને અવનવા લેખકો અને એમનાં પુસ્તકોના સંદર્ભોએ ધારી અસર કરી. જીવનની જાણે એક નવી દિશા ખૂલી.

સર્વ વિદ્યાલયની લાઇબ્રેરી સમૃદ્ધ તો હતી જ. મોહનલાલ પટેલ, ર. સાં. નાયક જેવા શિક્ષકોએ એમની જિજ્ઞાસાને ધાર કાઢી. એ અવનવાં પુસ્તકો બતાવતા જાય અને ભોળાભાઈ વાંચતા જાય. એ પુસ્તકોનો કીડો બની ગયા. એ વખતના સમયે સાહિત્યકારોનાં મહત્ત્વનાં પુસ્તકો ધો. ૯-૧૦માં એમણે વાંચી નાખેલાં. હવે આજની વાત કરો. આજે તો ટી.વી. રસ વધતો જાય છે ને પુસ્તકવાચન રસ ઘટતો જાય છે. વિદ્યાર્થીઓ-શિક્ષકોની નબળી અભિવ્યક્તિનું આ મુખ્ય કારણ છે. લોકશાહીમાં પ્રજાકીય સંસ્થાઓમાં અસરકારક પ્રતિનિધિત્વ માટે સબળ લેખિત અને મૌખિક અભિવ્યક્તિ અનિવાર્ય છે. પાર્લામેન્ટમાં ગુજરાતનું નબળું પ્રતિનિધિત્વ એ આનું પરિણામ છે.

ભોળાભાઈએ વિપુલ સાહિત્ય વાંચ્યું અને એ પાછું સતત વાંચ્યું. એમનું વિચાર-વિશ્વ ખૂલતું ગયું અને વિસ્તૃત થતું ગયું. આમ, એક ભાવિ લેખકનું અહીં નિર્માણ થયું. સર્વ વિદ્યાલયમાંથી એ ઘણુંબધું પામ્યા. ત્યાંના ગુરુજનો એમની નિષ્ઠા, એમનું શિક્ષણ, ઉચ્ચ ચારિત્ર્ય, ત્યાંનું ઘર જેવું સ્નેહ-પ્રેમભર્યું વાતાવરણ – આ બધાથી ભોળાભાઈ સૂક્ષ્મ રીતે ઘડાતા ગયા. ઘડતરની પ્રક્રિયા એવી સૂક્ષ્મ હોય છે કે એ ઝટ નજરે ચઢતી નથી. અહીંથી તેઓ વક્તૃત્વકળા અને સુંદર લેખનકળા પણ શીખ્યા. એમની ભાવિ કારકિર્દીનો અહીં પાયો નંખાયો. જ્યાં પણ તક મળી ત્યાં એ બોલ્યા અને લખ્યું : "ઉત્તર ગુજરાતનું કાશી એટલે મારું સર્વ વિદ્યાલય."

ભોળાભાઈને કુદરતે એક બાબતે ન્યાલ કરી દીધા હતા : એ બાબત તે એમની જબરદસ્ત યાદદાસ્ત. 'મેઘદૂત', 'શાકુંતલ'ની પંક્તિઓ મોઢે. પ્રવચન દરમિયાન લલકારે. વળી કવિવર ટાગોર પણ એમના પ્રિય કવિ-લેખક. એક વર્ષ શાંતિનિકેતનમાં 'ફેલો' તરીકે નિમંત્રિત થયેલા. કવિ ઉમાશંકર પણ એમના પ્રિય કવિ અને ગુરુ પણ ખરા. માણસામાં ભણાવતા ગયા અને ભણતા ગયા. ત્યાંથી જ બી.એ. થયા. પણ અધ્યાપક થવાના ઓરતા. એટલે હિન્દી અને અંગ્રેજી સાથે એમ ડબલ M.A. થયા. અજ્ઞેયજી ઉપર Ph.D. પણ કર્યું. ગુજરાત યુનિ.ના ભાષા ભવનમાં એમના હાથે જે ભણ્યા છે તે ભાગ્યશાળી ગણાય. એક ઉત્તમ શિક્ષક અને ઉત્તમ વક્તા. ગળાનો રણકો અને ભણાવવાનો એમના જેવો ઉમળકો આજે તો ક્યાંય જોવતા મળતો નથી. ગુજરાતી સાહિત્ય એ વાતે રળિયાત ગણાય કે એને ભોળાભાઈ અને રઘુવીર ચૌધરી જેવી ગુરુ-શિષ્યની જોડી મળી. ભોળાભાઈ પોતાને ધન્ય સમજતા કે રઘુવીર જેવો વિદ્યાર્થી (માણસા અને અમદાવાદમાં) એમને મળ્યો.

કાકા કાલેલકર પછી પ્રવાસવર્ણનોમાં ભોળાભાઈનો નંબર આવે. ફરવાના, ભમવાના-જોવાના જબરા શોખીન. એક અર્થમાં તેઓ ભ્રમણવીર હતા. ભારે ઘુમક્કડ. આગળ કહ્યું છે તેમ આ બધું જોવા-ફરવા માટે એક જન્મારો

તો ઓછો પડે. બહુ ફર્યા. બહુ જોયું અને વિશ્વપ્રવાસી બની ગયા. આ બધું જોયેલું-જાણેલું પ્રવાસનાં ઉત્તમ પુસ્તકોરૂપે આપણને મળ્યું. તેમની 'વિદિશા', 'દેવોની ઘાટી', પૂર્વોત્તર વાંચો ત્યારે તમે પણ સહપ્રવાસી હો એવો સુખદ અનુભવ થાય. પર્વતો, જંગલો, નદીઓ અને દરિયા ખૂંદી વળ્યા. પાણી જુએ ને નાચી ઊઠે. સમુદ્રસ્નાન કરવાનું છોડે નહીં. કવિ ઉમાશંકર જોશીએ એક સરસ પંક્તિ લખી છે : ''સૌંદર્યો પી, ઉરઝરણ ગાશે આપમેળે'' કવિ કલાપીની પંક્તિ પણ યાદ કરીએ : ''સૌંદર્યો પામતાં પહેલાં સુંદર બનવું પડે.'' આમ ભોળાભાઈએ વિવિધ સ્થળોનાં સૌંદર્યો પીધાં અને એ બધું એમના ઉત્તમ નિબંધસંગ્રહો દ્વારા આપણને મળ્યું. એમનું ઉરઝરણ વહેતું થઈ ગયું. એ ગુજરાતી ભાષાનું ગૌરવગાન આ રીતે કરતા : ''મને મળી માતૃભાષા ગુજરાતી, તેથી થયો હું કંઈક ધન્ય'' (ભૂલચૂક લેવીદેવી)

મને લાગે છે કે આ માણસને ખડખડાટ હસતો કરવાનું કામ એમણે આત્મસાત્ કરેલી પ્રકૃતિ (કુદરત)એ કર્યું છે. તેઓ પ્રકૃતિના મિત્ર હતા. એ એવું ખડખડાટ હસે કે બધું હળવુંફૂલ થઈ જાય. 'હસે તેનું ઘર વસે' એ કહેવત અહીં સાર્થક થતી લાગે છે. આ ખડખડાટ હાસ્ય હવે સાંભળવા નહીં મળે એનું અમને સર્વ વિદ્યાલય પરિવારને અને એમના વાચકો-ભાવકોને ભારે દુઃખ છે. સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળ, કડીના છેલ્લા ૨ વર્ષથી તેઓ પ્રમુખ હતા. આ હાસ્ય તા. ૨૦-૫-૨૦૧૨ના રોજ કાયમ માટે વિલીન થઈ ગયું.

શ્રી મોહનલાલ પટેલ, શ્રી ભોળાભાઈ અને હું 'ધરતી'ના તંત્રીઓ તરીકે ઘનિષ્ઠ રીતે સંકળાયેલા હતા. 'પરબ' નામના સાહિત્યિક માસિકના એમના સંપાદક તરીકેના ૨૦-૨૫ વર્ષના દીર્ઘ અનુભવનો લાભ ધરતીના તંત્રી તરીકે મને મળતો હતો. શ્રી મોહનલાલ અને ભોળાભાઈએ મને લખતો કરી દીધો. એ વખતના અમારા તંત્રીલેખોનું વાચકોને ભારે આકર્ષણ રહેતું.

ભોળાભાઈ ભાષાઓના સંગમતીર્થ જેવા હતા. વિનોબા ભાવે અને સદ્ગત વડાપ્રધાન નરસિંહરાવની જેમ ભોળાભાઈ અનેક ભારતીય અને વિદેશી ભાષાઓના જાણકાર હતા. ઉ. જોષી કહેતા કે એ તો કેવો ગુજરાતી જે હોય કેવળ ગુજરાતી.' આમ ભો. પટેલ કેવળ ગુજરાતી નહોતા. સ્વ. ભોળાભાઈ 'હું ગુર્જર ભારતવાસી' હતા. કેવી રાષ્ટ્રીયતા ! હિંદી, સંસ્કૃત, બંગાળી, મરાઠી, ઉડિયા અને અસમિયા સાથે અંગ્રેજી, જર્મન, ફ્રેન્ચ, સ્પેનીશ જેવી પરદેશી ભાષાઓ પણ સારી રીતે લખે-બોલે. ભોળાભાઈએ પ્રભાવશાળી અને સરસ ગુજરાતી લખીને 'પાટીદારોને લખતાં ન આવડે' એ મહેણું કાયમ માટે ભાંગ્યું છે.

ગુજરાત સાહિત્ય અકાદમીના પૂર્વ ચેરમેન, ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના વર્તમાન પ્રમુખ, અનેક સાહિત્યિક એવૉર્ડ-ચંદ્રક વિજેતા, ઉત્તમ વક્તા, ઉત્તમ શિક્ષક, સમર્થ નિબંધકાર, ઉમદા વિવેચક, અનુવાદક અને પદ્મશ્રી એવૉર્ડ તથા અનેક ભાષાઓના જાણકારે (ભાષાવિદ્) એવા આપણા આ હમસફર ભોળાભાઈને 'અલવિદા' કહેતાં જીવ ચાલતો નથી.

છતાં છેલ્લે એક શેરથી એમને શ્રદ્ધાંજલિ અર્પીને મારી કલમને વિરામ આપું છું :

'જબસે તૂ નહીં હૈ મેરે હમસફર
યહ સફર એક સજા બન ગઈ હૈ.'

'मैं भोलाभाई बोलता हूँ...'

આલોક ગુપ્તા, હિન્દી વિભાગ, ગુજરાત યુનિવર્સિટી, અમદાવાદ

શ્રી ભોળાભાઈ પટેલ સાહેબનો પ્રથમ પરિચય ભાષાભવન, ગુજરાત યુનિવર્સિટીમાં થયો જ્યાં મેં એમ.એ. ભાગ-૨ (૧૯૭૯)માં પ્રવેશ મેળવ્યો હતો. તેઓ 'કામાયની' (જયશંકર પ્રસાદ) અને કવિ અજ્ઞેય ભણાવતા હતા. પ્રથમ સત્ર મહેસાણાથી આવ-જાના કારણે દોડાદોડીમાં ગયું અને પોતાના સંકોચી સ્વભાવના લીધે હું અધ્યાપકોને મળવાનું ટાળતો હતો પણ તે સમયે જ પટેલ સાહેબની કાવ્યપાઠ અને કાવ્યઆસ્વાદની ટેક્નિકથી અભિભૂત હતો. આજે પણ એમની કાવ્યાસ્વાદની અદ્ભુત ક્ષમતા અને વિવિધ સંદર્ભોને આવરી લઈ વિષય કેન્દ્રી વ્યાખ્યાન કળા મારા માટે ચેલેન્જ છે.

ગુરુવર રઘુવીર ચૌધરીએ એમ.ફિલ.માં પ્રવેશ અપાવ્યો અને ખરા અર્થમાં મારો સ્વાધ્યાય શરૂ થયો. ત્યારે પટેલ સાહેબના નિર્દેશનમાં રંજના અરગડે, બિંદુ ભટ્ટ અને મૃદુલા પારીખ પીએચ.ડી. કરતાં હતાં. ભાષા-ભવનના વાતાવરણમાં પટેલ સાહેબનું પ્રસન્ન હાસ્ય પથરાયેલું રહેતું. એમના પીએચ.ડી.ના શોધ-છાત્રોની સક્રિયતા અને સાહિત્યચર્ચા મારા જેવા સંકોચી વિદ્યાર્થીને આકર્ષિત કરતાં. શ્રી ભોળાભાઈ સાહેબ, અને શ્રી રઘુવીર ચૌધરી જેવા વિદ્વાન સર્જક – પ્રાધ્યાપકો પાસે સાહિત્યના પાઠ ભણ્યો તેને પોતાનું સૌભાગ્ય માનું છું. તે સમયે ક્યારેક કનુભાઈની ચાની લારીએ તો ક્યારેક ભાષા ભવનથી ઘરે પરત જતા પટેલસાહેબ સાથે ચર્ચામાં જોડાવાનો અવસર મળતો. તેઓ પણ મને ઓળખવા લાગ્યા હતા. અજ્ઞેયજીના સમકાલીન અને મોટા ગજાના કવિ મુક્તિબોધના કવિતા સંગ્રહ – ''ચાંદ કા મુંહ ટેઢા હૈ' પર હું એમ.ફિલ.માં શોધ કાર્ય કરું છું તે જાણીને મારા પર એમનો વત્સલભાવ વધવા લાગ્યો હતો.

જ્યારે મેં ચૌધરીસાહેબના નિર્દેશનમાં મુક્તિબોધના સમગ્ર સાહિત્ય પર પીએચ.ડી. કરવાનું શરૂ કર્યું ત્યારે પટેલસાહેબ ખૂબ રાજી થયેલા. એમણે ઘણી માહિતી આપી અને પ્રોત્સાહિત કર્યો. 'Poetry itself'નો એમનો આગ્રહ હતો. મુક્તિબોધ જેવા પ્રગતિશીલ વિચારધારાના રચનાકારમાં એ સીધો ખપમાં ન આવ્યો પણ એમના આગ્રહના કારણે મુક્તિબોધની કવિતાઓના સઘન પાઠ કરવાનું શીખ્યો. અને ખબર પડી કે મુક્તિબોધની વિચારધારાથી પ્રેરાઈને કરેલા ઘણા વિદ્વાનોનાં વિધાનો પાયાવિહોણાં છે. શ્રી રઘુવીર ચૌધરીએ મુક્ત આકાશ આપ્યું અને અધ્યયન-અનુશીલનમાં સ્વ-અનુશાસન તરફ વળ્યો, તો ભોળાભાઈ સાહેબે હંમેશ રચનાને કેન્દ્રમાં રાખવાની સલાહ આપી.

પટેલ સાહેબ સાહિત્યના સાચા અધ્યાપક હતા. પાઠક-શ્રોતા એમના ગમા-અણગમા જોઈ શકતા પણ એમની સાહિત્યપ્રીતિને કોઈ અવગણી ન શકે. બીજી ચર્ચાઓ કરતાં કરતાં જો તે સાહિત્ય તરફ વળ્યા એટલે ખલાસ...! એમના સાહિત્ય સાધકનો ઉમદા પરિચય મોટા સાહિત્યરસિક વર્ગને થયો જ છે.

કાલિદાસ અને રવીન્દ્રનાથ એમના શ્વાસમાં વસતા. કોઈ સંદર્ભ આવે કે તરત જ કાલિદાસ

કે રવીન્દ્રનાથની કવિતાનો અસ્ખલિત પ્રવાહ એમના મુખેથી વહેતો થઈ જાય અને શ્રોતાઓ એમાં ખેંચાઈ જાય. 'સંદેશ' અને પછી 'દિવ્ય ભાસ્કર'ની એમની કૉલમ હંમેશ સાહિત્યકેન્દ્રી જ રહી છે. આષાઢ માસના પ્રથમ દિવસે દર વર્ષે અચૂક તેઓ કાલિદાસ અને મેઘદૂતને યાદ કરે પણ દર વર્ષે કંઈ ને કંઈ નવું વર્ણન હોય. એવી રીતે એમના મુખે રવીન્દ્રનાથની કવિતાને બાંગ્લામાં સાંભળનારા સદ્ભાગી ઘણા દેશ છે પણ જીવનાનંદ દાસની 'વનલતા સેન' જો એમના મુખે ના સાંભળી હોય તો જરૂર ચૂકી ગયાનો અફસોસ થશે.

પટેલ સાહેબનું પ્રસન્ન હાસ્ય એક ચુંબક હતું થોડી વારમાં બધાને ખેંચી લેતું. જો એ વધારે મૂડમાં હોય તો કહના હી ક્યા...! એક વાર સૌન્દર્ય અને સૌન્દર્ય દૃષ્ટિની વાત નીકળી. સૌન્દર્ય ઉપાસક ભોળાભાઈ સાહેબે પોતાના બાળપણનો પ્રસંગ કહ્યો. ગામમાં ભવાઈ મંડળી આવી હતી. દર્શકોની પહેલી હરોળમાં તેઓ બેઠા. ભવાઈમાં સ્ત્રીપાત્ર પણ પુરુષ ભજવે. નાયક સ્ત્રી બનેલા, પુરુષ તરફ જોઈ તેના રૂપનાં વખાણ કરતો હતો. પટેલસાહેબ કહે કે 'મેં ધારી-ધારીને એકટક જોયું કે નાયક જે રૂપનાં વખાણ કરે છે તે આ પાત્રમાં ક્યાં છે.' પછી એમનું અટ્ટહાસ્ય આજે પણ સ્મરણમાં છે. મને લાગે છે કે એમની સૌન્દર્યદૃષ્ટિને કાલિદાસ અને રવીન્દ્રનાથે સંસ્કારિત અને પુષ્ટ કરી છે જે એમનામાં સુષુપ્ત પડી જ હતી.

પટેલ સાહેબ પોતાનો અણગમો (આંગિક અને શાબ્દિક) ગોષ્ઠિઓમાં નિઃસંકોચ પ્રકટ કરતા રહ્યા છે. સરદાર પટેલ યુનિવર્સિટીના હિન્દી વિભાગમાં ૧૯૮૦-૮૧ની આસપાસ પ્રેમચંદ પર રાષ્ટ્રીય ગોષ્ઠીનું આયોજન આદરણીય શિવકુમાર મિશ્રે કર્યું હતું. ભારતભરના પ્રસિદ્ધ હિન્દી વિદ્વાનો ત્યાં હતા. પ્રથમ દિવસે ચર્ચામાં પ્રેમચંદને માર્ક્સવાદી તરીકે મૂલવવામાં આવ્યા. શ્રી ભોળાભાઈએ પોતાના વક્તવ્યમાં આનો વિરોધ કર્યો અને કહ્યું કે 'હું કિસાનનો દીકરો છું, બુર્જુઆ પણ ખરો. હું ચોક્કસપણે માનું છું કે પ્રેમચંદના કિસાન અને ગ્રામજીવનનાં ચિત્રણ વાસ્તવવાદી છે. તેને જો માર્ક્સવાદના બીબામાં ફિટ કરીશું તો એમનું કદ વેતરાઈ જશે. પછી તો એમણે પ્રેમચંદ, તારાશંકર બંદ્યોપાધ્યાય અને પન્નાલાલ પટેલ પર તુલનાત્મક અભ્યાસ કરી પુસ્તક આપ્યું – 'ભારતીય ઉપન્યાસ પરંપરા ઔર ગ્રામ કેન્દ્રી ઉપન્યાસ'

પટેલ સાહેબના પુસ્તકપ્રેમથી બધા પરિચિત છે. પોતાનું પુસ્તક પ્રકાશિત થયું હોય તો મારા જેવા વિદ્યાર્થીને પણ ભેટ આપે. ખરીદવા ન દે. 'અજ્ઞેય : એક અધ્યયન', વિદિશા, દેવોની ઘાટી, બોલે ઝીણા મોર, જેવાં ઘણાં પુસ્તકો એમના દ્વારા મળ્યાં છે. 'ભારતીય ઉપન્યાસ કી પરંપરા અને ગ્રામકેન્દ્રી ઉપન્યાસ' પર મેં 'પરબ'માં લખ્યું ત્યારે એમણે પોતાનાં રાજીપો વ્યક્ત કર્યો – 'બીજા ઘણા શિષ્ય છે જેમણે લખવું જોઈતું હતું, પણ તમે લખ્યું, બીજા વાતો જ કરતા રહ્યા.'

પ્રવાસવર્ણનમાં સાહેબની સૌન્દર્યદૃષ્ટિને પૂરતો અવકાશ મળ્યો છે. અમારા જેવા પાઠકોને સૌન્દર્યદૃષ્ટિની સાથે તથ્યોની ચોકસાઈ વધારે આકર્ષે છે. નિબંધોની વર્ણનછટા, વર્ણન કરતાં કરતાં આખો પરિવેશ જીવંત થઈ જાય છે. 'વિદિશા' અને 'દેવોની ઘાટી' વાચનાર મારી સાથે સંમત થશે. સન્ ૨૦૦૮માં બાંદા જવાનું હતું ત્યાંથી ખજુરાહો નજીક હતું. પટેલસાહેબના 'ખજુરાહો' પ્રવાસ વર્ણન ફરી વાંચી ગયો અને ખજુરાહો જવાનું નક્કી કર્યું સાથે પત્ની મિથિલેશ, પ્રા. હસમુખ બારોટ, ઈશ્વરસિંહ ચૌહાન અને અખ્તરખાન પઠાણ વિદ્યાર્થી-મિત્રો પણ હતા. બધાએ ત્યાં પટેલસાહેબને યાદ કર્યા. એવી જ રીતે સિક્કિમ પ્રવાસમાં મને સમજાયું કે સાહેબે કાંચનજંઘા અર્થાત્ 'ગુડલક' શીર્ષક કેમ પસંદ કર્યું હતું. તેઓ વાદળોના કારણે સૂર્યોદય સમયે

કાંચનજંઘાનું સૌન્દર્ય જોવાનું ચૂકી ગયા હતા. અમે ટાઈગરહિલ પર સવારના પાંચ વાગે પહોંચ્યા ત્યારે સ્પોટ પર ઘણી જગ્યા હતી. અમે સારી જગ્યાએ ગોઠવાઈ ગયા. પૂર્વ દિશા અને સામેની કાંચનજંઘાનાં દશ્યો જોઈ શકાય. થોડીક વારમાં તો આખું સ્પોટ ભરચક થઈ ગયું. સારી જગ્યા માટે ઝઘડા અને પડાપડી શરૂ થઈ. ધીરે ધીરે પૂર્વ દિશાનો રંગ બદલાવા લાગ્યો. પહેલું કિરણ કાંચનજંઘાની એક ટેકરી પર પડ્યું તે બરફઆચ્છાદિત સફેદ ટેકરી સ્વર્ણિમ થઈ ગઈ. આવું કૌતુક ક્યારેય જોયું ન હતું. પછી ગર્દનના દર્દની ચિંતા કર્યા વિના પૂર્વ અને પશ્ચિમ દિશામાં નિરંતર જોયા કર્યું. કેમરા કે વીડિયોમાં શીઘ્ર બદલાતાં દશ્યો કેદ કરવાં શક્ય ન હતાં. માત્ર થોડાંક દશ્યોના ફોટોથી મન મનાવ્યું. સાતેક મિનિટમાં તો આખી કાંચનજંઘા સ્વર્ણિમ થઈ ગઈ. જો 'કાંચનજંઘા' અર્થાત્ 'ગુડલક' પ્રવાસવર્ણન ન વાંચ્યું હોત તો સવારે ચાર વાગે સૂસવાતા ઠંડા પવનમાં જવાનું ટાળ્યું હોત.

ગાંધીનગર રહેવાને કારણે પટેલ સાહેબને મળવાનું ઓછું બનતું. કોઈ ગોષ્ઠી કે કાર્યક્રમમાં ઔપચારિક વાત થતી. પણ એક-બે મહિને યુનિવર્સિટીથી ઘરે જતાં હું એમને મળવા જરૂર જતો. સાહેબ પોતાનું કામ છોડી દે. વાતોમાં કામની ચિંતાનો અણસાર પણ ન આવે. એમની સાથે વાતોમાં હંમેશ લાગ્યું કે એમનો સાહિત્યપ્રેમ એકાન્તિક નથી. વાતોમાં ઘર, પરિવાર, સમાજ, સંસ્કૃતિની ચર્ચા થાય. ક્યારેક રાજનીતિ પર વાતો કરે. વચ્ચે ફોઈનો ફોન આવે તો નિરાંતે વાત કરી, ફરી ચર્ચાનો દોર આગળ ચાલે. ચૌધરી સાહેબનો પણ એવો જ સ્વભાવ છે. ફર્ક એટલો છે કે એ નિરાંતે વાતો કરે પણ ક્યારેક આપણને સમયનો ભાર રહે. પટેલ સાહેબ અને ચૌધરી સાહેબ વચ્ચેની ચર્ચાઓ વધારે રસપ્રદ હોય છે. હું તો ત્યારે મૂક શ્રોતા જ હોઉં. ક્યારેક કોઈ મુદ્દા પર તેઓ સંમત ન હોય પણ સંબંધોની ઉષ્મા ક્યારેય ઓછી નથી થઈ. સાહિત્ય જગતમાં એમની મૈત્રી દાખલારૂપ છે. ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના જામનગર અધિવેશનના એક પ્રસંગનું સ્મરણ આવે છે. સવારે ચા પીને થોડાક સાહિત્યકાર વાતો કરતા હતા. ત્યાં બાજુના રૂમમાં ચૌધરી સાહેબ કશુંક લખતા દેખાયા. કોઈએ કહ્યું કે કૉલમ માટે લેખ લખતા હશે. પટેલ સાહેબે કોમેન્ટ કરી – 'કેટલાક માણસો એક ભવમાં બે-ત્રણ ભવનાં કામ કરવા ઇચ્છે છે.' બધાના મુખ પર સ્મિત આવી ગયું. આ ઉપાલંભમાં પણ મૈત્રીભાવ છલકાતો હતો.

સાત-આઠ વર્ષ પહેલાંની વાત છે. એક સાંજે મારા ફોનની ઘંટડી રણકી. મેં ફોન ઉપાડ્યો. સામેથી અવાજ આવ્યો – મૈં ભોલાભાઈ બોલતા હૂઁ...! મેં કહ્યું 'સર...!' મને ખૂબ આશ્ચર્ય અને આનંદ થયો. આ એમનો પહેલો ફોન હતો. પછી તો 'ગુર્જર ભારતી' અને 'વાચિકમ્'ના સંદર્ભે એમના ફોન આવતા રહ્યા. પણ પહેલી વાર કરેલા ફોનનો મને આજે પણ રોમાંચ છે. ક્યારેક હું ના હોઉં તો મિથિલેશ જોડે વાતો કરે, બાળકોના સમાચાર પૂછે. પાર્થને સ્પેનમાં Ph.D.ની સ્કોલરશિપ મળી છે તે જાણીને તેઓ ખૂબ રાજી થયા.

ત્રણ વર્ષ પહેલાં સાહેબ બીમાર થયા. એમનો વિશ્વાસ ડગી ગયો હતો. બધા સ્વજનો ચિંતિત હતા. પણ ધીરે ધીરે સાહેબ કાર્યક્રમોમાં આવતા થયા. ક્યારે ખુરસી પર બેસી વ્યાખ્યાન ન આપવા ટેવાયેલા પટેલ સાહેબને બેસીને બોલવું પડતું. આ સ્થિતિના કારણે તેઓ યાત્રા કરવાનું પણ ટાળતા. ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના પ્રમુખ નિમાયા, ત્યારે અમે બધા ખૂબ ખુશ હતા. બે વર્ષ સુધી એમની દૃષ્ટિનો સીધો લાભ પરિષદને મળશે. પણ તેઓ અચાનક હાથતાળી આપીને જતા રહ્યા! 'મૈં ભોલાભાઈ બોલતા હૂઁ' અવાજ હવે ક્યારેય સાંભળવા નહિ મળે!

ભારે કરી... ભોળીદા !

પ્રિ. ઊજમભાઈ પટેલ

એમ. બી. પટેલ રાષ્ટ્રભાષા આર્ટ્સ એન્ડ કોમર્સ કૉલેજ, એલિસબ્રિજ, અમદાવાદ

રોંમ રોંમ ભોળીદા ! તમે તો ભારે કરી. ઘરનોંને નં બધોંનેં જબરા શેતર્યા તમે તો ! હાસ્તો વળી, શેતર્યા જ નં ? તમનં ગમે કે ના ગમે, પણ હાચું તો કેવું જ પડે નં ? તમે કર્યું જ સે એવું તે ! એ દન (રવિવાર ને વૈશાખ વદ અમાસ) હવારે તમનં જે થોડીક ગભરોંમણ જેવું થ્યું અનં ભઈ મધુ, આનંદ નં બકુલ તરત દવાખોંને લઈ જ્યા તમનં, તે ઈંમનેંય એમ ક બાપાનેં દાક્તરની સારવાર કરઈનં આ પાસા આયા હમણોં બસ ! પણ, ઈંયોં જઈને તો દાક્તરોય ગભરઈ જ્યા, ઈંમ હાવ અચોનક તમે તો જોંણં વચાર ફેરવ્યો ભોળીદા ! અનં એ વેળા આ તૈણ ભઈઓ, દાક્તરો નં પોંહેનોં-શેટેનોં હઉને બિલકુલ અંધારામાં રાશીનં તમે તો મોટા ગોંમતરાનં વાલું કર્યું. ભલં, જે તમનં ઠીક લાજ્યું, એ ! પણ, આવી શેતરોમણી ? અનં એય તમે ઉઠીને ભલા'દમી ?!

વાત બધીય હાચી કે તમે પાસલાં પોંચ-હાત વરહોંથી મોંદા રેતા'તા એનીય ના નઈં. પણ દાક્તરની સારવાર, દવા-ચાકરી, ઘરનોં બધોંની દેખભાળ, ઊઠવું-બેહવું, ખાવું-પીવું, મોંણહોંની અવર-જવર, તમારું રોજનું વોંચવું-લખવું; અનં મૂળે તમે તો મોંણહ-ભૂસ્યા એટલે આવનારોંનીં હાથં વાતચીત, ટેલિફોન ઉપર લોંબી લોંબી વાતો, એય મોકળા મને ખડખડાટ અહવું... આ બધું જ તમારે તો રૂપાળું ચાલતું જ તું નં ?! હૌ હારોં વોંનોં હતાં ભલા'દમી ! કોઈ નં કોઈ બોંના શર ચેટલા ય માંણહ તમનં મળવા આવતા રે'તા, નં તમે ઈંમની હારે વાતોમોં જબરા ખીલી ઊઠતા; નેં આવનારું ખુશખુશાલ નં ઢાઢક લેઈનં તમારી પોંહેથી જતું ! ઓંમ હમણોં પોંચ-હાત મહિનોંથી તો તમારું તબિયત રૂપાળું હારું ચાલતું જ તું નં વળી ?! એમ તો બે વરહોં પેલોં સિવિલમોં યુ.એન. મેતા વાળા મોટા દવાખોંને તમનં દાખલ કરેલા, તાણં એ છો-હાત દન દાક્તરોય જોંણેં આશા મેલી દીધેલી; એ બચ્ચારા ફોડ પાડીનં ન'તા કઈ હકતા. પણ શરવાળે હઉના જીવ અધેંર થઈ જ્યા'તા ! ક હવે ભોળીદા હઉનં શેલ્લી વારના રોંમ રોંમ કરીનં મોટી વાટ પકડશીં ! પણ, કોંનની બુટ ભોળીદા ! કે'વું પડશે કે એ વખતે તમે મોતનં હડશેલો મારીનં, જોંણં બધોંનું મન રાખવા બધોંની પોંહે પાસા આયેલા. ઉપરવાળાએ જોંણં ચમત્કાર કરી દીધેલો, એવું જ મોંનવું પડે ! અનં હમણોં હુધી તો બધું બરાબર હરખું નં ટેમસર ચાલતું'તું જ ન વળી ? આ જુઓ નં હમણોં થોડા દન પેલોં તમારા વાલા કવિ રવીન્દરનાથની દોડહોમીં જનમજેન્તી ટોંણેં અમદાવાદમોં એની ઉજવણીના પ્રોગ્રોમમોં એ પોંચ-છો દન હોંમટા રોજ બધોંનં રૂપાળાં ભાશણો આલ્યોં નં હોંભળનારોં હઉને રાજી કર્યોં નં પોતેય રાજી રાજી ! ઘણોંનં એવું કેતોંય હોંભળ્યા ક રવીન્દરનાથની વાત કરવામોં તો ભોળાભઈ ફાગણ મહિનાના કેસૂડાની જ્યમ જબરા ખીલં સં ! પણ, આ વખતે તો જોંણં એ છેલ્લી વારનું ખીલવાનું હશે એમ જ નં ?! અનં દનિયોં જોંણેં સ, ઈંમ અમેય હમજીએ સીએ ક 'નોંમ ઈનો નાશ' નં "આ પરથમી પર અવતર્યું એ હઉને એક દન જવાનું !" એ બધુંય હાચું, એની ચ્યોં ના સ ? પણ, આવી રીતના ? અમને હઉનં ઓંચકો નં વોંધો જ એ વાતનો સ કે ઓંમ અંધારામોં રાશીનં હઉને, નેંહરી

જવાનું ! અનં બીજી વાત, વોંધો લેઈનેય તે અમે હઉ હું કરી લેવાનાં ? ફગત વલોપાત નં રોવા-રતળવા શવાય ! જતે દાડે હારોં વોંનોં થાહં, પણ ઓંમ એકદમ તમારી 'હાજરી ઉઠી જવા'નો ખાલીપો થોડો ભરાહે ભલા'દમી ?!

એય કે'વું પડશે ભોળીદા કે લોક તમારા જીવતરનો દાખલો લ્યે, એવું તમે જીવ્યા; અનં એય વળી જુદી જુદી વહમી કઠણઈઓમોં અહતા મોંઢે ! હઉ જોંણે કે ભોંગી પડે એ ભોળાભૈ નંઈ ! અનં આ બધામોં ચેટ-ચેટલોં નં ચેવોં તો કોંમ કર્યોં ? હમજો ન કે મેટ્રિક પાસ કરીનં પસં અંગરેજી નેંહાળ (હાઈસ્કૂલ)થી મોંડીનં શેક કોલેજ અનં એનાથી ઉપર યુનિવરસિટી; ચાળી વરહોં હુધી નોંનાથી મોંડી મોટા વિદ્યાર્થીઓનં ભણાયું. અનં એય ભણતોં-ભણતોં ભણાયું નં ભણાવતોં-ભણાવતોં ભણ્યા ! અનં વિદ્યાર્થીઓય હારા મળ્યા. ખબર સે ? મોંણસાની અંગરેજી નેંહાળમોં ઈંમના પેલ્લા વિદ્યાર્થી, એ રઘુવીર (ચૌધરી). ભગવોંને એવો તે જોગ અનં મેળાપ રચ્યો, તે આ દન હુધી, ભણતરના કોઈ પણ કોંમમોં બેય જણા હારેં નં હારે ! આટલોં વરહોં ભણાયું તો ખરું જ, પણ ઉંમરનોં વરહોંથી ય વધારે પુસ્તકો લસ્યાં. અનં એય આપણી ગુજરાતી ભાષામાં તો ખરોં જ, પણ એની વતરેક (ઉપરાંત) બીજી પણ તૈણ-ચાર ભાષાઓમાં લસ્યું. ફકત આપણા ગુજરાતમોં જ નંઈ, પણ આખાયે દેશમોં ઈંયોની લશેલી ચોપડીયો ખૂબ વખણઈ. અનં એની હાથં, એમોંની ચેટલીક ઘણી હારી ચોપડીઓ લખવાના નોંમે ઘણોં બધોં ઈનોંમ અને ચંદ્રકો ય મળ્યા. હમણોં ત્રણ-ચાર વરહોં પેલોં જ તો આપણા દેશનોં રાષ્ટ્રપતિએ ઈંમનં 'પદમશરી' ય બનાયા ! ભણવા-ભણાવવા અનં લખવા-લખાવવાનું કોંમ કરતી ઘણી બધી સંસ્થાઓના ઊંચા હોદ્દોંની જવાબદારી હંભાળીનેં લોક હંભારં એવોં ઘણોં બધોં હારોં કોંમ કર્યોં. અનં લોક કોંઈ એમ થોડું કોઈને હંભારે લ્યા ભઈ ?! અનં જોગ-સંજોગની એક વાત આ ય ચેવી ક ઉમાશંકર, નગીનદાસ, ભાયાણીસાહેબ, નિરંજનભાઈ નં ઈંમના જેવા બીજા ઘણોંયે તમનં બરાબર જોંણી-પારશીનં તમારી પોંહેથી હારોં હારોં કોંમ લેઈનં તમોંનં લોકમાં હાચા અરથમાં ઊજળા કર્યા. અનં હોંમે તમેયતે આ બધોં કોંમમોં ચ્યોં પાસા પડ્યા તે ?! અનં વળી, તમનેં ય એ વાતની ચ્યોં ખબર નથી કે હાચે હાચમાં લોક નોંમનં નૈ, કોંમની કદર કરે સે ! અનં એ તમે બરાબરનું કરી બતાયું ! એટલે જ તો એ દન તમે ઓંમ (હાવ અચોનક) બધોંનં શેતરીનં મોટા ગોંમતરે નેંહરી પડ્યા, તે લોકને ચેટલો તો ધ્રાસકો પડ્યો, નં ચેટલું તો દુખી થયું લોક ભલા'દમી ?! અનં ઓંમેં, અમે બધોં તો તમનં હું કેઈ હકવાનાં ? અનં અમારું ગજુંય શું કેવાનું ?! એ તો જેવું તમનં અનં 'તમારા ઉપરવાળા'નં ગમ્યું એ ખરું. અનં પસેં તો અમારે હઉ-બધોંનં દુખી થઈને ય તે આ વાતને માથે ચડાવવાની જ નં ?! બીજો શો ઉપાય ?!

અનં હા, બીજી એક વાત ભોળીદા ! ખરું કર્યું તમે – ચેવો તો જોગ મેળવ્યો કે જે દન તમે (ભોંયલા) મનોમન 'બધું' પાક્કું જ કરી દીધેલું ! બરાબર એને જ દન 'અમનં પોંચેય' જણોંનં ભેળોં નોંમ જોગ 'અજ્ઞેય પોતપોતાના'વાળો ચેવો તો કાગળ લસ્યો, અનં એય સાપા (દિવ્યભાસ્કર / તા. ૨૦મે, ૨૦૧૨)માં ખુલ્લો, હઉ વોંચે એ હાટુ ! અનં આપણા બધોંના ગમતા 'અજ્ઞેય'ની એમોં કેટલીક વાતોય કરી, અનં એની હાથેં અમનં પોંચેયને 'લેસન' આલ્યું, તમારી ટેવ પરમોંણે ! અનં પોતે 'વાટ' પકડી. આ તે ચેવું ભલા'દમી ?! પણ, તેમ સતોં એ કોંમેય અમે કરશું. અમારી હમજણ અનં ગજા પરમોંણે ! પણ, તમે એ ચ્યોં નથં જોંણતા ક અમે તમારી (મેઠી ક આકરી) ઉઘરોંણી વના કોંમનો ઝટ ચ્યોં પાર મેલીએ સીએ ?! હવ, અમનં ઉતોર આલો ક અમારા કોંમની ઉઘરોંણી કરવાની નં એ 'લેસન' નં તપાહવાનું કોંમ તો તમારા વના

બીજું કુંણ કરવાનું ?! એની કોંય વેવસ્થા ક વચાર કરેલો તમે એ કાગળ લખતી વેળા ભોળીદા ?! ના, બિલકુલ ના ! નં, બસ હેંડી નેંહર્યા બધીય માયા હંકેલીનં, કોઈ હમજે ના ઈમ ! અનં એય હવાર-હવારના દાડા દીવે ! ભારે વહમું કર્યું તમે તો ?! ઘરનાં હઉ, અમે બધોં નં લોક બધું જોંણીનં હેબતઈ જ્યું નં રોતું જ રઈ જ્યું. નં લોકેય તે ચેટલું આયું ?! પાર વગરનું. જેણે-જેણે હાંભળ્યું, એ હઉ દોડી આયું, ભારે હીયે. અનં કોઈનં કોંય હુજ ના પડે એવું કર્યું ભોળીદા તમે તો ! એય નં હવ 'વૈકુંઠ' માલજો તમ તારે, અનં તમારો આતમો કે તાણં અમારોં હઉની હોજ-ખબરે ય લેજો સપનોંમોં આઈનં ! ઉઘરોંણીય કરજો નં અમારું હઉનું લેસને ય તપાહજો ! લ્યો તાણં રોંમ રોંમ ભોળીદા !

લિ. આ લોકનાં અમે હઉ તમારાં.

हमारे गुरुदेव : डॉ. भोलाभाई पटेल

डॉ. बिन्दु भट्ट, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, उमा आर्ट्स एण्ड नाथीबा कोमर्स
महिला कॉलेज, गांधीनगर

सन् २०१२की २० मई ऐसी आई कि हंमेशां के लिए हमारी गुरुपूर्णिमा को छिन ले गई। इस रोज गुजराती भाषा के मूर्धन्य साहित्यकार, हिन्दी भाषा के वरिष्ठ विद्वान अध्यापक, विश्वसाहित्य के मर्मज्ञ, अनन्य भाषा प्रेमी, पुरस्कृत अनुवादक और भारतीय संस्कृति के संदेशवाहक ऐसे पद्मश्री डॉ. भोलाभाई पटेलने चिर विदा ली।

पिछले छत्तीस साल की स्मृतियाँ मानस पटल पर छा रही है। हरिवंशराय 'बच्चन' ने अपनी आत्मकथा के पहले खण्ड को शीर्षक दिया है 'क्या भूलूँ क्या याद करुँ'। कुछ कुछ वैसी ही स्थिति है इस समय मन की। ऐसा नहीं है कि आज से पहले 'सर' के बारे में बात नहीं की है। अभी अभी साहित्य अकादमी दिल्ली ने उन्हें 'महत्तर सदस्यता' (फेलोशीप) प्रदान की, उस समय लगभग चालीस मिनट तक मैंने उनके विषय में वक्तव्य दिया था। 'सर' सभाखंड में प्रथम पंक्ति में बैठे बैठे आश्चर्य और आनंद से सुन रहे थे। वे क्षण मेरे जीवन के परम धन्यता के क्षण थे। आज 'सर' नहीं है और उनके बारे में बात करनी है। बड़े भारी मन से एक नज़र डालती हूँ बीते समय पर :

भाषाभवन के कमरा नंबर चार के स्टेज पर खड़े हैं मिस्टर बी. एस. पी.। नोटिस बोर्ड में जनरल टाइमटेबल पर यही नाम दर्ज है उनका। गहरा मस्टर्ड यलो आधी बाँह का शर्ट, काली पेन्ट, पैर में बाटा की चप्पलें। माथे की दायीं तरफ बार-बार सरक आती बालों की बंकिम लट जिसे कभी-कभी तर्जनी और अंगूठे से पकड़ी चॉक स्टीक से हटाया जा रहा है। बोर्ड पर लिखा है अज्ञेय के उपन्यास 'नदी के द्वीप' का नाम। ठीक उसके नीचे कुछ रेखाएँ खिंची जा रही है और कहा जा रहा है, 'उपन्यास की संरचना भी किसी भवन के स्थापत्य जैसी होती है। देखिए, यहाँ मुख्य चरित्रों के नाम से विभाजित प्रकरणों को बीच-बीच में 'अंतराल' शीर्षक से जोड़ा गया है।'

सामने पहली बैंच के छोर पर बैठी मेरे मन में एक चित्र बन रहा है, ईमारत के अलग-अलग कमरों को जोड़ते गलियारे ही तो थे ये अंतराल। पहली बार पता चल रहा है कि उपन्यास की आलोचना अर्थात् कथा-सार नहीं और न ही छ: तत्त्वों का बंधा-बंधाया ढाँचा ! अनजाने ही उपन्यास-रचना का गुरुमंत्र भी मिल रहा था 'गुरुदेव' से।

ढाँचा तोड़ते 'गुरुदेव' एक दिन पकड़ा देते हैं सबको कोरा कागज़। 'लिखो जो जी में आए, पर लिखो।' क्या वे हमारी साहित्यरुचि और लेखनशक्ति को नहीं परख रहे थे ? हमेशा कहते रहे, 'लिखो, लिखते रहो, राह मत देखो, खुद चलकर जाओ, मिलेगा शब्द। साफ कागज़ का सामना ही देता है वह साहस कि हम सब से ही नहीं स्वयं से भी रु-बरु हो सके।

दिसम्बर का महिना आया और पता ही नहीं चला कि कब मिस्टर बी.एस.पी 'सर' बन गए। आपका आदेश मिला, 'जाओ प्रवीण जोशी आइएनटी के नाटक लेकर बम्बई से आए हैं। 'खेलंदो' देखो।' यह हमारी पाठ्यपुस्तक 'आधे अधूरे' का पूरक पाठ्यक्रम था। आधुनिक नाटक क्या है ? मंच क्या है ? छपे शब्दों को 'नाटक' में बदलते देखना एक साक्षात्कार से कम नहीं था।

नाटक देखा और नतीजा यह कि एम.ए. पार्ट-२ में विभागाध्यक्ष डॉ. नागरजी से जिद करके मैंने 'आज के रंग नाटक' विषय पर 'सर' के मार्गदर्शन में लघु शोधप्रबंध लिखा। लेकिन एक बात थी। 'सर' और नागरजी अपनी भिन्न साहित्य रुचियों और जीवन दृष्टि के साथ हमेशा एक दूसरे की असम्मतियों का सम्मान करते थे। हम छात्रों पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ने देते थे। काश हमारे गुरुजनों की ऐसी वैचारिक उदारता की परंपरा हम आगे बढ़ा पाते।

'सर' की कक्षाएँ विश्व साहित्य की कक्षाएँ होती थीं। दिनकर की 'उर्वशी' को कालिदास - रवीन्द्रनाथ की 'उर्वशी' से जोड़ते हुए वे रिल्के की 'विनस' को भी हम तक ले आते थे। एक कविता पढ़ाते-पढ़ाते सारे काव्य-संसार को खोलने की 'मास्टर की' थमा देते थे।

आज भी कई बार 'कामायनी' पढ़ाते समय अपने मुख से मैं 'सर' की आवाज़ सुनने लगती हूँ... 'देखो सिंधु सेज पर धरा वधू अब तनिक संकुचित बैठी सी...'महाकाव्य' की एक पहचान है ये विराट बिम्ब।

'सर' से पाश्चात्य काव्यशास्त्र पढ़ना मेरे जीवन का अ-मूल्य अवसर है। होमर के 'इलियड' और सोफोक्लीस के एगेम्नोन की कथाओं के साथ प्लेटो के काव्यसिद्धांत जुगलबंदी करते। मूल अंग्रेजी सामग्री देखने की उनकी प्रेरणा आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है। इसलिए टी. एस. इलियट और अज्ञेयका सामना उन्हीं के कारण संभव हो सका।

'मैं चाहता हूँ मेरे छात्र कहीं भी जाएँ, सफल हो कर आएँ।' छात्र-छात्रा में कोई भेद नहीं। सबको बराबर काम में जुटना है। परिसंवाद का आयोजन, अतिथियों के आवास-भोजन की व्यवस्था, वक्तव्य की तैयारी, अनुवाद की कार्यशाला, एम.ए. की कक्षामें अध्यापन या एम.ए. एम.फील के लघु शोधप्रबंध का मार्गदर्शन, हिचकिचाओं मत, सर हैं। पीएच.डी. के पाँच साल हमें चाक पर चढ़ाया गया था, हमें जीवन के आँवें के लिए तैयार किया जा रहा था।

पिछले चार महिने से जूनियर रिसर्च फेलोशीप की रकम नहीं आई है। 'सर' का आदेश है, रोज दोपहर की चाय उनकी ओर से। कभी भवन के अलावा चाय की किटली पर 'सर' के साथ होती है साहित्य गोष्ठी। केवल अपने विषय तक सीमित नहीं रहना है। साथी मित्रों के शोध-कार्य से भी अवगत रहना है। कुछ नये काव्य-संग्रह आए हैं। सब को बाँट दिये गए हैं कवि। संग्रह पढ़कर सब के बीच प्रस्तुत करना है अपना अवलोकन। हम सब पढ़ रहे थे, 'सर' हमें गढ़ रहे थे।

पीएच.डी. की मौखिकी है। परीक्षक के साथ-साथ पूरी छात्रमंडली का आतिथ्य कर रहा है 'सर' और उनका परिवार। उस दिन शकरीमासी खास मिठाई बनाती है हमारे लिए। उनके लिए बड़ा शुभ दिन है, आज एक छात्र उत्तीर्ण हो रहा है, कितना कुछ देते रहे हैं 'सर' अपने छात्रों को। अपना ज्ञान, अपना समय, अपना आशीर्वाद और उनसे असहमत होने का स्वातंत्र्य। आपने कभी किसी छात्र के निजी जीवन में बेवजह दखल नहीं दिया। स्वतंत्रता देकर स्वतंत्रता देना सिखाया। बदले में छात्र से माँगी है केवल अध्ययन निष्ठा।

आज 'सर' नहीं रहे। पर स्वाध्याय, सहजता और सहृदयता की अ-विनाशी परंपरा छोड़ गए हैं। परमात्मा से यही प्रार्थना है कि हमारे 'गुरुदेव' की इस परंपरा को जीवित रखने की हमें शक्ति दे।

तब गुरु मिलिया आइ

डॉ. मृदुला पारीक

जुलाई १९७५ गुजरात विश्वविद्यालय के भाषासाहित्य भवन में एम.ए. हिन्दी में प्रवेश लिया। हालाँकि प्रथम प्रीति तो संस्कृत से थी। इंटर मीजिएट में 'स्वप्नवासवदत्तम्' पढ़ते समय ही तयकर लिया था कि संस्कृत में एम.ए. करके महाकवि भास पर शोध-कार्य करुँगी। मगर बी.ए. करते ही अहमदाबाद आना पड़ा और गुजराती माध्यम में संस्कृत पढ़ने-समझने की क्षमता के अभाव में विवश होकर हिन्दी विषय लेना पड़ा। मगर यह विवशता ही मेरे लिए वरदान सिद्ध हो गई, क्योंकि हिन्दी से ही मुझे 'सर' मिले। आज जब पीछे मुड़कर देखती हूँ तो सर के सांनिध्य में बीताए ३७ वर्षो की ढेर सारी स्मृतियाँ, ढेर सारे अहसास, अनेकों स्वर्णिम् क्षण एक साथ मानसपटल पर उभरने लगते हैं और फिर एक-दूसरे में गड्ड-मड्ड हो जाते हैं।

भाषा भवन के दूसरे तल्ले का टी-क्लब के पासवाला कमरा। टाइम टेबल के मुताबिक प्रो. बी. एस. पटेल पहला पीरियड लेनेवाले थे। पहले ही दिन से प्रो. बी. एस. पटेल 'पटेलसर' हो गए और कुछ दिनों बाद तो केवल 'सर'। शुरुआत परिचय से हुई। जब मेरी बारी आई तो मैंने अपने उज्जैन के कॉलेज का नाम बताया। एक खास मुद्रा में सर की आँखें कुछ छोटी हुई और उनमें चमक की एक रेखा कौंध गई। निश्चित ही यह कौंध अपने सर्वाधिक प्रिय कवि कालिदास की नगरी का नाम सुनकर आई थी। उस दिन सर ने हमे सूरदास पढाए। बीच-बीच में सर हम से सूर की पंक्तियों और प्रश्न पूछते जाते। प्रथम साक्षात्कार से ही मैंने पाया कि सर प्रत्येक विद्यार्थी के साथ बड़ी ही आत्मीयता से बात कर रहे हैं, अंतिम बेंच पर बैठे छात्र पर भी पूरा ध्यान दे रहे हैं। असल में सर के व्यक्तित्व में कुछ तासीर ही ऐसी थी कि क्लास के हरेक विद्यार्थी को लगता कि सर का उससे विशेष प्रेम है। सूर विषयक यह एकमात्र पीरियड था। फिर सर हमें प्रसादजी का 'आँसू' और 'चन्द्रगुप्त' अज्ञेयजी का 'नदी के द्वीप' तथा हजारीप्रसादजी का 'बाणभट्ट की आत्मकथा' पढाने लगे। पढाने का अंदाज भी खास। बोर्ड पर सुन्दर अक्षरों से लिखे खास खास मुद्दे। माथे पर आई लट को पकडे हुए चॉक से ठेलती अंगुलियाँ। तर्जनी और मध्यमा के बीच अटके चाक के साथ बात को समझाने के लिए ऊपर एक उँचाई तक उठकर गोलाई से नीचे आते हाथ। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' वाले क्लास का तो समा ही कुछ ओर होता। सर डूबकर पढ़ाते इतिहास रस, बाणभट्ट का जीवनवृत्तांत, द्विवेदीजी का व्यक्तित्व, कान्यकुब्ज और उज्जयिनी का भूगोल, 'हर्षचरित' और 'कादम्बरी' की पंक्तियों का विशाल पट खुलता तो खुलता ही चला जाता। सर 'कृतिमय' हो जाते और हम सब 'सरमय'। फिर द्विवेदीजी पर शोध-कार्य करने का अवसर मिला। द्विवेदीजी की चर्चा के दौरान कालिदास और रवीन्द्रनाथ की उपस्थिति बनी ही रहती। सर के निर्देशन में काम करते हुए संस्कृत में एम.ए. न कर पाने का मलाल कब तिरोहित हो गया, पता ही न चला।

एम.ए. पार्ट वन के शुरुआती दिन थे। मैं, हेमा, नीरा और जीत भाषाभवन के रीडिंग रूम में पढ़ रहे थे। सर कोई पुस्तक लेने आए। हम पर नजर पड़ी तो हमारे पास आकर बैठ गए और पूछने लगे क्या पढ़ रहे हो ? फिर मुझसे पूछा 'क्या खा रही हो ?' मैने बड़े संकोच के साथ कहा 'लौंग, खाइऐगा सर ?' सरने कहा 'खिलाओगी तो खाउँगा !' लौंग लेकर सर चले गए। हम हतप्रभ। सर का यह भी एक रूप है - सरल, सहज और आत्मीय। सर की दृष्टि हमेशा छात्रों नें निहित संभावनाओं को तलाशती रहती। कहीं भी थोड़ी सी संभावना नजर आती तो उसे उभारने का प्रयास करते, छात्रों के छोटे छोटे प्रयासों को सराहते। जैसे एक कलाकार शुष्क खुरदुरे काष्ट के टुकड़े को छेनी और हथोड़ी की मदद से सुंदर कला कृति का रूप दे देता है, वैसे ही सर ने हमें गढ़ा है, तराशा है। कभी अनुवाद सीखाते, कभी बंगाली पढ़ाते, कभी कविता का आस्वाद कराते तो कभी

नयन में आए दो अश्रुबिंदुओं को अटका कर भरॉऐ गले से 'पाथेर पंचाली' के प्रतीकात्मक अंत को समझाते। सीखाने का तरीका भी बड़ा नायाब था। एक बार हमें हॉमवर्क दिया कि जाओ 'निशांत' फिल्म देखकर आओ और बताओ कि उसमें प्रतीक कहाँ है ?

२६ जनवरी, १९७६ को अचानक मेरी आँखें खराब हो गई और मुझे अंधेरे कमरे में रहना पड़ा। मित्र लोग मेरी तबीयत पूछने आए। साथ में सर का लम्बा पत्र था। पढ़ने की मनाई के बावजूद मैं कई बार पत्र पढ़ गई। हर बार मैंने नई उर्जा पाई। एक माह बाद जब भवन गई तो नीचे सीढ़ियों के पास ही सर मिल गए। जब मैंने कहा कि लिखना-पढ़ना अभी भी बंद है तो बोले - फिक्र क्यों करती हो ? मैं तुम्हे पढ़कर सुनाउँगा। इन शब्दों ने जो ताकत मुझे दी थी वह शब्दातीत है।

सर के पास विद्यार्थियों के लिए हमेशा समय रहता। इसलिए उनकी केबिन में विद्यार्थियों की आवा-जाही बनी ही रहती। कितनी बार फोन पर भी घंटों तक साहित्य विषयक चर्चा की है। कभी कोई शोध-पत्र लिखना होता और कहीं असमंजस आ खड़ा होता तो तुरंत पूछ लेती। दो चार वाक्यों में ही सब कुछ स्पष्ट हो जाता। कई बार मैंने कहा भी 'सर आपके दो-चार वाक्यों से ही सारी दिशाएँ खुल जाती है।' तो धीरे से मुस्कराकर कहते 'तुम लोगों का पक्षपात है मेरे लिए।' मुझे याद नहीं है कि मैंने कभी सर से कुछ पूछा हो और सर ने फिर आने या फोन करने का कहा हो। हमारे लिए समय का कभी अभाव नहीं रहा सर के पास। १९७६ का अगस्त रहा होगा। हम चारों सहेलियाँ रीडिंगरूम में पढ़ रही थी कि अचानक बरसात टूट पडी। नीचे आकर देखा तो सन्नाटा था। मणीनगर जाए भी तो कैसे ? बरसात थमने का नाम नहीं ले रही थी। अनायास हमें विचार आया कि शायद सर केबिन में हो ? 'मेघदूत' सुनते हैं आज। वैसे भी सर पाँच बजे से पहले कभी भवन से नहीं निकलते थे। सर खिड़की से बरसात देख रहे थे। हमने अपनी इच्छा प्रकट की। पुस्तक के बगैर ही सर ने सुनाना शुरु किया - 'कश्चितकांता विरह गुरुणा स्वाधिकार प्रमत्ता:' देर तक सर सुनाते रहे। बरसाती रव के साथ सर का स्वर। छात्र-जीवन के अद्भुत, सर्वाधिक अविस्मरणीय स्वर्णिम क्षण। जब भी धारासार बारिश होती है सर की केबिन का वह दृश्य आँखों में घूम जाता है।

सर का होना मेरे लिए एक मजबूत आधार का होना था। १९८८ जून-जुलाई के कठिन दिन। पेट में ट्यूमर। ऑपरेशन, किमोथेरेपी। मित्रों में दहशत। हमने तय किया था कि माँ, पिताजी और सर को हकीकत न बताइ जाय। मगर बिंदु, मास्साब (डॉ. वीरेन्द्रसिंह) और उजमभाई के चेहरों ने सर के समक्ष सबकुछ बयाँ कर दिया। सर के संदेश लगातार आते रहते। मौत के जबड़े में जाकर भी मैं तनिक नहीं डगमगाई क्योंकि सर के स्नेह और आश्वासन का सम्बल मेरे पास था। सर मुझे देखने आए। पूछा कैसी हो ? मै कुछ जवाब दूं उसके पहले ही चुप रहने का आदेश दिया। सर एक घण्टे तक मौन बैठे रहे मगर उनकी आँखों से जो वेदना का सोता बहता रहा उससे मैं सर के जाने के बाद भी घण्टों तक आप्लावित होती रही। ऐसे ही एक मर्तबा गर्मी की भरी दोपहर में सर बिंदु के साथ मुझे देखने आ गए और साथ में आइस्क्रीम भी लेते आए। मेरी बीमारी को लेकर सतत चिंतित रहते। स्वयं अस्वस्थ होने के बावजूद मुझसे पूछते रहते। एकबार फोन पर पूछते हैं - 'ए.सी. लगवा दिया ?' 'नहीं' सुनकर कहने लगे 'तू भी पण्डित है ना !' हम लोगों की लापरवाही, मूर्खता या छोटी-मोटी भूलों के लिए हमेशा सर एक खास उपाधि 'पण्डित' से नवाजते हमें।

१६ मई २०१२ रात आठ बजे मोबाइल पर सर की वही चिंतातुर आवाज सुनाई देती है - 'सुना है तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है। तुम्हारी सोसायटी का नाम भूल गया हूँ। देखा तो है पर वीरेन्द्र भी भूल गए।' मैं समझ गई। मैंने कहा - 'मैं एकदम ठीक हूँ सर। आप ऊपर नहीं चढ़ियेगा। में खुद आजाउंगी।' बोले तुम्हे अपनी बूंद बूंद एनर्जी बचानी है।' मैंने सोचा भी था कि दो-चार दिन में जाकर सर से मिल आती हूँ। मगर हर बार का सोचना क्या संभव होता है ?

भला ऐसे कितने संवेदनशील सह्रदय गुरु होंगे जो अपने छात्रों की इतनी चिंता, इतनी परवाह करते होंगे। सर से पाया ही पाया है - अनहद प्रेम, अपार ज्ञान, अखूट वात्सल्य। कबीरसाहेबने गुरु की महिमा का बखान करते हुए कहा है कि 'बलिहारी गुरु आपकी जिन गोविंद दियो बताय' मगर साथ ही यही भी कहना नहीं भूले है कि गोविंद की कृपा के बिना गुरु का मिलना संभव नहीं। सच ! सर जैसे गुरु की प्राप्ति ईश्वर की कृपा से ही होती है। कबीरसाहब के शब्दों में कहूँ तो 'जब गोविंद कृपा की तब गुरु मिलिया आइ॥'

ન જાણ્યું જાનકીનાથે...

માયા પટેલ

૨૦ મે ૨૦૧૨, રવિવારની સવારે રજા હોવાથી હજી તો અમે ઊઠ્યાં પણ ન હતાં. સવારના લગભગ સાડા સાત વાગવામાં હશે. રવિવારે અમારે એક દિવસ રજા હોવાથી અમને વહેલા ન ઉઠાડતાં પપ્પાએ (સસરાએ) મમ્મીને કહ્યું : 'તું ચા મૂક હું કસરત કરીને આવું.' મમ્મી હજી તો ચા મૂકવા રસોડામાં પ્રવેશે એ પૂર્વે પપ્પાએ 'શકરીબેન !' કહીને મમ્મીને બૂમ પાડી. મમ્મી દોડતાં પપ્પાના રૂમમાં ગયાં. પપ્પાએ કહ્યું : મને ઠીક નથી લાગતું, વૉમિટ જેવું થાય છે. આ સાંભળી મમ્મીએ અમને ઉઠાડ્યાં. પપ્પાને ગભરામણ જેવું લાગતું હતું. તેમણે મને કહ્યું : 'મધુને ફોન કર.' મેં મધુભાઈ (એમના મોટા દીકરા)ને ફોન કરી તાત્કાલિક બોલાવ્યા. તેઓ તુરંત આવી ગયા. પ્રેશર તદ્દન લો થઈ ગયું હોય એમ લાગતું હતું. પપ્પા પરસેવે રેબઝેબ થઈ ગયા હતા. આથી એમને તરત જ દવાખાને લઈ ગયા. એમના ત્રણ પુત્રો અને ત્રણ પૌત્રો દવાખાને પહોંચી ગયા હતા. ડૉક્ટરોના અથાગ પ્રયત્નો છતાં પપ્પાને બચાવી ન શકાયા. અમને જાણે અંધારામાં રાખીને અનંતની યાત્રાએ ચાલી નીકળ્યા – શબ્દસ્થ થઈ ગયા. અમારા માથા પરથી જાણે કે છત્રછાયા ચાલી ગઈ. ભોળાભાઈનાં પુત્ર, પુત્રી, પૌત્ર કે પુત્રવધૂ તરીકેની ઓળખનું અમારું અભિમાન જાણે પળવારમાં ચાલ્યું ગયું. એમના જવાથી હવે અમે જાણે કે શૂન્ય હોઈએ એમ લાગવા માંડ્યું.

પરિવાર એટલે માત્ર ઘરનાં સભ્યો જ નહીં પરંતુ જેનાથી સદાય ઘેરાઈ રહેવાય અને પ્રેરણા મળે એ પરિવાર. પિતાજી (સસરા) એક પુત્રી, ચાર પુત્રો, ચાર પુત્રવધૂઓ, સાત પૌત્રો અને બે પૌત્રીઓને એટલે કે સમગ્ર પરિવારને એકસૂત્રતાથી બાંધી રાખતા. તેઓ હંમેશાં અમને કહેતા કે, 'હું ન હોઉ તો પણ તમારે બધાંએ આ રીતે જ હંમેશાં સંપીને રહેવાનું.' તેઓ ઘરના દરેક સભ્યની નાનામાં નાની બાબતોનું ધ્યાન રાખતા અને બધાંના ભણતર નોકરી-ધંધા જેવી દરેક બાબત અંગે પૂછપરછ કરતા. જરૂર જણાય ત્યાં અચૂક અમે તેમનું માર્ગદર્શન લેતાં. દિવાળી, રક્ષાબંધન, ઉત્તરાયણ જેવા તહેવારો બધાએ સાથે મળીને એક જ ઘરે ઉજવવાનો આગ્રહ રાખતા. અને દરેક તહેવારનો તેઓ મન ભરીને આનંદ માણતા.

ચાર પુત્રવધૂઓમાંથી ત્રણ પુત્રવધૂઓને તો તેમણે લગ્ન પછી ભણવાની સગવડ આપી અને અમે ભણીએ ત્યાં સુધી ભણવા દીધાં અને અમે ત્રણેયે લાઇબ્રેરી સાયન્સમાં માસ્ટરની પદવી મેળવી. પરિણામે અમે ત્રણેય પુત્રવધૂઓ ગુજરાતની જાણીતી શિક્ષણ સંસ્થાઓમાં ગ્રંથપાલો છીએ. એમની પ્રેરણાનું જ આ સુપરિણામ. પિતાપુત્રોને તો મિત્ર જેવું બનતું એવું સાંભળ્યું છે, પરંતુ તેઓ તો પુત્રવધૂઓ અને પૌત્રો સાથે પણ મિત્ર જેવું વર્તન રાખતા. દિવસ દરમિયાનના કાર્યમાં શું બન્યું તે બધું અમે આવીને પપ્પાને (સસરાને) કહેતાં અને પપ્પા ધ્યાનથી અમને સાંભળતા પણ ખરા. એ અમારા કુટુંબના સભ્યોને – બધાને કહેતા કે, 'જ્યાં આપણે કામ કરતા હોઈએ ત્યાં ક્યારેય કોઈની નિંદા કરવી નહીં અને સાંભળવી પણ નહીં.

પૌત્રોની અને અમારી સાથે આજના આધુનિક જમાનાનાં ફેશન, પિક્ચર, ટી.વી. સિરિયલો અંગે પણ વાતો કરી લેતા. કોઈ વસ્તુ એવી નહોતી કે જેમાં તેઓ રસ ન લેતા હોય. અમને બધાંને કમ્પ્યૂટર અને મોબાઇલનો ઉપયોગ કરતા જોઈને તેઓ પણ મોબાઇલ અને કમ્પ્યૂટરનો ઉપયોગ કરતાં શીખી ગયા. તેઓ મોબાઇલ બહાર ક્યાંય લઈ જતા નહીં, કારણ કે, તેમને થતું કે હું એ ક્યાંક ભૂલી જઈશ. ખરું તો એને સાથે રાખવામાં એમને માનસિક ભાર જેવું લાગતું. જોકે ઘેર હોય ત્યારે મોબાઇલનો ઉપયોગ કરતા. મિત્રો સગાઓને ફોન કરતા કે મેસેજ પણ કરતાં અમારી પાસેથી શીખી ગયા. નજીકમાં રહેતાં એમના પુત્રો-પુત્રવધૂઓ અને પૌત્રોને કહેતા; મને ઘરના ફોન પર નહીં, પણ મોબાઇલ પર ફોન કરવો, જેથી હું એનો બરાબર ઉપયોગ કરતાં શીખી શકું. આમ આધુનિક જમાના સાથે કદમ મિલાવી ચાલવું તેમને ગમતું. હું ઘરના બગીચાની માવજત લેતી ત્યારે તેમાં પણ હંમેશાં રસ લેતા અને સૂચનો કરતા. મને પારિજાત, મધુમાલતી, રાતરાણી, આસોપાલવ, ચંપા, જાસુદ વગેરે વાવ્યાં કે નહીં એમ પણ પૂછી લેતા. વાવેલા ફૂલછોડ પર ફૂલો આવેલાં જોઈ અત્યંત ખુશ થતા. હું કૉલેજ જતાં પહેલાં એમને નીચેથી ફૂલો તોડી આપી જતી એ એમને ખૂબ ગમતું. સ્કૂટર કે વાહન કદી શીખી ન શક્યા તેનો અફસોસ એમને આજીવન મનમાં રહી ગયો. ક્યાંક જવા બીજાનું વાહન મંગાવવું પડે એ એમને ખટકતું. બને તો રિક્ષામાં જ જતા. સંતાનો બહુ આગ્રહ કરે ત્યારે જ વાહનમાં જતા.

આજથી પંદરવીસ વર્ષ પહેલાં જ્યારે છોકરીઓ ભાગ્યે જ પેન્ટ પહેરતી અને કદાચ પહેર્યું હોય તો લોકો એની ટીકા કરતા આવી પરિસ્થિતિમાં કે સમયે તેઓ મારા (પુત્રવધૂ) માટે અમેરિકાથી પેન્ટ અને ટીશર્ટ લાવ્યા હતા. તેમણે ક્યારેય પુત્રી કે પુત્રવધૂ વચ્ચે ભેદ રાખ્યો ન હતો.

જમવાના પણ તેઓ એટલા જ શોખીન. જ્યારે રસોડામાં અમે બધી પુત્રવધૂઓ એક સાથે મળી રસોઈ કરતાં હોઈએ ત્યારે મજાકમાં હંમેશાં કહેતા કે 'Too many cooks spoil the Food.' જમવાનું થોડું, પણ કાંઈ ને કાંઈ નવું ચટાકેદાર જોઈએ. સ્વચ્છતાના ખૂબ આગ્રહી. તેમની થાળીમાં પીરસાતાં દાળશાક ન ઢળાવાં જોઈએ. જોકે એમનો પૌત્ર મૌલિક એમની જ થાળીમાં દહીં ઢોળીને ખાય તો એ ક્યારેય વઢતા નહીં. અને વઢવા દેતા પણ નહીં. બાળક નાનું હોય ત્યારે જમાડતાં હોઈએ અને પાણીનો ગ્લાસ જમીન પર ઢોળે તો ઢોળવા દેવાનો; ઘરની રંગેલી ભીંતો પર ચિત્રો દોરે તો દોરવા દેવાનાં. બાળકોને એમ કરતાં રોકીએ તો કહેતા કે, ''કરવા દો એ જે કરે તે. નહીં તો એ શીખશે ક્યારે. એમના ટેબલ પર અસ્તવ્યસ્ત પડેલી વસ્તુઓ અમે સરખી કરીએ તો બોલતા અને મજાક પણ કરી લેતા કે, ''એને એમ જ રહેવા દો. મારા ટેબલ પર કાંઈ ખોવાતું પણ નથી, અને કાંઈ મળતું પણ નથી.''

પ્રવાસના ખૂબ શોખીન. અમારે ક્યાંય પ્રવાસે જવાનું હોય તો એ અમારા ગાઈડ બની જતા અને જોવાલાયક જગ્યાઓ અંગે સૂચન કરતા અને ખાસ જોજો એમ કહેતા. પ્રવાસેથી આવીને મળીએ ત્યારે અચૂક પૂછે ''ક્યાં ક્યાં ગયા ? શું શું જોયું ?'' પછી એનો ઇતિહાસ વગેરે પણ કહેતા. આમ કોઈ વસ્તુ એવી નહોતી કે એમને ન ગમતી હોય. અણગમાનો જરા સરખો અણસાર આવવા ન દે. 'પંડિત' શબ્દ એમનો પ્રિય શબ્દ હતો. અમારાથી કોઈ ભૂલ થઈ જાય તો કહેતા, 'પંડિત જ છે ને ! આમ ન કરાય' એમ અમને ટકોરતા.

એમના અવસાન પૂર્વે જ્યારે અમે બધાં બેઠાં હોઈએ ત્યારે પુત્રો સાથે વાતો કરતા. મુખ્ય પાંચ વાતો કહેતા : એક તો મારા શરીર પર કોઈ મશીન મૂકવું નહીં, બીજું મને અગ્નિદાહ વીજળીક

સ્મશાનમાં ન આપવો અને કહેતા : તેમાં મને ગૂંગળામણ થાય. મને ઉપરનું ખુલ્લું આકાશ દેખાવું જોઈએ. ત્રીજું બેસણાનો ફોટો પણ નક્કી કરી રાખેલો. ચોથું અસ્થિ ક્યાં પધરાવવાં એ પણ પુત્રોને કહી રાખેલ અને પાંચમું કે મારા મરણ પછી મારી પાછળ કોઈ ક્રિયાકર્મ કે વિધિ કરવી નહિ. આમ સુઆયોજિત રીતે જીવ્યા અને અમને પણ એ પ્રમાણે જીવવાની ટેવ પાડી. અવસાનના આગળના દિવસે પણ મધુભાઈનું કામ પૂર્ણ કર્યું.

બે વર્ષ પૂર્વે તેઓને એન્જિઓપ્લાસ્ટી કરાવવી પડેલી છતાં એમની તબિયત છ મહિના સુધી તો નરમગરમ રહી. પણ અવસાનની અગાઉ ત્રણચાર મહિનાથી તેઓ ખૂબ જ સ્વસ્થ થઈ ગયા હતા. તેઓ આજીવન શિક્ષક તેમજ આજીવન વિદ્યાર્થી રહ્યા. કુટુંબ અને વિદ્યાર્થીમાં હંમેશાં વિદ્યાર્થી જીતી જતો. તા. ૧થી ૭ મે ૨૦૧૨ દરમિયાન તો રવીન્દ્ર મહોત્સવ અને પુસ્તકમેળામાં ખૂબ જ વ્યસ્ત રહ્યા છતાં સ્વસ્થ રહીને વ્યાખ્યાનો આપ્યાં હતાં. આપણને લાગે જાણે એમનું નવું જીવન શરૂ થયું. પુસ્તકો તો જાણે એમનું જીવન હતું. જમ્યા વગર ચાલે પણ પુસ્તકો વગર ન ચાલે. ઘરમાં બધે પુસ્તકો-પુસ્તકો જોઈને મમ્મી ક્યારેક કંટાળીને કંઈ કહે તો કહેતા : ''હું ઘરની બહાર રહીશ પણ મારાં પુસ્તકો તો ઘરમાં જ રહેશે.''

અવસાનની પૂર્વ રાત્રે તેઓ ૧૧ વાગ્યા સુધી રવીન્દ્રનાથનું પુસ્તક વાંચતા હતા. મમ્મીએ કહ્યું : ''હવે સૂઈ જાઓ અને ઊંઘ ન આવતી હોય તો આ પુસ્તક પાસે રાખીને સૂઈ જાઓ.'' અને છેલ્લે રવીન્દ્રનાથની કૃતિનું વાચન કરી શબ્દ સાથે પનારો પાડી સવારે નિઃશબ્દસ્થ થઈ ગયા. છેલ્લે જ્યારે દવાખાને લઈ જતા હતા ત્યારે મમ્મીએ કહ્યું પણ ખરું કે ''જોજો મને એકલી મૂકીને જતા ન રહેતા. પણ ભોળાભાઈ અમને બધાને ભોળવીને ચાલ્યા ગયા.

સ્વ. ભોળાભાઈને પરમ પૂજ્ય મોરારિબાપુએ શ્રદ્ધાંજલિ આપતાં અનુભવવૃદ્ધ, અવલોકનવૃદ્ધ, અભ્યાસવૃદ્ધ પ્રયાગ પુરુષ કહ્યા. પરમ પૂજ્ય કથાકાર શ્રી રમેશ ઓઝાએ શ્રદ્ધાંજલિ આપતાં કહ્યું કે ''શ્રી ભોળાભાઈ સ્વર્ગસ્થ નથી થયા પણ શબ્દસ્થ થયા છે. શબ્દ એટલે બ્રહ્મ. એટલે કે બ્રહ્મસ્થ થયા છે'' કહી તેમણે ગીતાના ૧૫મા અધ્યાયનું પઠન કરી શ્રદ્ધાંજલિ આપી.

''રામગિરિથી ઊપડેલો કાલિદાસનો મેઘ લાંબી ફાળો ભરતો, માળવાનાં તરતનાં ખેડેલાં ખેતરોમાં 'મોતી પેરતો' આમ્રકૂટ અને તે પછી વિન્ધ્યનાં ચરણોમાં પથરાયેલી રેવા પર કરી આ દશાર્ણ પ્રદેશ પર થઈ ઊડ્યો હશે. વિન્ધ્યની આ તરફની ભૂમિ જ એવી હતી કે ઉતાવળે જતા મેઘની ચાલ મંદ પડી જાય. એને કંઈ ને કંઈ બહાને ખોટી થવાનું મન થાય અને તેમાં વળી પાછાં કેવડા ફૂટતાં પીળી વાડોથી શોભતા બગીચાવાળાં દશાર્ણનાં ગામ આવે, વળી પાછાં એ ગામના સીમાડા પરનાં વૃક્ષો પંખીઓના માળા બાંધવાની પ્રવૃત્તિનો આરંભ થતાં કલબલાટથી ગુંજતાં હોય; અને એ સીમાડા જાંબુ પાકવાથી શ્યામ દેખાતા હોય - ત્યારે તો અહીં માનસરોવર જતા હંસો પણ કેટલુંક રહી પડતા. પણ આ ભિલસામાં અમે રહી શકીએ તેમ નહોતા. રસ્તાની આસપાસ નાનીમોટી દુકાનો, બપોરની વેલા હોવાને લીધે કદાચ, સુસ્ત હતી, એકવેળા આ વિદિશા વ્યાપારનું કેન્દ્ર હતું. આખા દેશમાં જતા રસ્તા અહીં મળતા.'' (પૃ. ૬, વિદિશા)

मेरे 'सर'....

वीरेन्द्रनारायणसिंह

सन् १९७७में एम.ए. भाग-१ हिन्दी (एंटायर) की परीक्षा मैंने व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में गुजरात युनिवर्सिटी से उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् १९७७-७८ के सत्र में संस्थागत छात्र के रूप में मैंने भाषा-साहित्य-भवन में प्रवेश लिया। उस समय युनिवर्सिटी आज की तरह अनुदार नहीं थी। आरंभ में (स्व.) डॉ. अंबाशंकर नागर तथा भोलाभाई पटेल दो ही अध्यापक थे। शीघ्र ही डॉ. रामकुमार गुप्त तथा रघुवीर चौधरी विभाग में जुड़े। इस तरह चार प्रबुद्ध अध्यापकों से भरा-पुरा हिन्दी विभाग हमें मिला।

सत्रारंभ का संभवतः पहला ही व्याख्यान था। समयपत्रक के अनुसार बी.एस.पी. (भोलाभाई शंकरदास पटेल) का व्याख्यान था। एक धीरोदात्त काव्यनायक जैसे व्यक्तित्व वाले भोलाभाई ने हाथ में चॉक डस्टर और पुस्तकों के साथ प्रवेश किया। हमने सम्मान में खड़े होकर उनका स्वागत किया। यह 'सर' का प्रथम दर्शन था। वर्ग में मेरे सिवा सभी छात्र यहीं के पुराने छात्र थे। उन्हें 'महाप्रस्थान' (नरेश महेता) पढ़ाना था। विषयाभिमुख करने के लिए उन्होंने कवि का विस्तृत साहित्यिक परिचय हमें दिया। मूल पाठ (कृति) का विश्लेषण अत्यंत सूक्ष्मता से करने के पश्चात् बाद के कालांशों में महाभारत के 'शांतिपर्व' के 'महाप्रस्थान' प्रसंग तथा उमाशंकर जोशी के 'महाप्रस्थान' के साथ जोड़ कर यह बताया कि 'मिथक' का विनियोग (समकालीन संदर्भों में) किस तरह से काव्य के लिए उपकारक बना है।

काव्यमर्म के उद्घाटन की सहजसामर्थ्य, वस्तु का सूक्ष्म विश्लेषण करने की उनकी शैली, भारी भरकम शब्दों के बिना बोले गए परस्पर संबद्ध छोटे-छोटे वाक्य इतने प्रतीतिकर लगे कि उनका स्वाभाविक अहिन्दी उच्चारण कहीं आडे न आया। उनके गहन-विशद अध्यापन, संश्लेषण क्षमता, छात्र वत्सलता और अद्भुत स्मरण शक्ति का मैं कायल होता गया। (मेरी स्मरण शक्ति भी बुरी न थी।) आधुनिक हिन्दी कविता पढ़ाते समय उन्होंने उसकी पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने हमे विविध आधुनिक पाश्चात्य काव्यान्दोलनों - बिम्बवाद, प्रतीकवाद, दादावाद, अति यथार्थवाद, धनवाद, प्रभाववाद से जिस तरह परिचित करवाया वह अद्भुत तथा मेरे लिए आश्चर्यजनक था। उनका गहन अध्ययन, सूक्ष्म मनन-चिंतन उसमें झलकता था।

इसी तरह पाश्चात्य काव्यशास्त्रीयों की काव्य-समीक्षा संबंधी मान्यताओं को भी हमारे सम्मुख विस्तृत रूप से रखा। एम.ए. के स्तर पर वर्ग में विद्यार्थीयों से विविध परिभाषाओं और उद्धरणों का समूह पाठ करवाने वाले और एक-एक से उसे सुननेवाले उस समय वे विरले अध्यापक थे। उनका आग्रह था कि पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त हिन्दी या प्रादेशिक भाषा के ग्रंथों के बजाय मूल या अंग्रेजी ग्रंथों से पढ़ना चाहिए। उसी के कारण उस समय अनेक अंग्रेजी लेख, कुछ ग्रंथ तथा क्रिटिकल इडियम सिरीज की पुस्तिकाएँ सायास पढ़ी, जो हमारी थाती बनी। उनके पढाने की रोचक शैली, श्यामपट्ट कार्य, परिभाषाओं तथा उद्धरणों का दृढ़ीकरण आदि के कारण इस प्रश्नपत्र की तैयारी स्वतः होती गई।

वर्ग में उनकी विशेष प्रिय दो विद्यार्थिनियाँ - बिन्दु तथा रंजना। लघुंशोधप्रबंध के लिए विषय का शीर्षक तथा गाइड का चुनाव करना था। मैं नई कविता पर काम करना चाहता था पर गाइड एलाट हुए डॉ. रामकुमार गुप्त जिनके मार्गदर्शन में मैंने पद्मावत की पात्रयोजना पर कार्य किया। गुप्तजी सहृदय अध्यापक, जब भोलाभाई के सुझाव पर मैंने मोटिफ का मुद्दा एक प्रकरण में समाविष्ट करना चाहा, तब उन्होंने सहर्ष सहमति दी। इन्हीं दिनों

भोलाभाई की प्रेरणा से गुजराती साहित्य के वाचन की ओर उन्मुख हुआ।

एम.ए. के विद्यार्थियों का एक दिवसीय प्रवास अगस्त महीने में प्रांतिज गलतेश्वर गया। इसी प्रवास के दरमियान अंताक्षरी से मेरी ओर गुरुजनों का ध्यान विशेष रूप से गया। (उन दिनों मैं ज्ञानोदय प्राथमिक शाला में गणित-विज्ञान पढ़ाता था।) प्रवास से लौटने पर नया नाम मिला-मास्साब (मास्टर साहब)। यह नाम - रंजना, बिन्दु और अन्य मित्रों ने दिया था। फिर तो क्या था - सभी गुरुजन, साथी इसी नाम से बुलाने लगे यहाँ तक कि नागर जी भी। बाद की पीढ़ी के भाषाभवन के विद्यार्थी भी इसी नाम से बुलाते रहे सिवा भोलाभाई के जो हमेशा 'वीरेन्द्र' संबोधन करते थे।

इसी वर्ष (१९७७ में) 'सर' को उनके शोधग्रंथ अज्ञेय : एक अध्ययन (पाश्चात्य प्रभावों के संदर्भ सहित) पर पीएच.डी. की उपाधि मिली। मार्गदर्शक थे - नागरजी। इसी सत्र में वे पीएच. डी. के मार्गदर्शक मान्य हुए। उनके मार्गदर्शन में सर्वप्रथम तीन विद्यार्थिनियों - मृदुला, बिन्दु और रंजना ने जुलाई १९७८ में रजिस्ट्रेशन कराया। मैंने पीएच.डी. के लिए मध्यकालीन कविता से लेने का विचार किया तब 'सर'ने अनंतदास की परचइयों के पाठ संपादन का सुझाव दिया। 'सर' पहले इस विषय पर कुछ काम कर चुके थे। इसके लिए मुझे मध्यकालीन लिपि सीखनी थी। 'सर' की सिफारिश से डॉ. हरिवल्लभ भायाणी के निर्देशन में एल. डी. इंडोलॉजी में श्री लक्ष्मणभाई से मैंने लिपि सीखना शुरू किया। तीन-चार माह में धीरे-धीरे मध्यकालीन रचनाओं के लिप्यंतरण की योग्यता आ गई। अनंतदास की एक परचई - 'कबीर परचई' का पाठ संपादन करने की प्रक्रिया शुरू की, फिर रजिस्ट्रेशन के लिए डॉ. रामकुमार गुप्तजी के पास गया। उनके मार्गदर्शन में उस समय तक कोई जगह बाकी न थी, सभी जगहें भर चुकी थीं। मैं रघुवीरभाई से मिला। उन्होंने 'सर' के मार्गदर्शन में रजिस्ट्रेशन करवाने का सुझाव दिया। नवम्बर १९७८ में चौथे विद्यार्थी के रूप में मैंने अपना रजिस्ट्रेशन करवाया। यहीं से उनके सतत संपर्क में आने का अवसर मिला। रंजना, बिन्दु और मृदुला से भी निकटता बढ़ी। कब मैं उनके परिवार का एक अंग बन गया, पता भी न चला। बाद में तो मित्रगण - बिन्दु, मृदु, ऊजमभाई चिढ़ाते थे कि 'सर' का मेरे प्रति प्रेम 'आठ फैट' का है। यह प्रेम आजीवन बना रहा। मासी (शकुबहन) का मेरे प्रति विशेष पक्षपात। वे सदैव मेरे पक्ष में रहती। और उनका घर मेरे लिए ऐसी जगह हो गया जहाँ मैं जब चाहूँ तब बिना किसी कारण के जा सकता था। यह सिलसिला भी अंत तक बना रहा। मैं पीएच.डी. हो जाने के बाद महीने में कम से कम एक-दो बार तो अवश्य ही केवल मिलने के लिए उनके घर जाता था, 'सर' हों चाहे न हों।

पीएच.डी के दौरान 'सर' के शोधप्रबंध के प्रकाशन के समय मैंने प्रूफरीडिंग, पृष्ठसज्जा की बारी कियाँ 'सर' से सीखी। उन्ही दिनो हिन्दी, गुजराती, हिन्दी-गुजराती के विविध सेमिनारो में रंजना, बिन्दु, मृदु, ऊजमभाई के साथ मैंने भी भाग लेना शुरू किया। वल्लभविद्यानगर, ईडर, गूजरात विद्यापीठ, सादरा के सेमिनारों, दिल्ली, बनारस के अधिवेशन में हममें से कोई चार तो 'सर' के साथ था ही। (बनारस में मृदु नहीं आ सकी थी और दिल्ली में रंजना) 'विदिशा' के निबंधो को पढ़कर उसका अनुवाद सबने मिलकर किया। उसी प्रभाव में हम पाँचों और सर्वदमन वोरा मांडू का तीन दिनों का प्रवास भी कर आए।

उन दिनों (१९७७-१९८३ तक) साहित्य अकादेमी दिल्ली, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता या भारतीय ज्ञानपीठ जैसी संस्थाओं को जब कभी समकालीन गुजराती साहित्य को किसी कृति के अनुवाद की जरूरत पड़ी तब 'सर' के मार्गदर्शन में हमने साथ मिलकर काम किया। भारतीय उपन्यास : कथासार में गुजराती उपन्यासों के कथासार, गुजराती बाल कहानियों के अनुवाद का काम उन्हीं दिनों हुआ। अनुवाद या सार लेख हम सभी साथ पढ़ते, आवश्यक संशोधन, परिवर्तन करके पुनः लिखते तब जाकर वह फाइनल होता था। 'सर' हमेशा कहते थे - 'अनुवाद एक सहयोगी कार्य है। अच्छे से अच्छे अनुवाद में भी सुधार की सदैव गुंजाइश रहती है।' इन्हीं दिनों पन्नालाल पटेल, उमाशंकर जोशी, सुरेश जोशी, रघुवीर चौधरी, ईश्वर पेटलीकर, चंद्रकांत शेठ, मेघाणी आदि की कुछ रचनाएँ पढ़ीं, कुछ अनुवाद कार्य किया।

रावजी के गीतों, मनोज खंडेरिया, चीनू मोदी तथा राजेन्द्र शुक्ल की गझलों से परिचय उन्हीं दिनों हुआ। यह मेरे लिए गुजराती रचनाओं के वाचन का काल था। इस समय तक मैंने स्वतंत्र रूप से अनुवाद का कोई कार्य नहीं किया था।

सन् १९८३ के अंत और १९८४ के मध्य तक अपनाकार्य पूरा करके एक एक कर के 'सर' के सभी विद्यार्थी नौकरी के सिलसिले में सुरेन्द्रनगर, केशोद या जूनागढ़ चले गए। अब 'सर' के साथ मैं अकेला रह गया था। तब जरूरत पड़ने पर स्वतंत्र रूप से मैं अनुवाद कार्य में प्रवृत्त हुआ। कुछ कहानियों, निबंधो, लेखों तथा कविताओंके अनुवाद किए। 'सर' और रघुवीरभाई को मुझ पर जो भरोसा था उसने मुझे गुजराती की प्रशिष्ट रचनाओं के अनुवाद की ओर उन्मुख किया। 'सर' हमेशा कहा करते थे कि गुजरात में हिन्दी के अध्यापक की जिम्मेदारी दुहरी है। हिन्दी भाषा साहित्य का अध्ययन और अध्यापन करना तथा गुजराती और हिन्दी की विशिष्ट रचनाओं को अनूदित करके दो भाषाओं के बीच सेतु बनना। इस दिशा में मैंने मित्र बिन्दु भट्ट के दो उपन्यासों - 'मीरां याज्ञिक की डायरी' तथा 'अक्षय पात्र' का हिन्दी में अनुवाद किया। बाद में गोवर्धनराम त्रिपाठी की कालजयी कृति 'सरस्वतीचंद्र' के दूसरे और तीसरे भाग का अनुवाद सम्पन्न हुआ। इन कामों में जहाँ भी जरूरत पड़ी वहाँ मित्रों - हर्षद, बिन्दु, मृदु, ऊजमभाई तथा 'सर'ने मदद की। दो वर्ष पूर्व 'फुटपाथ और मेंड़' शीर्षक से रघुवीर चौधरी की चुनी हुई कविताओं का मेरा अनुवाद सर आरंभ से अंत तक साथ बैठकर सुन गए। उनका होना मेरे लिए एक बड़ा संबल था।

गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर द्वारा हिन्दी (प्रथम भाषा) तथा हिन्दी (द्वितीय भाषा) की लगभग बीसेक पुस्तकों में संपादन की भूमिका 'सर' और रघुवीरभाई के मार्गदर्शन में निभाई। सामग्री के चयन में रोचकता, वैविध्य, सामाजिक सरोकारों के साथ ही काव्यसौंदर्य तथा शाश्वत भारतीय जीवन मूल्यों को अगली पीढ़ी तक संक्रमित करने में पाठ्यपुस्तक की सूक्ष्म भूमिका का अनुभव इसी दौरान हुआ। संपादन, लेखन में 'सर' के मार्गदर्शन में कई वर्षों तक काम करने का जो अवसर मिला उसने मुझे स्वतंत्र संपादन में समर्थ बनाया।

'सर' कहते थे साहित्य के विद्यार्थी को समकालीन साहित्यिक गतिविधियों और प्रवृत्तियों से परिचित रहना चाहिए। 'बाचिकम्' के माध्यम से तथा स्वतंत्र रूप से भी हमने नौंवे दशक की विविध रचनाओं का वाचन किया, समीक्षा की। उन्हीं दिनों हमने केदारनाथसिंह, ज्ञानेन्द्रपति, मंगलेश डबराल, राजेश जोशी, उदयप्रकाश, वेणुगोपाल, अरुणकमल आदि के संकलनों से उनकी उत्तम कविताओं का एक हस्तलिखित संकलन तैयार किया था। भाषाभवन के बरामदे में तब तक ग्रील नहीं लगी थी। नागरजी की कृपा से भूमितल पर सीढ़ी के पीछे वाला एक कमरा बिनशोध छात्रों को एलॉट हुआ था, जहाँ हम सुबह ७.३० बजे से सायं ८.३० बजे तक रहते थे। ऊजमभाई, सर्व दमन वोरा (दोनों नागरजी के अंतर्गत रजिस्टर्ड शोधछात्र) मृदु, रंजना और बिन्दु कोई न कोई हमेशा वहाँ होते। मैं नौकरी के बाद समय मिलने पर सुबह-शाम उनसे मिलता। सभी के शोधप्रबंध के कार्यो से हम परस्पर परिचित थे। लगभग हम सबने उन दिनों रचनाओं को पढ़ा, शोधप्रकरणों के मुद्दों को सुना, उन पर टीका-टिप्पणी की। बाद में यह हमारी पूजी का भाग बना तभी आज भी जब हिन्दी के किसी अध्यापक मित्र को किसी विषय को लेकर कोई प्रश्न होता है तो 'मास्सा'ब' याद आते हैं।

किसी विद्यार्थी को कोई पुस्तक न मिल रही हो, किसी शोधार्थी को कोई लेख या ग्रंथ लाइब्रेरी से उपलब्ध करवाना हो, सर की लाइब्रेरी-टिकट हमेशा उपलब्ध रहती। अपनी पुस्तकें तो वे विद्यार्थियों को देते ही थे, बाद में तो हमारे पास की पुस्तकें भी विद्यार्थीयों को जाने लगीं। 'समीक्षालोक' (दिक्षित) की 'सर' को लेकर कुल छः प्रतियों में एक ही प्रति बची और उसी से हम सबको काम चलाना पड़ा था। इस उदारता का खामियाजा निवृत्त होते समय लाइब्रेरी की पुस्तकों की कीमत तथा दंड भरकर चुकाना पड़ा, फिर भी उनकी उदारता में कोई कमी नहीं आई।

बाद उदारता की आई तो एक और बात उल्लेखनीय है। महीने में एक-दो बार हम सभी शोधार्थी

'सर' के साथ चाय पीते। कनुभाई की लारी पर नीम के तने के पास बैठकर। बिल हमेशा सर ही चुकाते। गुरु-आदेश से हमें बिल चुकाने से प्रतिबंधित कर दिया गया था। एक निजी बात, सन् १९९९में मैंने अपना पुराना मकान बेचकर चौदखेडा में एक नया मकान रखा। पैसे की मुझे कोई जरूरत नहीं थी, फिर भी 'सर'ने जबरदस्ती एक लाख रुपए का चेक दिया, जिसे मुझे लेना पड़ा। (यह बात अलग है कि वह रकम मैंने अपने छोटे भाई को दे दी, जिसने हमारे साथ वाला मकान खरीदा था) साथ ही शर्त कि एक साल से पहले यह रकम नहीं चुकानी है। मासी ने भी इस समय मेरा समर्थन नहीं किया, वे भी 'सर' के पक्ष में थी। खैर, एक वर्ष बाद मैंने उतनी ही रकम का चेक उनके खाते में जमा करवा दिया। भोलाभाई सचमुच भोलेनाथ थे।

पीएच.डी. का मेरा पहला रजिस्ट्रेशन समाप्त हो गया। समय पर कार्य पूरा नहीं हो सका। फिर दुबारा फणीश्वरनाथ 'रेणु' के कथासाहित्य पर कार्य करनेका विचार किया। इस विषय पर पुनः 'सर' के मार्गदर्शन में रजिस्ट्रेशन करवाया। मूल ग्रंथ, समीक्षा ग्रंथ, संदर्भसामग्री पढ़ने और नोट करने का कार्य लगभग पूरा हो चुका था। इसी बीच यू. जी. सी. की गाइडलाईन आई कि जिसकी थीसिस दिसम्बर १९९३ तक जमा होगी उसे नेट/स्लेट से मुक्ति मिलेगी, बाद वालों को नेट/स्लेट देना होगा। 'सर'ने उलाहना दिया, जल्दी काम पूरा करलो वर्ना लोग यही कहेंगे कि इतने साल तक मेरे साथ रहे और काम नहीं किया। मैं जी-जान से जुट गया। दीपावली अवकाश रंजना के क्वार्टर पर रहकर लिखने का पूरा किया। साथ-साथ 'सर' का देखना, सुधारना, चलता रहा। मध्य दिसंबर तक टाइप लगभग पूरा हो चला। 'सर' को एक सप्ताह के लिए शांतिनिकेतन जाना था। जाने से पहले 'सर' ने बिना बाईंड की गई थीसिस के प्रथम पृष्ठ पर हस्ताक्षर किए। बाइंडिंग के बाद थीसिस २७ या २८ दिसम्बर को जमा हुई उस दिन सर शांतिनिकेतन में थे। मित्रगण उस समय भी चिढ़ाते थे सर का प्रेम मेरे लिए आठ फैट का है।

'१७ मई, २०१२ को मुझे अपने मूल गाँव बनारस जाना था। उसके एक दिन पहले १६ मई को सर से मिलने उनके घर ३२, प्रोफेसर्स कॉलोनी गया। 'सर' एकदम स्वस्थ और प्रसन्न लग रहे थे। रवीन्द्र सार्धशती सप्ताह और राष्ट्रीय पुस्तक मेले का आनंद चेहरे पर दिखलाई दे रहा था। घर-परिवार की बातें हुई। 'सर'ने पूछा, 'मृदु की सोसायटी का नाम क्या है? उसकी तबियत कैसी है? मुझे उससे मिलने जाना है।'

'सर, सोसायटी का नाम तो नहीं याद है, पर घर मैंने देखा है। बनारस से लौटकर आऊं फिर हम साथ में मृदु के यहाँ जाएँगे। उसकी तबियत ठीक है, पर उसे अधिक श्रम नहीं लेना चाहिए।' 'सर' को अपने विद्यार्थीयों की इतनी चिन्ता रहती।

'तू हमेशा विदा लेने ही आता है।' 'नहीं, सर!' हमेशा की तरह मैंने पूछा, 'सर, बनारससे कोई किताब लानी है?'

'नहीं, अब कुछ नया नहीं करना है।'

एक दिन पहले बड़े बेटे मधुसूदन के जन्मदिन पर लाई गई चेरी हमने साथ-साथ खाया। 'सर' बोले - 'अपने-अपने अज्ञेय' पुस्तक आ गई है। अच्छी हुई। उसमें मेरा जो लेख है, वह तो तुमने पढ़ ही लिया था।' सरने लाकर पुस्तक का दोनों भाग दिखाया। फिर बोले - इसके निमित्त अपने छात्रों के नाम मैंने एक पत्र लिखा है। रविवार के दिव्यभास्कर में छपेगा। 'सर, मैं तो रविवार को हूँ, नहीं।' 'अच्छा, रुको तुम उसकी कॉपी देख लो।'

घर लौटकर मैंने अपने पडोसी मित्र ऊजमभाई से बात कही। अगले दिन बनारस रवाना हो गया।

रविवार, २० मई, २०१२ दिन के लगभग साढ़े दस बजे होंगे। मोबाइल की घंटी बजी। हैदराबाद से बेटे डॉ. कुणाल का फोन था. 'पापा, भोलाभाई पटेल 'सर' नहीं रहे। हर्षदभाई आपको फोन कर रहे थे, स्विच ऑफ आ रहा था, तो मुझे बताने को कहा।'

मैं आघात से विमूढ रहा गया। 'ईस्वर, इतना पक्षपात की मुझे 'सर' के अंतिम दर्शन से दूर रखा!'

માનવીય ગૌરવના ઉપાસક અને પ્રતિભાસંપન્ન સર્જક પદ્મશ્રી ભોળાભાઈ પટેલ

મણિભાઈ પ્રજાપતિ
ડાયરેક્ટર ઓફ પબ્લિકેશન્સ, કડી સર્વ વિશ્વવિદ્યાલય, ગાંધીનગર

પરમ શ્રદ્ધેય સંસ્કારપુરુષ પદ્મશ્રી ભોળાભાઈ પટેલસાહેબ ગુરુ પરંપરાની ચોથી પેઢીએ મારા પ્રદાદાગુરુ થાય. અર્થાત્ મારા ગુરુ પ્રા. તુલસીભાઈ પટેલ (મહેસાણા), તેમના ગુરુ શ્રી રઘુવીરભાઈ અને તેમના ગુરુ પ્રાતઃસ્મરણીય શ્રી ભોળાભાઈ સાહેબ. હવે તેઓશ્રી નથી એમ બોલતાં જ ઊંડા આઘાતની લાગણી અનુભવું છું, હજી તો તા. ૧૯ મેના શનિવારની સવારે તેમણે મને ફોન કરીને કહ્યું હતું કે તમારા માટે તોરલે જણાવ્યા મુજબનાં બે પુસ્તકો માયા સાથે આજે મોકલી આપું છું, વગેરે... અચાનક, આ શું થઈ ગયું? ભારતીય સાહિત્ય અને સવિશેષતઃ ગુજરાતી, હિન્દી અને પૌર્વાત્ય ભારતીય સાહિત્યે એક સમર્થ, પ્રતિભાસંપન્ન અને પ્રાણવાન સર્જક ગુમાવ્યો, પરંતુ સર્વ વિદ્યાલય, કડીએ તેનો વહાલસોયો, સપુત, ભૂતપૂર્વ મેધાવી છાત્ર ગુમાવ્યો, જ્યારે સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળ, કડીએ પોતાના આધારસ્તંભ સમાન પ્રમુખશ્રીને ગુમાવ્યા.

સૌને અંધારામાં રાખી હાથતાળી દઈ ઉર્ધ્વલોકના ચિર પ્રવાસે નીકળી પડ્યા! ચારેક માસ પૂર્વે જ આ મંડળના મોભી અને દૃષ્ટિસંપન્ન ચેરમેન શ્રી માણેકલાલ પટેલ સાહેબે આ રીતે જ અણધારી વિદાય લીધી હતી. આ મંડળને આ બીજો કારમો ઘા સહન કરવાનો આવ્યો. અમારા સદ્‌ગત ચેરમેન શ્રી માણેકલાલ સાહેબ વાત-વાતમાં અને તેમનાં ભાષણોમાં 'ભોળાભાઈ અમારી શાળાના વિદ્યાર્થી છે. અમારું ગૌરવ છે' તેમ હોંશે હોંશે અને ગર્વભેર કહેતા રહેતા હતા. સામે પક્ષે ભોળાભાઈ સાહેબ પણ એકાધિક લેખો અને ભાષણોમાં સર્વ વિદ્યાલય અને પોતાના ગુરુજનો સર્વશ્રી નાથાલાલ દેસાઈ, શ્રી મોહનલાલ પટેલ, શ્રી રામભાઈ પટેલ અને શ્રી અંબાલાલભાઈ પટેલ પ્રતિ પ્રસંગોપાત્ત વિનમ્રભાવે ઋણભાવ વ્યક્ત કરતા જોવા મળ્યા છે. સર્વ વિદ્યાલય પ્રત્યે અનન્ય આસ્થા ધરાવતા હતા.

'શ્રી મોહનલાલ પટેલ ભારતીય સાહિત્ય વ્યાખ્યાનમાળા'ના આયોજન સમયે અમારે તા. ૧૧ જાન્યુઆરી, ૨૦૧૨ના રોજ પાટણ યુનિવર્સિટીમાં જવાનું થયું હતું. વક્તા તરીકે સાહિત્ય અકાદેમી, નવી દિલ્હીના પૂર્વ સચિવ અને તુલનાત્મક સાહિત્યના પ્રખર વિદ્વાન પ્રો. ઇન્દ્રનાથ ચૌધુરીને નિમંત્રવામાં આવ્યા હતા. શ્રી રઘુવીરભાઈ, પદ્મશ્રી સિતાંશુભાઈ, શ્રી મોહનભાઈ, ડૉ. રામભાઈ પટેલ વગેરે સૌ આ કાર્યક્રમમાં હાજર હતા. આ વ્યાખ્યાનમાળા શરૂ કરવામાં અને પ્રત્યેક વ્યાખ્યાનમાળાના આયોજન સમયે અચૂક ઉપસ્થિત રહેનાર પૂજ્ય ભોળાભાઈ સાહેબ નાદુરસ્ત તબિયતના કારણે આ સમયે પાટણ આવી શક્યા ન હતા. વ્યાખ્યાન કાર્યક્રમ પૂર્ણ થયા બાદ સ્ટેજ ઉપર જ શ્રી માણેકલાલ સાહેબે મને જણાવ્યું હતું કે આપણે ભોળાભાઈનો નાગરિક અભિવાદન સમારોહ યોજવો છે. તેમજ અભિવાદન ગ્રંથ પ્રકાશિત કરવો છે. તમે તૈયારી શરૂ કરો. પાંચ-સાત લાખ રૂપિયા જે ખર્ચ થાય તેની ચિંતા ન કરશો. ભવ્ય સમારોહ થાય તેમ

કરશો. બીજા જ દિવસે સવારના ૧૧.૦૦ વાગે શ્રી ભોળાભાઈ સાહેબ પ્રો. ઇન્દ્રનાથને મળવા ગાંધીનગર આવ્યા હતા. શ્રી માણેકલાલ સાહેબ સાથે અમારી સૌની મુલાકાત થઈ. સાહેબે આગ્રહપૂર્વક ભોળાભાઈને બેસવા કહ્યું અને જણાવ્યું કે મારે તમારી સાથે વાત કરવી છે, હાથ પકડીને કહેવા લાગ્યા કે બેસો ! (સંભવતઃ સૂચિત અભિવાદન સમારોહ સંદર્ભે તેમની અનુમતિ લેવી હશે !) પરંતુ પ્રો. ઇન્દ્રનાથજીના પ્લેનનો સમય થઈ ગયો હોવાથી સાહેબની રજા લઈને અમે સૌ છૂટા પડ્યા ! એરપોર્ટ જતાં રસ્તામાં મેં ભોળાભાઈ સાહેબને તેમના અભિવાદન સમારોહના આયોજન સંબંધી ચેરમેન સાહેબે કહેલ વાત જણાવી. તેમણે મને કહ્યું કે હું રઘુવીરને વાત કરીશ કે તે તમારી સાથે રહે. પરંતુ, મોટી કરુણતા એ થઈ કે તે રાત્રે જ શ્રી માણેકલાલ સાહેબે આકસ્મિક વિદાય લઈ લીધી. એક વજાઘાત અનુભવ્યો. આ વાત સમયાન્તરે સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળના નવનિર્વાચિત અને ઉત્સાહી ચેરમેનશ્રી અને કડી સર્વ વિશ્વવિદ્યાલયના પ્રેસિડેન્ટ શ્રી વલ્લભભાઈ સાહેબને જણાવી. તેમણે દ્વિગુણિત ઉત્સાહ સાથે આ કાર્ય સંપન્ન કરવા સંમતિ આપી. અમારા પ્રેસિડેન્ટ સાહેબે પ્રો. ભોળાભાઈ સાહેબના સન્માન સંબંધી ઘણું બધું વિચારી રાખ્યું હતું, પરંતુ તેનો પ્રારંભ થાય તે પૂર્વે જ ભોળાભાઈ સાહેબે આપણી વચ્ચેથી તા. ૨૦ મે, ૨૦૧૨ના રોજ સવારે અલવિદા લઈ લીધી. કાળની ગતિ ગહન છે !

ભોળાભાઈ સાહેબ એટલે ભોળાભાઈ ! સાહિત્યજગત હોય કે સામાજિક વ્યવહારજગત, હંમેશાં તેઓશ્રી તેમની આગવી મુદ્રામાં જોવા મળ્યા છે. સૌ કોઈ તેમને સરળતાથી મળી શકે, પોતાની વાત કહી શકે અને શાતા મેળવે. સાહેબના વ્યક્તિત્વની સૌથી મોટી ખાસિયત એ કે તેઓશ્રી સૌ કોઈને સાંભળતા. મહાત્મા ગાંધીએ જેવાં ગોખલેમાં દર્શન કર્યાં હતાં તેવાં મેં પ્રદાદાગુરુ ભોળાભાઈ સાહેબમાં. સાહેબ મૃદુ સ્વભાવના. છતાં પ્રસંગ પડે સાચી વાત નિર્ભીકપણે કહી દેતા. તેમના આ વ્યક્તિત્વની પ્રતીતિ 'પરબ'ના તંત્રીલેખોમાં થાય છે. આ તંત્રીલેખોએ સાહિત્યિક પત્રકારત્વના આદર્શની દિશા ખોલી આપી છે. આ લેખો 'આવ, ગિરા ગુજરાતી' અને 'મળી માતૃભાષા મને ગુજરાતી'ના શીર્ષકો હેઠળ ગ્રંથસ્થ થયા છે. 'અધ્યાપકોના વાચન દૌર્બલ્ય', 'ગુજરાતી જોડણી સુધાર આંદોલન', 'હિંદી વિરોધી આંદોલન', 'અંગ્રેજીની અવગણના' વગેરે પ્રતિ દો-ટૂક શબ્દોમાં આક્રોશ વ્યક્ત કરતા જોવા મળે છે. જાહેર બાબતો વિશે પ્રાયઃ મૌન સેવતા ભોળાભાઈએ એકાદ માસ પૂર્વે આપેલ મુલાકાતમાં ગુજરાતની હાલની પરિસ્થિતિ વિશે કરેલાં વિધાનો કે જે વરિષ્ઠ પત્રકાર પ્રકાશ શાહે તા. ૨૧ મે, ૨૦૧૨ના 'દિવ્ય ભાસ્કર'માં પ્રગટ થયેલા તેમના લેખ 'અલવિદા, ભોળાભાઈ પટેલ'માં ઉદ્ધૃત કર્યા છે. તે વાંચતાં જ પ્રશ્ન થાય કે શું ભોળાભાઈ આવું કડક બોલી શકે !

તેમણે ગુજરાતી નિબંધ સાહિત્ય – પ્રવાસ સાહિત્યને સમૃદ્ધ કર્યું છે. કવિતા લખી નથી, પરંતુ તેમના નિબંધોમાં તેમનો કવિજીવ સતત ઉપસ્થિત રહેલો અનુભવાય છે. તેમણે ભારતમાં પ્રમુખ સાંસ્કૃતિક કેન્દ્રો – પ્રવાસ સ્થળોની મુલાકાત લઈને તે તે સ્થળોનાં રસ-મધુર વર્ણનોના માધ્યમથી જીવંત બનાવી દીધાં છે. ભુવનેશ્વરનાં મંદિરો, હિમાલયનાં શિખરો, વિદિશા વગેરેનાં વર્ણનોમાં તેમની રસિકતા અને ભારોભાર વિદ્વત્તાનાં દર્શન થાય છે. આ નિબંધોમાં – પ્રવાસ નિબંધોમાં તેમની છલકતી રસિકતા, સૌન્દર્યાન્વેષી દૃષ્ટિ અને ઐતિહાસિક – સાંસ્કૃતિક સંદર્ભોનું ગહન જ્ઞાન તથા સ્થળવિશેષની લોકપ્રચલિત માન્યતાઓની ગૂંથણી ઊડીને આંખે વળગે છે. તેમના નિબંધો વાંચતાં જ જે તે સ્થળ વિશેષનો પ્રવાસ કરવાની ઉત્કટ ઇચ્છા થાય અથવા જો તે સ્થળ જોયું હોય તો સહજ પ્રશ્ન ઉદ્ભવે કે આવું તો આપણે કશું ન જોયું ? ન સાંભળ્યું ? અને મન પુનઃ તે સ્થળનો પ્રવાસ કરવા લાલાયિત થઈ

જાય. નિબંધોની રચનારીતિ પણ એવી કે જાણે તે બોલે છે અને આપણે સાંભળીએ છીએ. અભિવ્યક્તિ સરળ અને હૃદ્ય. આ બધા નિબંધો તેમની આગવી શૈલીના કારણે ગુજરાતી નિબંધ સાહિત્યનું આગવું ઘરેણું બની ગયા છે.

તેમનું વિવેચન ગુણાનુરાગી અને આસ્વાદમૂલક રહ્યું છે. બીજા શબ્દોમાં તેઓશ્રી 'વિકસિત સંવેદનશીલતા અને પરિષ્કૃત રસ – રુચિના વિવેચક છે.' આધુનિકતા અને પાશ્ચાત્ય પ્રભાવના વિશેષ સંદર્ભમાં 'અજ્ઞેય એક અધ્યયન' (૧૯૭૭) પીએચ.ડી.ની ડિગ્રી માટે તેમણે તૈયાર કરેલ શોધપ્રબંધ અજ્ઞેય ઉપરનાં આજ સુધીનાં સંશોધનોમાં અદ્વિતીય સ્થાન ધરાવે છે. 'અજ્ઞેય એક અધ્યયન' અને 'ભારતીય ઉપન્યાસ પરંપરા ઔર ગ્રામકેન્દ્રી ઉપન્યાસ' એ તેમને હિંદીના એક દિગ્ગજ આલોચક તરીકે પ્રતિષ્ઠિત કર્યા. બંગાળી, અસમિયા, ઉડિયા વગેરે પૂર્વોત્તર ભારતીય ભાષાઓની શ્રેષ્ઠ કૃતિઓ ગુજરાતીમાં અનુવાદિત કરીને અનુસર્જક તરીકે પણ ખ્યાતિ પામ્યા. સંસ્કૃત સાથે પણ ભારે મોટી પ્રીતિ. આખું 'મેઘદૂત' કંઠસ્થ. બીજી ઘણી કૃતિઓ પણ જિહવાગ્રે. કોઈ પરિસ્થિતિવશાત્ જ્યાં ગુરુ અટકે ત્યાંથી શિષ્ય રઘુવીરભાઈ આગળ ચલાવે તેવી જુગલબંધી. ગુરુ-શિષ્યનો પરસ્પર સ્નેહભાવ ન ભૂતો ન ભવિષ્યતિ જેવો. તેમણે બંનેએ સંયુક્ત રીતે ગુજરાતી-હિન્દીના કેટલાક પ્રશિષ્ટ અનુવાદો આપ્યા છે. તેમણે બંગાળી સાહિત્યની જિંદગીભર ઉપાસના કરી. બંગાળી પ્રત્યેના અનહદ પ્રેમને ધ્યાને લઈ શેઠ સાહેબ તેમને 'બંગબંધુ'થી નવાજતા. તેઓશ્રી રવીન્દ્ર સાહિત્યના પ્રખર અભ્યાસી અને ચાહક બની રહ્યા હતા. તેમના જ શબ્દોમાં ''તમે માનશો, કાલિદાસ અને રવીન્દ્રનાથ તો મારા લોહીનો લય બનીને રહ્યા છે... મારી ચેતનામાં વિશેષ અનુસ્યૂત છે.'' જીવનના અંતિમ સમયે આ જ્ઞાનયજ્ઞની પૂર્ણાહુતિ તરીકે રવીન્દ્રનાથની સાર્ધ જન્મશતાબ્દી સમારોહનું ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદના ઉપક્રમે ભારે ગૌરવપૂર્વક આયોજન કર્યું અને 'રવીન્દ્ર સંચયિતા' ગ્રંથનું અનિલા દલાલના સહયોગમાં સંપાદન પણ કર્યું.

બહુશ્રુત અને બહુભાષાવિદ્ ડૉ. ભોળાભાઈ પટેલ ગૂર્જર ભારતીય સાહિત્યનું એક પ્રોજ્જ્વલતમ રત્ન હતા. ભારતીય સાહિત્યના મર્મજ્ઞ અભ્યાસી શ્રી ભોળાભાઈ સાહિત્ય અકાદમી, નવી દિલ્હીના સર્વોચ્ચ સન્માન – ફેલોશિપથી પણ વિભૂષિત હતા. અત્રે ઉલ્લેખનીય છે કે તેમના પૂર્વે ગુજરાતીમાં ફક્ત કાકાસાહેબ કાલેલકર, વિષ્ણુપ્રસાદ ત્રિવેદી, ઉમાશંકર જોશી અને રાજેન્દ્ર શાહને આ સન્માન એનાયત કરવામાં આવ્યું હતું. હિન્દી ભાષા – સાહિત્ય તથા તુલનાત્મક સાહિત્યના પ્રતિભાસંપન્ન વિદ્વાન અધ્યાપક તરીકે સારાય ભારતવર્ષમાં ખ્યાતિપ્રાપ્ત હતા. કેન્દ્રિય સાહિત્ય અકાદેમી, નવી દિલ્હી દ્વારા તેમને 'દેવોની ઘાટી' (૧૯૯૩) તથા અસમિયા અનુવાદ (૧૯૯૯) માટે પુરસ્કૃત કરવામાં આવ્યા હતા. આ ઉપરાંત 'રણજિતરામ સુવર્ણચંદ્રક', 'દર્શક પુરસ્કાર', 'ગૌરવ પુરસ્કાર', 'સૌહાર્દ પુરસ્કાર' વગેરે અનેકવિધ પુરસ્કારોથી તેમને વિભૂષિત કરવામાં આવ્યા હતા.

સાહેબ આજીવન વિદ્યાર્થી વત્સલ અને પ્રતિભાશાળી શિક્ષક બની રહ્યા હતા. તેમણે પોતાના વિદ્યાર્થીઓને સતત નજર સમક્ષ રાખ્યા છે. ઊર્ધ્વલોકની યાત્રાના પ્રાતઃકાળે – અંતિમ ક્ષણોએ 'દિવ્ય ભાસ્કર' (૨૦-૫-૨૦૧૨)માં તેમના વિદ્યાર્થીઓ મૃદુલા, બિંદુ, ઉજમ, વિરેન્દ્ર, રંજના... ઉદ્દેશીને પત્ર પ્રકાશિત કર્યો છે. પ્રસંગ છે ઓમ થાનવી સંપાદિત 'અપને અપને અજ્ઞેય'ના રસાસ્વાદનો. આ લેખના માધ્યમથી પોતાના પરમ શ્રદ્ધેય સારસ્વત અજ્ઞેયજીને અંતિમ અર્ઘ્ય અર્પ્યો તેમજ ગુરુએ પોતાના શિષ્યોને પ્રસ્તુત ગ્રંથની ઉપાદેયતા અને સર્વતોમુખી પ્રતિભાના સર્જક અજ્ઞેયની પ્રાસંગિકતા દર્શાવી અજ્ઞેયનું રેખાચિત્ર લખવાનું જણાવી શિક્ષકધર્મ નિભાવી અંતિમ વિદાય લઈ લીધી. તેમના જ શબ્દોમાં ''ગુજરાત યુનિવર્સિટીના ભાષા-સાહિત્ય ભવનમાં જેમને હિન્દી

સાહિત્ય ભણાવવાનું મને મળ્યું છે તે સૌને યાદ કરું છું... હવે તમને એક લેસન – તમે અજ્ઞેયનું રેખાચિત્ર લખો. લિ. તમારા એક વખતના અધ્યાપક ભોળાભાઈ પટેલ.'' ગુરુ – શિષ્યો વચ્ચેનો આવો વિરલ સખ્યભાવ હવે ક્યાં જોવા મળશે ?

ઉલ્લેખનીય છે કે આવા ગરવા સ્વનામધન્ય સર્જક શ્રી ભોળાભાઈનું વતન સોજા, તા. કલોલ, જિ. ગાંધીનગર. જન્મ તા. ૭-૮-૧૯૩૪. પ્રાથમિક શિક્ષણ વતનમાં. માધ્યમિક શિક્ષણ ઉત્તર ગુજરાતના કાશી તરીકે પ્રસિદ્ધ સર્વ વિદ્યાલય, કડીમાં. અહીં ગુરુજનો મળ્યા શ્રી મોહનલાલ પટેલ, શ્રી અંબાલાલ પટેલ વગેરે કે જેમણે સાહિત્યસંસ્કારની દીક્ષા આપી, જ્યારે ઉદ્દીપનનું કાર્ય કર્યું વિદ્યાલયના સમૃદ્ધ ગ્રંથાલયે. અહીં ટાગોર, શરદબાબુ, તારાશંકર, વિ. સ. ખાંડેકર, સાને ગુરુજી, ર. વ. દેસાઈ, મુનશી, ધૂમકેતુ વગેરે ખૂબ વાંચ્યા. કહો કે અહીં સાહિત્ય પદારથની બારી ખૂલી ગઈ. કિશોરવયે જુવાર ટોતાં ટોતાં મેઘદૂત, ઉત્તરરામચરિત વગેરેના અનુવાદો વાંચ્યા અને સંસ્કૃત તેમનો પ્રથમ પ્રેમ થઈ પડ્યો.

બંગાળી પ્રત્યે અહીંથી જ ઘેલું લાગ્યું. અરે ! એસ. એસ. સી.માં હતા ત્યારે ૧૯૫૧માં જ માર્ગદર્શન મેળવવાની અપેક્ષાએ શાંતિનિકેતન એક પત્ર પણ લખેલો કે ત્યાં અભ્યાસ કરવા આવવાની ઇચ્છા છે. જો કે ત્યારે તો કોઈ પ્રત્યુત્તર મળ્યો નહોતો, પરંતુ છેક ૧૯૮૩માં ગૌરવ બક્ષતો જવાબ આવ્યો – શાંતિનિકેતનના કુલપતિએ એક વર્ષની ફેલોશિપ આપીને નિમંત્રિત કર્યા. આ ઉપરાંત ૧૯૮૬માં બંગાળ સરકારના નિમંત્રણથી રવીન્દ્રનાથ ટાગોરની ૧૨૫મી જન્મજયંતીની ઉજવણીમાં સહભાગી થવાનું સૌભાગ્ય સાંપડ્યું. આ બધું શક્ય બન્યું ધ્યેયનિષ્ઠ સાધનાથી. બંગાળી શીખવા માટે ૧૯૬૩થી ૧૯૭૮ સુધી નગીનદાસ પારેખનું શિષ્યત્વ સ્વીકાર્યું. સમયાન્તરે બંગાળીમાંથી ઉત્તર અનુવાદો પણ આપ્યા.

એસ.એસ.સી. પછી માણસા હાઈસ્કૂલમાં શિક્ષક તરીકે જોડાયા. નોકરી દરમિયાન ઉચ્ચ શિક્ષણ મેળવ્યું. ૧૯૬૦માં ગુજરાત યુનિવર્સિટીમાંથી હિન્દી વિષય સાથે એમ.એ.ની ડિગ્રી પ્રથમ વર્ગમાં પ્રથમ સ્થાને રહીને મેળવી. ૧૯૬૦-૧૯૬૯ સુધી સરદાર વલ્લભભાઈ કૉલેજમાં વ્યાખ્યાતા તરીકે અને ત્યારબાદ ૧૯૬૯થી ૧૯૯૪ સુધી – નિવૃત્તિપર્યંત ગુજરાત યુનિવર્સિટીના હિન્દી વિભાગમાં ક્રમશઃ વ્યાખ્યાતા, રીડર અને પ્રોફેસર અને અધ્યક્ષ તરીકે સેવાઓ આપી નિવૃત્ત થયા હતા. સાહિત્ય અકાદેમી, નવી દિલ્હીની કારોબારી સમિતિના સભ્ય તરીકે બે ટર્મ અને ગુજરાત સાહિત્ય અકાદમી, ગાંધીનગરના અધ્યક્ષ તરીકે પણ સેવાઓ આપી ચૂક્યા છે. ગુજરાતની અગ્રણી વિદ્વત સંસ્થા ગુજરાત વિદ્યાસભાનું પ્રમુખપદ પણ શોભાવ્યું હતું. મહાપ્રયાણના સમયે સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળ, કડીના પ્રમુખ તરીકે તેમજ ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ, અમદાવાદના નિર્વાચિત પ્રમુખ તરીકે સેવાઓ આપી રહ્યા હતા. ઈશ્વર સદ્ગતના આત્માને ચિર શાંતિ અર્પે તેવી આર્તભાવે પ્રાર્થના.

કૃતિત્વ

વિવેચન :

અધુના (૧૯૭૩), ભારતીય ટૂંકી વાર્તા (૧૯૭૩), પૂર્વાપર (૧૯૭૬), કાલપુરુષ (૧૯૭૯), અજ્ઞેય : એક અધ્યયન (૧૯૮૩), આધુનિકતા અને ગુજરાતી કવિતા (૧૯૮૭), સાહિત્યિક પરંપરાનો વિસ્તાર (૧૯૯૬), મળી માતૃભાષા મને ગુજરાતી (૧૯૯૭), ભારતીય ઉપન્યાસ પરંપરા ઔર ગ્રામકેન્દ્રી ઉપન્યાસ (૨૦૦૧), આવ, ગિરા ગુજરાતી (૨૦૦૧), વાગ્વિશેષ (૨૦૦૮), ઉમાશંકર જોશી : ભારતીય સાહિત્ય કે નિર્માતા (૨૦૧૦) **પરિચય પુસ્તિકા :** સુરદાસની કવિતા (૧૯૭૨), રવીન્દ્રનાથની સાહિત્યસૃષ્ટિ (૧૯૮૬),

અજ્ઞેય (૧૯૮૭), ઉમાશંકર જોશી (૧૯૮૯), જૈનેન્દ્રકુમાર (૧૯૯૨), કવિકથા : રવીન્દ્રનાથ અજ્ઞેય – ઉમાશંકર (પરિચય પુસ્તિકાનું સંયુક્ત પુનઃ મુદ્રણ, ૨૦૦૨).

નિબંધ :

વિદિશા (૧૯૮૦), કાંચનજંઘા (૧૯૮૫), બોલે ઝીણા મોર (૧૯૯૨), શાલભંજિકા (૧૯૯૨), વિદિશા (હિન્દી, ૧૯૯૪), ચૈતર ચમકે ચાંદની (૧૯૯૬), ચિત્રકૂટના ઘાટ પર (૨૦૦૧), તેષાં દિક્ષુ : ચૂંટેલા નિબંધો (૨૦૦૪) **ભ્રમણવૃત્ત :** પૂર્વોત્તર (૧૯૮૧), રાધે તારા ડુંગરિયા પર (૧૯૮૭), દેવોની ઘાટી (૧૯૮૯), દેવતાત્મા હિમાલય (૧૯૯૦), દેવોંકી ઘાટી (હિન્દી, ૧૯૯૮), દશ્યાવલી (૨૦૦૦), યુરોપ – અનુભવ (૨૦૦૪).

ગુજરાતીમાં અનુવાદ :

અસમિયામાંથી : સમકાલીન અસમિયા કવિતા (સંકલન, ૧૯૮૨), કામરૂપા (નિર્મલપ્રભા બરદલૈ, નીલમણિ ફુકન, હીરેન ભટ્ટાચાર્ય, ૧૯૯૩), સૂરજમુખીનું સ્વપ્ન (સૈયદ અબ્દુલ મલિક, ૧૯૯૪), ઈયારુ ઈંગમ (વીરેન્દ્રકુમાર ભટ્ટાચાર્ય, ૧૯૯૬), અસમિયા ગુજરાતી કવિતા (રાજેન્દ્ર શાહ, રાજેન્દ્ર શુક્લ, નવકાન્ત બરુઆ, નીલમણિ ફુકન, ૨૦૦૦, ૨૦૦૯), **ઉડિયામાંથી :** નિર્વાચિત કવિતા (સીતાકાન્ત મહાપાત્ર, ૨૦૧૧) **અંગ્રેજીમાંથી :** વિષ્ણુ દિગમ્બર (વી. આર. આથવલે, ૧૯૬૭), ગુરુ નાનક (ડૉ. નાનકસિંઘ, ૧૯૬૯), શંકરદેવ (ડૉ. મહેશ્વર નિયોગ, ૧૯૭૦), બંગાળી સાહિત્યના ઇતિહાસની રૂપરેખા (ડૉ. સુકુમાર સેન, ૧૯૮૨), સંપત્તિનું સર્જન (આર. એમ. લાલા, ૧૯૮૩), **બંગાળીમાંથી :** વનલતા સેન (જીવનાનંદ દાસ, ૧૯૭૬), સ્વર્ગની નીચે મનુષ્ય (સુનીલ ગંગોપાધ્યાય, ૧૯૭૭), ચાર અધ્યાય (રવીન્દ્રનાથ ઠાકુર, ૧૯૮૮), નગ્ન નિર્જન હાથ (જીવનાનંદ દાસ, ૨૦૦૫), બુદ્ધનું નિર્વાણ અને બીજી વાતો (સંકલન, ૨૦૦૪, ૨૦૦૮), ગીત પંચશતી (ઉમાશંકર જોશી અને અન્ય સાથે), આધુનિક બંગાળી કવિતા : **હિન્દીમાંથી :** ચિદમ્બરા (સુમિત્રા નંદન પંત; રઘુવીર ચૌધરી સાથે, ૧૯૬૯), સત્યાનુસરણ (શ્રી શ્રી અનુકૂલચંદ્ર, ૧૯૮૫), પુરુષોત્તમ (જગદીશ નારાયણ, ૧૯૮૬), ચૈતન્ય મહાપ્રભુ ૨ ખંડ (પ્રભુદત્ત બ્રહ્મચારી કૃત; નગીનદાસ પારેખ સાથે અનુ. ૧૯૮૮), મોહન રાકેશ (પ્રતિભા અગ્રવાલ, ૧૯૯૪), આંગણની પારદ્વાર (અજ્ઞેય, ૨૦૦૦), ગોત્રયાન (અયપ્પ પણિક્કર, ૨૦૦૩), હર્ષચરિત : એક સાંસ્કૃતિક અધ્યયન (વાસુદેવ શરણ અગ્રવાલ), બીજાના પગ (શ્રીકાન્ત વર્મા; બિન્દુ ભટ્ટ સાથે), **ગુજરાતીમાંથી હિન્દી :** નિશીથ એવમ્ અન્ય કવિતાએઁ (ઉમાશંકર જોશી; રઘુવીર ચૌધરી સાથે, ૧૯૬૮), પ્રાચીના (ઉમાશંકર જોશી; રઘુવીર ચૌધરી, સાથે ૧૯૬૮), અખા (ભૂપેન્દ્ર ત્રિવેદી, ૧૯૯૩)

સંપાદન :

ગુજરાતી સાહિત્યનો આઠમો દાયકો (૧૯૮૨), જીવનનું કાવ્ય (કાકાસાહેબના – ઉત્તમ નિબંધોનો સંચય, ૧૯૮૨), ગુજરાતી સાહિત્યનો નવમો દાયકો (ચંદ્રકાન્ત ટોપીવાળા સાથે ૧૯૯૨), નવમા દાયકાની કવિતા (ચંદ્રકાન્ત ટોપીવાળા સાથે, ૧૯૯૨), અનુ-આધુનિકતાવાદ (ચંદ્રકાન્ત ટોપીવાળા સાથે, ૧૯૯૩), વિદ્યાનિવાસ મિશ્ર કે લલિત નિબંધ (રામકુમાર ગુપ્ત સાથે, ૧૯૯૩), સમકાલીન ગુજરાતી કહાનિયાં (રામકુમાર ગુપ્ત સાથે, ૧૯૯૪), અદ્યતન ગુજરાતી કહાનિયાઁ (હિન્દી) (રામકુમાર ગુપ્ત, ૧૯૯૪) ઈશ (સહ સંપા. રમણલાલ જોશી, ૧૯૯૫), તુલનાત્મક કાવ્યશાસ્ત્ર કેટલાંક પરિમાણો (ચન્દ્રકાન્ત ટોપીવાળા, ૧૯૯૪), લોકલીલા કૃષ્ણ સુદામાનો એક પ્રવાસ (સહ સંપા. રમણલાલ જોશી, ૧૯૯૫) ગૂર્જર અદ્યતન નિબંધ સંચય (હર્ષદ ત્રિવેદી સાથે, ૧૯૯૮), ગૂર્જર લલિત નિબંધ સંચય (રમેશ ર. દવે સાથે, ૧૯૯૮), ગૂર્જર હાસ્ય નિબંધ સંચય (રતિલાલ બોરીસાગર સાથે, ૧૯૯૮), સાસુવહુની લઢાઈ (મહીપતરામ રૂપરામ

નીલકંઠ, ૧૯૯૮), ચૂંટેલાં કાવ્યો (ઉમાશંકર જોશી કૃત, ૧૯૯૯), અમર પ્રવાસ નિબંધો (૨૦૦૦), ઈસવીસન ૧૮૬૩ ઇંગ્લંડમાં પ્રવાસ (કરસનદાસ મૂળજી કૃત, ૨૦૦૧), પરબ (માસિક, ૧૯૭૪-૨૦૦૧),ગુજરાતી લલિત નિબંધ સંચયન (૨૦૦૧), રવીન્દ્ર પૂર્વચરિત (નગીનદાસ પારેખ કૃત, ૧૯૯૨ / ૨૦૦૨), રવીન્દ્ર સંચય (અનિલા દલાલ સાથે, ૨૦૦૩), ગુજરાતી સાહિત્યનો દશમો દાયકો (૨૦૦૩), કાલેલકર અધ્યયન ગ્રંથ (ચિમનલાલ ત્રિવેદી, ચીનુભાઈ નાયક, ૨૦૦૩), નીરક્ષીર વિવેક (નગીનદાસ પારેખના પસંદ કરેલા વિવેચન લેખો, ૨૦૦૪), યુગદ્રષ્ટા ઉમાશંકર (સહ સંપા. ચંદ્રકાન્ત શેઠ, રઘુવીર ચૌધરી, ધીરૂ પરીખ, ૧૯૯૨, ૨૦૦૪), શ્રેષ્ઠ ઉમાશંકર : ચયન (સહ સંપા. નિરંજન ભગત, ચિમનલાલ ત્રિવેદી, ૨૦૦૫), કુરુક્ષેત્ર (ન્હાનાલાલ કવિ, ૨૦૦૭), વૃંદાવન મોરલી વાગે છે (અનિલા દલાલ સાથે, ૨૦૦૭), સવ્યસાચી સારસ્વત (૨૦૦૭), પ્રશિષ્ટ ગુજરાતી લલિત નિબંધ (૨૦૦૮), શ્રેષ્ઠ ન્હાનાલાલ (નિરંજન ભગત અને ચિમનલાલ ત્રિવેદી સાથે, ૨૦૦૯), ગો-મંડળ પરિક્રમ એટલે પૃથ્વી પ્રદક્ષિણા (નંદકુંવરબા, ૨૦૦૯), શ્રેષ્ઠ ન્હાનાલાલ : ચયન (સહ સંપા. નિરંજન ભગત, ચિમનલાલ ત્રિવેદી, ૨૦૦૯), ઉમાશંકરનાં શ્રેષ્ઠ કાવ્યો (સહ સંપા. નિરંજન ભગત અને ચિમનલાલ ત્રિવેદી, ૨૦૧૦), ઓગણીસમી સદીનું ગુજરાતી પ્રવાસલેખન સંચય (સહ સંપા. તોરલ પટેલ, ૨૦૧૦), કૃષ્ણલાલ શ્રીધરાણીની સાહિત્યસૃષ્ટિ, ૨ ખંડ (સહ સંપા. તોરલ પટેલ અને સંકેત પારેખ, ૨૦૧૧), ગુજરાતી નિબંધનાં દોઢસો વર્ષ (૨૦૧૧), રવીન્દ્ર સંચયિતા (સહ સંપા. અનિલા દલાલ, ૨૦૧૨), ચંદ્રવદન ચી. મહેતા સમગ્ર નાટ્યકૃતિઓ, ૫ ખંડ, કુમારપાળ દેસાઈ, અરૂણ શ્રોફ સાથે, ૧૯૮૯-૨૦૦૬) ભારતીય કૃષ્ણભક્તિ કવિતા (અનિલા દલાલ સાથે), ઇંગ્લાંડની મુસાફરીનું વર્ણન (મહીપતરામ રૂપરામકૃત).

પારિતોષિક-એવૉર્ડ

૧૯૮૦ કાકાસાહેબ કાલેલકર પુરસ્કાર (વિદિશા માટે)

૧૯૮૯ સૌહાર્દ પુરસ્કાર (ઉત્તર પ્રદેશ હિન્દી સંસ્થાન, લખનઉ)

૧૯૯૦ હિન્દીના રાષ્ટ્રીય અધ્યાપક (યુ.જી.સી.)

૧૯૯૩ સાહિત્ય અકાદેમી, નવી દિલ્હી દ્વારા પુરસ્કૃત (૧૯૯૨, 'દેવોની ઘાટી')

૧૯૯૪ જેઠાલાલ જોશી પુરસ્કાર (ગુજરાત પ્રાન્તીય રાષ્ટ્રભાષા પ્રચાર સમિતિ)

૧૯૯૫ રણજિતરામ સુવર્ણચંદ્રક (ગુજરાત સાહિત્યસભા, અમદાવાદ)

૧૯૯૬ શ્રી અનંતરાય રાવળ વિવેચન એવૉર્ડ

૧૯૯૭ ઘનશ્યામદાસ સરાફ પુરસ્કાર ('દેવતાત્મા હિમાલય' માટે)

૧૯૯૯ સાહિત્ય અકાદેમી, નવી દિલ્હી (અનુવાદ પુરસ્કાર)

૨૦૦૩ સારસ્વત ગૌરવ એવૉર્ડ (અમદાવાદ)

૨૦૦૩ કેન્દ્રિય હિન્દી નિદેશાલય, નવી દિલ્હી દ્વારા અહિન્દી ભાષી લેખકને હિન્દી લેખન : 'ભારતીય ઉપન્યાસ પરંપરા ઔર ગ્રામકેન્દ્રી ઉપન્યાસ' માટે એક લાખ રૂપિયાનો પુરસ્કાર

૨૦૦૫ સ્વામી સચ્ચિદાનંદ પુરસ્કાર (ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદ)

૨૦૦૫ ગૌરવ પુરસ્કાર (ગુજરાત સાહિત્ય અકાદમી, ગાંધીનગર)

૨૦૦૫ મનુભાઈ પંચોળી દર્શક પુરસ્કાર (દર્શક ફાઉન્ડેશન)

૨૦૦૮ 'પદ્મશ્રી' થી વિભૂષિત (ભારતના રાષ્ટ્રપતિ દ્વારા)

૨૦૧૦ સાહિત્ય અકાદેમી, નવી દિલ્હી દ્વારા સર્વોચ્ચ સન્માન – ફેલોશિપ-થી વિભૂષિત

સંસ્થા-સમાચાર

યુનિવર્સિટી / કૉલેજ વિભાગ

અંગ્રેજી સુધારણા

બી. પી. કૉલેજ ઑફ બિઝનેસ એડમિનિસ્ટ્રેશન, ગાંધીનગર દ્વારા વિદ્યાર્થીઓમાં અંગ્રેજી ભાષા તેમજ સોફ્ટ – સ્કિલ અંગે સભાનતા કેળવવાના હેતુથી તા. ૧૩ જુલાઈ થી તા. ૨૫ જુલાઈ દરમિયાન આશરે ૩૭૦ વિદ્યાર્થીઓ માટે જાણીતા ટ્રેઈનર તેમજ સ્પીકર શ્રી આશિષ સોનીના વર્કશોપનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. ઇન્ચાર્જ તરીકે પ્રો. નિવેદિતા રાવલ, પ્રો. આશિષ ભૂવા તેમજ કૉલેજના લેબ ઇન્ચાર્જ શ્રી ધમેન્દ્ર રાઠોડે જવાબદારી નિભાવી હતી.

આરંગેત્રમ

આર. એન. લલિતકલા એકેડેમી, ગાંધીનગરની પ્રશિક્ષણાર્થિનીઓ કુ. નીવિ અને કુ. ઝીલ ના ૧૦મા આરંગેત્રમનો તા. ૫/૫/૧૨ના રોજ અને કુ. ઋત્વા પટેલના આરંગેત્રમનો તા. ૩/૬/૧૨ના રોજ ગાંધીનગરના ટાઉનહૉલમાં કડી સર્વ વિશ્વવિદ્યાલયના પ્રેસિડેન્ટ અને સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળ, કડી–ગાંધીનગરના ચેરમેન શ્રી વલ્લભભાઈ એમ. પટેલની અધ્યક્ષતામાં યોજાઈ ગયો. આ પ્રશિક્ષણાર્થિનીઓને શકુન્તલાબહેન ઓઝાએ નૃત્યની તાલીમ આપી હતી. સમારોહના અંતમાં પ્રત્યેક પ્રશિક્ષણાર્થિનીઓને કેળવણી મંડળ તરફથી પ્રોત્સાહક ઇનામ રૂપે રૂ. ૨૫૦૦/– અને પ્રમાણપત્ર એનાયત કરવામાં આવ્યાં હતાં. કાર્યક્રમનું આયોજન એકેડેમીનાં સંચાલિકા શ્રીમતી દિનાબહેન ડોડિયાના માર્ગદર્શન હેઠળ કરવામાં આવ્યું હતું.

ઓપનબુક એક્ઝામિનેશન વર્કશોપ

ફેકલ્ટી ઑફ એજ્યુકેશન દ્વારા અધ્યાપકોને ઓપનબુક એક્ઝામિનેશન વિશેની અધ્યાપન પદ્ધતિ, ક્લોઝબુક અને ઓપનબુક વચ્ચેનો તફાવત, પ્રશ્નબેંક વગેરે પ્રકારની શૈક્ષણિક સજ્જતામાં વધારો કરવાના હેતુથી તા. ૧૧, ૧૨ અને ૧૪ જૂનના રોજ ત્રિદિવસીય વર્કશોપનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું, જેમાં કડી સર્વ વિશ્વવિદ્યાલયની ગાંધીનગર અને કડીની બી.એડ્. અને એમ.એડ્. કૉલેજોના અધ્યાપકો ઉપસ્થિતિ રહ્યા હતા. સદર કાર્યક્રમમાં ફેકલ્ટી ઑફ એજ્યુકેશનનાં ડીનશ્રી ડૉ. વીણાબહેન પટેલે એક્ઝામ વિશે વિસ્તૃત માહિતી આપી હતી, તેમજ તેમણે ઓપનબુક એક્ઝામિનેશન પ્રમાણેનાં ડેમોલેશન રજૂ કર્યાં હતાં. કાર્યક્રમના કો–ઓર્ડિનેટર તરીકે ડૉ. સંજય ગુપ્તાએ કામગીરી સંભાળી હતી.

કેમ્પસ ઇન્ટરવ્યૂ

એસ. એસ. પટેલ કૉલેજ ઑફ એજ્યુકેશન અને એસ. એસ. પટેલ પી.ટી.સી. કૉલેજ, ગાંધીનગરના સંયુકત ઉપક્રમે તા. ૧૯/૪/૧૨ ના રોજ કેમ્પસ ઇન્ટરવ્યૂનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. કેમ્પસ ઇન્ટરવ્યૂમાં ગાંધીનગર શહેર અને જિલ્લાની ૧૩ શાળાઓએ ભાગ લીધો હતો. જેમાં બી.એડ્. અને પી.ટી.સી. કૉલેજના પ્રશિક્ષણાર્થીઓએ પ્રાથમિક, માધ્યમિક અને ઉચ્ચતર માધ્યમિક શાળાઓમાં ઇન્ટરવ્યૂ આપ્યાં હતાં. આ પૈકી ૭૫ જેટલા તાલીમાર્થીઓની પસંદગી કરવામાં આવી હતી, જેમને રૂ. ૨૦,૦૦૦/– જેટલા પગારે નિમણૂક કરવામાં આવશે. આ

પ્રસંગે સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળના ચેરમેન શ્રી વલ્લભભાઈ એમ. પટેલ, કેમ્પસ ડાયરેક્ટર ડૉ. સોમભાઈ પટેલ અને ફેકલ્ટી ઑફ એજ્યુકેશનનાં ડીન ડૉ. વીણાબહેન પટેલ ઉપસ્થિતિ રહ્યાં હતાં. એસ. એસ.પટેલ કૉલેજ ઑફ એજ્યુકેશનનાં એચ.ઓ.ડી. ડૉ. જિજ્ઞાસાબહેન જોશી અને પી.ટી.સી. કૉલેજનાં પ્રિન્સિપાલ કિરણબહેન પટેલે આ પ્રસંગે ઉપસ્થિતિ મહાનુભાવો અને સૌ શાળા – સંચાલકોનો આભાર માન્યો હતો.

ગુરુપૂર્ણિમા

* એસ. વી. કૉલેજ ઑફ એજ્યુકેશન, કડી દ્વારા તા. ૦૩/૦૭/૨૦૧૨ ના રોજ ગુરુપૂર્ણિમા કાર્યક્રમની ઉત્સાહભેર ઉજવણી કરવામાં આવી. ગુરુપૂર્ણિમાનો મહિમા વ્યકત કરતાં ભજનો, લઘુનાટક, પ્રેરણાગીત તથા બોધપૂર્ણ પ્રવચનો તાલીમાર્થીઓ દ્વારા રજૂ કરવામાં આવ્યાં હતાં. મહેમાનપદે ઉપસ્થિતિ ડૉ. રામભાઈ પટેલ તથા ડૉ. મણિભાઈ પટેલે પ્રસંગોચિત ઉદ્‌બોધન કર્યાં હતાં. કાર્યક્રમના પ્રારંભમાં આચાર્યશ્રી ડૉ. રમેશભાઈ ઉકાવતે સ્વાગત પ્રવચન કર્યું હતું અને કાર્યક્રમના અંતમાં પ્રા. અલકાબહેન પંચાલે આભારવિધિ કરી હતી.

* આર. એચ. પટેલ ઇંગ્લિશ મીડિયમ બી.એડ્. કૉલેજ, ગાંધીનગરમાં ગુરુપૂર્ણિમાના પાવન પ્રસંગે પ્રશિક્ષણાર્થિઓએ તા. ૪/૭/૧૨ના રોજ ગુરુજનોને ગુલાબ પુષ્પો અર્પણ કરી, આશીર્વાદ મેળવી ગુરુ મહિમા સંબંધી પ્રાર્થના, વક્તવ્યો, ભજનો, દુહા – સાખિયો તેમજ નાટક જેવા પ્રસંગોચિત કાર્યક્રમોથી ગુરુ–શિષ્ય વચ્ચેના સંબંધોને ઉષ્મા સભર બનાવ્યા હતા. કૉલેજનાં H.O.D. ડૉ. કુસુમ યાદવે શિષ્યોને ભાવિ સમાજને અનેક પડકારોથી બચવાનો સંદેશ આપી આદર્શ શિક્ષકની ભૂમિકા નિભાવવાની ગુરુ–દક્ષિણા માંગી હતી.

* ગુરુપૂર્ણિમા પર્વ નિમિત્તે ઉમા આર્ટ્સ અને નાથીબા કોમર્સ મહિલા કૉલેજ, ગાંધીનગરમાં ગુરુવંદના કાર્યક્રમનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. કાર્યક્રમની શરૂઆતમાં સ્તવન બાદ વિદ્યાર્થિનીઓએ ગુરુઓનું તિલક તથા પુષ્પગુચ્છ વડે સન્માન કર્યું હતું. સંસ્કૃત વિભાગનાં અધ્યક્ષ ડૉ. યોગિનીબહેન વ્યાસ અને પ્રો. રૂપકમલ ચાવડાના માર્ગદર્શન હેઠળ વિદ્યાર્થિનીઓએ ગુરુના માહાત્મ્યને રજૂ કરતાં વક્તવ્યો, સ્તુતિગાન તથા ગુરુ-શિષ્યની પ્રાચીન અને અર્વાચીન પરંપરાને રજૂ કરતો અભિનય વગેરે ભાવવાહી રીતે રજૂ કર્યો હતો. પ્રો. જયરામભાઈ પટેલે પ્રાસંગિક ઉદ્‌બોધન કર્યું હતું. આચાર્યા ડૉ. અમૃતાબહેન પટેલે આશીર્વચન પાઠવ્યા હતા.

* તા. ૦૩/૦૭/૨૦૧૨નાં રોજ બી. પી. કૉલેજ ઑફ બિઝનેસ એડમિનિસ્ટ્રેશન, ગાંધીનગર દ્વારા ગુરુપૂર્ણિમા ના પવિત્ર અવસરે વક્તૃત્વ સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવેલું, જેમાં ૧૮ સ્પર્ધકોએ ભાગ લીધેલો. પ્રથમ, દ્વિતીય અને તૃતીય ક્રમ પર અનુક્રમે નીરજ સિંગ, કુ. પાયલબા જાડેજા તેમજ જય પરીખ વિજેતા જાહેર થયેલા. આ પ્રસંગે સંસ્થાના વડા ડૉ. રમાન્કાન્ત પૃષ્ટિએ ગુરુ–શિષ્ય સંબંધનું જીવનમાં મહત્ત્વ સમજાવતાં આશીર્વચન પાઠવ્યા હતા. કાર્યક્રમના ઇન્ચાર્જ તરીકે પ્રો. નીરવ જોષીએ જવાબદારી નિભાવી હતી.

ટેટ

ડૉ. રામભાઈ એમ. પટેલ પી.ટી.સી. કૉલેજ, કડીના ૨૨ પ્રશિક્ષાર્થીઓ તા. ૧૦/૦૬/૨૦૧૨ ના રોજ લેવાયેલી TETની પરીક્ષામાં સારા ગુણે પાસ થયા છે, જેમાં ચૌહાણ અર્પિતાબહેન આઈ. એ ૧૧૦ માર્કસ મેળવી પ્રથમ સ્થાન પ્રાપ્ત કરેલ છે. ઉલ્લેખનીય છે કે આ પરીક્ષાનું પરિણામ ફક્ત ૩.૨૦ % આવ્યું હતું.

દૂરવર્તી કેન્દ્ર

વીપીએમપી પોલિટેક્નિક, ગાંધીનગરને ઇન્ડિયન ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઑફ ટેક્નોલોજી, મુંબઈ અને માનવ સંસાધન મંત્રાલય, ભારત સરકારના 'નેશનલ મિશન ઓન એજ્યુકેશન' (આઈસીટી)

દ્વારા દૂરવર્તી કેન્દ્રની મંજૂરી મળતાં, પ્રથમ મેગા વર્કશોપ 'રિસર્ચ મેથોડોલોજી' વિષય ઉપર ૨૫ જૂન થી ૪ જુલાઈ દરમિયાન એન્જિનિયરિંગ ફેકલ્ટી માટે રાખવામાં આવ્યો હતો. આ વર્કશોપ ઇન્ડિયન સોસાયટી ફોર ટેક્નિકલ એજ્યુકેશન, નવી દિલ્હી અને ઇન્ડિયન ઇન્સ્ટિટ્યૂટ ઑફ ટેક્નોલોજી, મુંબઈના સંયુકત ઉપક્રમે યોજવામાં આવ્યો હતો.

પરિસંવાદ

એસ. એસ. પટેલ કૉલેજ ઑફ એજ્યુકેશન, ગાંધીનગરમાં તા. ૧૬ અને ૧૭ જુલાઈએ ફેકલ્ટી ઑફ એજ્યુકેશનનાં ડીન પ્રો. શ્રીમતી વીણાબહેન પટેલના ડાયરેકટરપદે નેક સ્પોન્સર નેશનલ સેમિનાર 'Role of IQAC for Quality Enhancement in Education' વિષય પર યોજાઈ ગયો. આ પ્રસંગે ઉપસ્થિતિ મહેમાનો સર્વશ્રી હેમચંદ્રાચાર્ય ઉત્તર ગુજરાત યુનિવર્સિટીના પૂર્વ ઉપકુલપતિ પ્રો. જિતેન્દ્રભાઈ પંચોલી, સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળના વાઈસ ચેરમેન શ્રી ડૉ. કનુભાઈ પટેલ, કડી સર્વ વિશ્વવિદ્યાલયના ડાયરેકટર શ્રી ડી. ટી. કાપડિયા, કેમ્પસ ડાયરેકટર ડૉ. સોમભાઈ પટેલે અને ડૉ. આર. જે. વ્યાસે પ્રસંગને અનુરૂપ ઉદ્‌બોધનો કર્યાં હતાં. પ્રો. જિતેન્દ્રભાઈ પંચોલીએ કી નોટ એડ્રેસ, અને ડૉ. દાઉદભાઈ ઘાંચી તથા શૈલેન્દ્ર ગુપ્તાએ પ્લેનરી સેશન આપ્યું હતું. ગુજરાત અને અન્ય રાજ્યોની યુનિવર્સિટીઓમાંથી ઉપસ્થિત અધ્યાપકોએ ગુણવત્તાયુક્ત શિક્ષણ માટે આઈકયુએસીનો શું રોલ હોઈ શકે તે વિષયવસ્તુ અને રિસર્ચ આધારિત પેપરો રજૂ કર્યાં હતાં. આ કાર્યક્રમમાં ચેરપર્સન્સ તરીકે ડૉ. આર. જે. વ્યાસ, ડૉ. સતીશ શુક્લ, ડૉ. ઉકાવત અને પ્રો. આરતીબહેન પટેલે સેવાઓ આપી હતી. બીજા દિવસે કેલોરેક્ષ યુનિવર્સિટીના રજિસ્ટ્રાર ડૉ. શૈલેન્દ્ર ગુપ્તાએ વિવિધ ઉદાહરણો સાથે શિક્ષણની ગુણવત્તા વિશે પોતાના વિચારો વ્યકત કર્યાં હતા. ગુજરાત વિદ્યાપીઠનાં પ્રો. આરતીબહેન પટેલ અને ગુજરાત યુનિવર્સિટીના મનોવિજ્ઞાન અને શિક્ષણભવનના અધ્યક્ષ પ્રો. આર. એચ. પટેલે સ્ટડી પેપર, રિસર્ચ પેપર અને રિવ્યુ પેપર વિશેની માહિતી આપી હતી. કાર્યક્રમના અંતે એસ. એસ. પટેલ કૉલેજ ઑફ એજ્યુકેશનના એચ.ઓ.ડી. ડૉ. જિજ્ઞાસાબહેન જોશીએ આભાર વ્યકત કર્યો હતો. સેમિનાર કન્વીનર તરીકે ડૉ. સંજય ગુપ્તા અને કો–ઓર્ડિનેટર તરીકે ડૉ. જિજ્ઞાસાબહેન જોશી, ડૉ. ભાવિક શાહ અને પ્રા. દેવાંગ મહેતાએ કામગીરી બજાવી હતી.

યોગ શિબિર

એસ. વી. કૉલેજ ઑફ કોમર્સ, કડી દ્વારા પંદર દિવસનો યોગ – શિબિર કાર્યક્રમ તારીખ ૨થી ૧૮/૭/૨૦૧૨ ના રોજ યોજાઈ ગયો. વિદ્યાર્થીઓની શારીરિક અને માનસિક તંદુરસ્તી વધે તે માટે યોજાયેલ આ શિબિરમાં એફ.વાય.બી.કોમ. ના ૩૦ વિદ્યાર્થીઓ જોડાયા હતા. શિબિર દરમિયાન વિદ્યાર્થીઓએ વિવિધ આસનો, ભારતીય યોગ દર્શન અને આહાર વિજ્ઞાનનો અભ્યાસ કરી નીરોગી જીવન માટેનું ભાથું પ્રાપ્ત કર્યું હતું. યોગ શિબિરનાં પ્રાચાર્ય તરીકે કૉલેજના ડૉ. રીકીનભાઈ પટેલે સેવાઓ આપી હતી. પ્રા. સમીરભાઈ પંડ્યાએ કાર્યક્રમનું સંચાલન કર્યું હતું.

રોલર સ્કેટિંગ સ્પર્ધા

આર. એન. લલિતકલા એકેડેમી, ગાંધીનગરના મમતા સ્પોર્ટ્સ સેન્ટર દ્વારા નોન–સ્ટોપ ૨ કલાકની રોલર સ્કેટિંગ સ્પર્ધાનું આયોજન તા. ૨૫/૫/૧૨ના રોજ કરવામાં આવ્યું હતું. આ સ્પર્ધામાં ગાંધીનગર તથા અમદાવાદના કે.જી. થી ધોરણ–૧૨ સુધીના ૧૨૫ વિદ્યાર્થી – વિદ્યાર્થિનીઓએ ભાગ લીધો હતો. આ કાર્યક્રમમાં માનવંતા મહેમાનપદે ફેકલ્ટી ઑફ એજ્યુકેશનનાં ડીન ડૉ. શ્રીમતી વીણાબહેન પટેલ તથા કેમ્પસ ડાયરેકટર ડૉ. સોમભાઈ પટેલ ઉપસ્થિત રહ્યાં હતાં. કાર્યક્રમનું સંચાલન એકેડેમીનાં સંચાલિકા દિનાબહેન ડોડિયાના માર્ગદર્શન હેઠળ કરવામાં આવ્યું હતું.

વક્તૃત્વ સ્પર્ધા

એસ. એસ. પટેલ કૉલેજ ઑફ એજ્યુકેશન, ગાંધીનગરમાં તા. ૨૮/૬/૧૨ના રોજ તાલીમાર્થીઓને ગુરુનું મહત્ત્વ સમજાય તે હેતુથી 'પ્રવર્તમાન સમય – ગુરુ અને ગુરુપૂર્ણિમા' – વિષય પર વક્તૃત્વ સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. આ સ્પર્ધામાં ગામીત સ્રોતિ પ્રથમ, પટેલ દીપાલી દ્વિતીય અને બારિયા હેમાંગીની તૃતીય સ્થાને વિજેતા રહ્યાં હતાં.

વ્યાખ્યાન

બી. પી. કૉલેજ ઑફ બિઝનેસ એડમિનિસ્ટ્રેશન, ગાંધીનગરના વડા ડૉ. રમકાન્ત પુષ્ટિ દ્વારા તા. ૧૪ જુલાઈના રોજ અધ્યાપકોમાં સંશોધન અંગે જાગરૂકતા કેળવવાના આશયથી 'રિર્સચના પ્રકારો' વિશે તથા વિદ્યાર્થીઓ માટે તા. ૨૧ જુલાઈના રોજ શ્રી ગૌરાંગ લોટિયાના 'માર્કેટિંગ પ્રેક્ટિસીઝ એન્ડ ક્વેરિઝ' વિષય પરનાં વ્યાખ્યાનોનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું.

વૃક્ષારોપણ

બી. પી. કૉલેજ ઑફ બિઝનેસ એડમિનિસ્ટ્રેશન, ગાંધીનગર દ્વારા તા. ૧૪ અને ૧૫ જુલાઈના રોજ વનશ્રી ફાઉન્ડેશન, ગાંધીનગરના સંયુક્ત ઉપક્રમે વૃક્ષયાત્રા કાર્યક્રમમાં આશરે ૧૧૦ વિદ્યાર્થીઓએ ભાગ લીધો હતો. આ કાર્યક્રમમાં સેક્ટર – ૧ થી સેક્ટર – ૩૦ સુધીમાં છોડની વહેંચણી કરવાની સાથે સાથે ૧૦,૦૦૦ થી વધુ છોડનું રોપણ કરવામાં આવેલ. કાર્યક્રમ ઇન્ચાર્જ તરીકે પ્રો. માર્ગી દેસાઈએ જવાબદારી નિભાવી હતી.

શૈક્ષણિક પ્રવાસ

તા. ૧૧ જુલાઈના રોજ બી. પી. કૉલેજ ઑફ બિઝનેસ એડમિનિસ્ટ્રેશન, ગાંધીનગર દ્વારા વિદ્યાર્થીઓ માટે સાયન્સ સિટી, અમદાવાદની મુલાકાતનું આયોજન કરવામાં આવેલ, જેમાં ૧૦૬ વિદ્યાર્થીઓ જોડાયા હતા. વિદ્યાર્થીઓએ જીવનમાં વૈજ્ઞાનિક અભિગમ કઈ રીતે કેળવે તે અંગે વક્તવ્ય પણ માણેલ. પ્રો. મેથ્યુ જ્હોન, પ્રો. માર્ગી દેસાઈ તથા શ્રી ધર્મેન્દ્ર રાઠોડે આ કાર્યક્રમના ઇન્ચાર્જ તરીકે સેવાઓ આપી હતી.

સમર કેમ્પ – ૨૦૧૨

આર. એન. લલિત કલા એકેડેમી, ગાંધીનગર દ્વારા સમર કેમ્પ – ૨૦૧૨નું આયોજન કરવામાં આવેલ તેનો સાંસ્કૃતિક રંગારંગ કાર્યક્રમ તા. ૫/૬/૨૦૧૨ના રોજ સંસ્થાના બ્રહ્માણી કૃપા મેમોરિયલ હૉલ ખાતે યોજવામાં આવ્યો હતો. આ સમર કેમ્પમાં ૭૫૦ થી વધુ તાલીમાર્થિઓ જોડાયા હતા. આ પ્રસંગે ભરતનાટ્યમ, બેબીડાન્સ, યોગ, કથક, કરાટે, વેસ્ટન ડાન્સ, ફોક ડાન્સ, ડ્રામા, સ્કેટિંગ, ઇંગ્લિશ કવીઝ વગેરેનું નિર્દશન કરવામાં આવેલ. આ તાલીમાર્થિઓના પ્રશિક્ષક તરીકે સર્વશ્રી શકુંતલાબહેન ઓઝા (ભરત નાટ્યમ), સૌરભભાઈ પટેલ (ગાયન વાદન), દિનાબહેન ડોડિયા અને કિંજલ પટેલ (કથક), જયદીપ ઉપલા (ફોક ડાન્સ, વેસ્ટન ડાન્સ, બેબી ડાન્સ), શ્રીમતી પારૂલબહેન ઉપાધ્યાય (બ્યુટી પાર્લર), અલ્પેશકુમાર સેન્સાઈ અને સેલ્વાકુમાર (કરાટે), વસીમ મનસુરી અને પુલકિત પડતાલ (સ્કેટિંગ), કુંતલાઈ નિમાવત (ડ્રામા), અનિતાબહેન પસીતા (સ્પોકન ઇંગ્લિશ) અને હેમચન્દ્ર થોરાટે (યોગ) સેવાઓ આપી હતી. સમગ્ર કાર્યક્રમનું આયોજન શ્રીમતી દિનાબહેન ડોડિયાના માર્ગદર્શન હેઠળ અને સંચાલન અનિતાબહેન પસીતાએ કર્યું હતું.

સમર–વર્કશોપ

બી. પી. કૉલેજ ઑફ બિઝનેસ એડમિનિસ્ટ્રેશન, ગાંધીનગરમાં તા. ૧૮ થી ૨૪–૫–૧૨ દરમિયાન ધોરણ–૧૨ ની પરીક્ષા આપેલા વિદ્યાર્થીઓ માટે નિઃશુલ્ક વર્કશોપનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું, જેનો ૪૦ વિદ્યાર્થીઓએ લાભ લીધો હતો.

સોફ્ટ સ્કિલ્સ ઇમ્પ્રુવમેન્ટ

તાજેતરમાં ઉમા આર્ટ્સ અને નાથીબા કોમર્સ મહિલા કૉલેજ, ગાંધીનગરની વિદ્યાર્થિનીઓ માટે

યુ.જી.સી. ની આર્થિક સહાયથી અમદાવાદ મેનેજમેન્ટ એસોસિએશનના (AMA) ઉપક્રમે Improvment of Soft Skillsના વર્કશોપનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું, જેમાં જુદા જુદા વિષયની ૪૯ વિદ્યાર્થિનીઓ જોડાઈ હતી. આ વર્કશોપમાં કોર્પોરેટ ટ્રેઈનર એન્ડ મેનેજમેન્ટ કન્સલટન્ટ શ્રી હિરેન વકીલ દ્વારા હકારાત્મક અભિગમ, સ્વ. વિકાસ, માઈન્ડ પાવર અને ટાઇમ મેનેજમેન્ટ જેવા વિષયોને આવરી લઈને ટ્રેનિંગ આપવામાં આવી હતી.

સોલો સોંગ સ્પર્ધા

તા. ૭/૭/૧૨ના રોજ આર. એચ. પટેલ ઇંગ્લિશ મીડિયમ બી.એડ્. કૉલેજ, ગાંધીનગરમાં ગાન પ્રતિયોગિતા (સોલો સોંગ કોમ્પટિશન)નું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. કુલ ૧૯ પ્રશિક્ષણાર્થિઓ વચ્ચે યોજાયેલ આ પ્રતિયોગિતામાં પ્રથમ નંબરે અપર્ણા કુલકર્ણી, દ્વિતીય નંબરે સંતોષ ગોન્ડકર તથા તૃતીય નંબરે ડી. મલરાઝાંગન પ્રિયંકા ગૌતમ વિજ્યી બન્યાં હતાં.

સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષામાં

અશ્વિનભાઈ એ. પટેલ કોમર્સ કૉલેજ, ગાંધીનગર દ્વારા તા. ૧૭ અને ૧૯ જુલાઈ, ૨૦૧૨ના રોજ વિદ્યાર્થીઓ સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષાઓ માટે લાઇબ્રેરીનો બહોળો ઉપયોગ કરતા થાય તે માટે પરિસંવાદનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. આ પરિસંવાદમાં એસ.વાય.બી.કોમના વિદ્યાર્થીઓએ ઉત્સાહપૂર્વક ભાગ લીધો હતો. લાઇબ્રેરિયન શ્રીમતી શ્રદ્ધાબહેન પંડ્યા તથા પ્રા. જીનાલીબહેન પટેલ દ્વારા સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષા માટે લાઇબ્રેરીનો ઉપયોગ કરવા માટે જરૂરી માર્ગદર્શન આપવામાં આવ્યું હતું. વિદ્યાર્થીઓને એલ.સી.ડી. પ્રેઝન્ટેશન અને પ્રશ્નોત્તરી દ્વારા આવશ્યક માહિતી પૂરી પાડવામાં આવી હતી. આ ઉપરાંત તા. ૫, ૬ અને ૧૩ જુલાઈના દિવસોમાં કેરિયર ગાઈડન્સ અંતર્ગત સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષાઓમાં સફળતા કઈ રીતે હાંસલ કરવી તે વિશે કૉલેજની ત્રણેય કક્ષાઓ માટે અલગ અલગ વર્કશોપનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું.

હેન્ડબૉલ સ્પર્ધા

તાજેતરમાં ગાંધીનગર S.A.I. કોમ્પલેક્ષ ખાતે ગાંધીનગર જિલ્લા ઓપન મહિલા હેન્ડબૉલ સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું, જેમાં ઉમા આર્ટ્સ અને નાથીબા કોમર્સ મહિલા કૉલેજ, ગાંધીનગરની ટીમ ચેમ્પિયન બની હતી. અભિનંદન.

શાળા વિભાગ

ઔદ્યોગિક મુલાકાત

શ્રી કે. એ. પટેલ શિવહરિ સેકન્ડરી એન્ડ હાયર સેકન્ડરી ઇંગ્લિશ મીડિયમ સ્કૂલ, કડીમાં તારીખ ૧૩/૭/૧૨ ના રોજ ધોરણ – ૧૦ થી ૧૨ કોમર્સના વિદ્યાર્થીઓ માટે ગોપાલ ગ્લાસ ફેક્ટરીની મુલાકાતનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. જેમાં વિદ્યાર્થીઓએ વિવિધ પ્રકારના ગ્લાસ નિહાળી તે કઈ રીતે બને છે તેની માહિતી મેળવી હતી. આ ઉપરાંત તા. ૧૪/૭/૧૨ના રોજ શાળાના કેમ્પસમાં ફળાઉ વૃક્ષોનું વાવેતર કરવામાં આવ્યું તેમજ મહેંદી સ્પર્ધાનું આયોજન પણ કરવામાં આવ્યું હતું.

કેન્દ્રીય કમ્પ્યૂટર લેબનું ઉદ્‌ઘાટન

સર્વ વિદ્યાલય, કડી કેમ્પસમાં સેન્ટ્રલાઈઝ કમ્પ્યૂટર લેબનું તા. ૨૫–૬–૨૦૧૨ના રોજ સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળ, કડીના પ્રમુખ ડૉ. રામભાઈ એમ. પટેલના હસ્તે ઉદ્‌ઘાટન કરવામાં આવ્યું. સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળ, કડી–ગાંધીનગરના ચેરમેન તથા કડી સર્વ વિશ્વવિદ્યાલય, ગાંધીનગરના પ્રેસિડેન્ટ શ્રી

વલ્લભભાઈ એમ. પટેલના હસ્તે કમ્પ્યૂટર ઓન કરી ૧૦૦ કમ્પ્યૂટર સજ્જ અદ્યતન એરકન્ડિશનર લેબને ખુલ્લી મૂકવામાં આવી હતી. આ પ્રસંગે મંત્રી શ્રી ડૉ. મણિભાઈ એસ. પટેલ, શ્રી ખોડાભાઈ એચ. પટેલ, ડૉ. રમણભાઈ જી. પટેલ તથા ભગિની સંસ્થાઓના પ્રિન્સિપાલશ્રીઓ વગેરે સૌ ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આ કમ્પ્યૂટર લેબનો લાભ કેમ્પસમાં અભ્યાસ કરતા સ્કૂલના વિદ્યાર્થીઓ મેળવશે.

ગુરુપૂર્ણિમા

* તા. ૩/૭/૧૨ના રોજ શ્રીમતી આર. જી. પટેલ માધ્યમિક અને એસ. બી. પટેલ ઉ.મા. કન્યા શાળા, ગાંધીનગરમાં ગુરુપૂર્ણિમાની ઉત્સાહભેર ઉજવણી કરવામાં આવી. કાર્યક્રમના પ્રારંભમાં ગુરુ વિષયક સુમધુર ગીતોની રજૂઆત કરવામાં આવી હતી. ત્યારબાદ 'ગુરુના મહત્ત્વ વિશે અસરકારક વક્તવ્યો રજૂ કરવામાં આવ્યાં. આ ઉપરાંત ગુરુશિષ્યના સંબંધ વિશે ચિત્રસ્પર્ધાનું પણ આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. આ પવિત્ર દિવસે શાળાના શિક્ષકોનું વિદ્યાર્થિનીઓ દ્વારા પૂજન પણ કરવામાં આવ્યું હતું. કાર્યક્રમના અંતમાં શાળાનાં આચાર્યા શ્રીમતી સુધાબહેન પટેલે ગુરુપૂર્ણિમાનું મહત્ત્વ સમજાવતું વક્તવ્ય આપી કાર્યક્રમની પૂર્ણાહુતિ કરી હતી.

* શ્રી કે. એ. પટેલ શિવહરી સેકન્ડરી એન્ડ હાયર સેકન્ડરી ઇંગ્લિશ મીડિયમ સ્કૂલ, કડીમાં ગુરુપૂર્ણિમાની ઉજવણી કરવામાં આવી હતી. આ પ્રસંગે શાળાના વિદ્યાર્થીઓએ ગુરુપૂજન કર્યું હતું. શાળાના આચાર્યશ્રી રાજકુમાર વર્માએ તેમજ શિક્ષકોએ તેમનાં ઉદ્‌બોધનમાં ગુરુ-શિષ્યના સંબંધનું મહત્ત્વ સમજાવ્યું હતું.

* શેઠ સી. એમ. હાઈસ્કૂલ એન્ડ હાયર સેકન્ડરી સ્કૂલ, ગાંધીનગર ખાતે ગુરુપૂર્ણિમા કાર્યક્રમનું આયોજન કરવામાં આવ્યું. ગુરુવંદનાથી કાર્યક્રમની શરૂઆત કરવામાં આવી હતી. આ પ્રસંગે આચાર્યશ્રી બચુભાઈ કે. પટેલે વિદ્યાર્થીઓને ગુરુપૂર્ણિમાનું મહત્ત્વ સમજાવ્યું હતું. સુપરવાઈઝર શ્રી પ્રહ્લાદભાઈ તથા શ્રી કનુભાઈ પટેલે પ્રાસંગિક ઉદ્‌બોધન કર્યું હતું. તેમજ વિદ્યાર્થીઓએ ગુરુમહિમા વિશે વક્તવ્યો આપ્યાં હતાં. તેમજ ગુરુજનોનું કુમકુમતિલકથી પૂજન કરવામાં આવ્યું હતું. કાર્યક્રમનું સંચાલન શ્રી હસમુખભાઈ બી. પટેલે કર્યું હતું.

* શ્રી જે. બી. પ્રાથમિક શાળા, ગાંધીનગરમાં તા. ૩/૭/૧૨ ના રોજ વિદ્યાર્થીઓ અને શિક્ષક ભાઈ–બહેનોના સહિયારા પ્રયાસથી ગુરુપૂર્ણિમા અને ધોરણ–૧માં નવા દાખલ થયેલા વિદ્યાર્થીઓના પ્રવેશોત્સવનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. આચાર્યા શ્રીમતી નીવાબહેન પટેલે વિદ્યાર્થીઓને આશીર્વાદ પાઠવ્યા હતા. આ પ્રસંગે વિદ્યાર્થીઓએ ગુરુ–મહિમાને વ્યક્ત કરતાં ગીતો અને વક્તવ્યો રજૂ કર્યાં હતાં.

* શ્રીમતી આર. એન. પટેલ પ્રાયમરી સ્કૂલ, ગાંધીનગર દ્વારા તા. ૩/૭/૨૦૧૨ના રોજ ગુરૂપૂર્ણિમાના પાવન પર્વની ઉજવણી કરવામાં આવી. શાળામાં વિદ્યાર્થીઓ માટે વક્તવ્ય સ્પર્ધા, નાટક અને ગીત સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું. શાળાના આચાર્યશ્રી દશરથભાઈ કે. પટેલે ગુરુનું માન જાળવવું, આજ્ઞાનું પાલન કરવું, ગૃહકાર્ય નિયમિત કરવું વગેરે જેવા સંકલ્પો વિદ્યાર્થીઓ પાસે લેવડાવ્યા હતા તથા બાળકોને આશીર્વચન પાઠવ્યા હતા.

પ્રવેશોત્સવ

તારીખ ૧૧/૬/૧૨ ના રોજ શ્રી કે. એ. પટેલ શિવહરી સેકન્ડરી એન્ડ હાયર સેકન્ડરી ઇંગ્લિશ મીડિયમ સ્કૂલ, કડીમાં પ્રવેશોત્સવનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. આ પ્રસંગે અતિથિપદે ડૉ. રામભાઈ પટેલ તથા ડૉ. મણિભાઈ પટેલ હાજર રહ્યા હતા. શાળાના આચાર્યશ્રી રાજકુમાર વર્માએ વિદ્યાર્થીઓને આવકાર્યા હતા. જ્યારે અતિથિશ્રીઓએ તેમનાં મનનીય પ્રવચનોમાં વિદ્યાર્થીઓને આવકારી અભ્યાસનું મહત્ત્વ સમજાવ્યું હતું. આ ઉપરાંત શાળામાં સમર કેમ્પનું

આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. દસ દિવસ ચાલેલા આ કેમ્પમાં વિવિધ શાળાઓના કુલ ૭૦ જેટલા વિદ્યાર્થીઓએ ભાગ લીધો હતો. આ કેમ્પમાં કરાટે સ્કેટિંગ, યોગ, સંગીત, ઇંગ્લિશ સ્પીકિંગ તથા વિવિધ પ્રકારની રમતોનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું.

મેડિકલ પ્રવેશ

શેઠ સી. એમ. હાઈસ્કૂલ એન્ડ હાયર સેકન્ડરી સ્કૂલ, ગાંધીનગરના નીચેના વિદ્યાર્થીઓએ ચાલુ શૈક્ષણિક વર્ષમાં મેડિકલ અને ડેન્ટલમાં પ્રવેશ મેળવ્યો. ઉજ્જ્વલ પરિણામો માટે આચાર્યશ્રી બચુભાઈ પટેલ અને શાળા પરિવારને અભિનંદન. **મેડિકલ :** પટેલ પાર્થ એસ. (બી.જે.), પટેલ તુષાર આર. (બી.જે.), પટેલ અર્ચિતા આર. (બી.જે.), પ્રજાપતિ પ્રતીક એસ. (બી.જે.), અડાલજા મેહુલ એસ. (બી.જે.), પટેલ કિંન્નર આર. (બી.જે.), ખરાડી નયન કે. (બી.જે.), ગાંધી કવન એન. (બરોડા), વસાવા વિકાસ જી. (સુરત), ગંધર્વ જૈમિન એસ. (સુરત), બ્રહ્મભટ્ટ ઉમંગ (રાજકોટ), વણકર જતીન (રાજકોટ), વડેરા તેજસ એસ. (જામનગર), ભટ્ટ કમલેશ (જામનગર), ગજેરા શૈલી (જામનગર), પ્રજાપતિ પ્રકાશ આર. (જામનગર), પટેલ પિંકલ વી. (વી.એસ.), સુરેલા ધેનીત એમ. (વી.એસ.), પટેલ આકાશ જી. (ગાંધીનગર), ત્રિવેદી નિર્શીત (ગાંધીનગર), સુતરિયા હાર્દિક (ગાંધીનગર), રાઓલ જયપાલ (ગાંધીનગર), પરમાર રાહુલ (ગાંધીનગર), ઉન્ધડ કિંજલ (ગાંધીનગર), ભગોરા પ્રિયા (ગાંધીનગર), પરમાર ધારા (સોલા), પટેલ વશિષ્ઠ (જીસીએસ કેન્સર) ચાવડા અભિષેક (સુરત), રાઠોડ જયદીપ (પાટણ), વિરજા મિત્તલ (કરમસદ), દેવમુરારી રાજેશ્રી (ભૂજ). **ડેન્ટલ :** પટેલ અભી (ઉવારસદ), પટેલ દેવ (ઉવારસદ), પટેલ ક્ષિતિ (ઉવારસદ), મોહનીયા અક્ષય (જામનગર), પટેલ મોનલ (ઉવારસદ), પટેલ વૈદેહી (ગોએન્કા), પટેલ અક્ષય (વિસનગર), ત્રિવેદી તિર્થેશ (ગોએન્કા), પટેલ ફોરમ (ગોએન્કા), પટેલ જયન (ગોએન્કા).

રમત સ્પર્ધા

શ્રીમતી આર. એન. પટેલ પ્રાયમરી સ્કૂલ, ગાંધીનગર દ્વારા તા. ૨૩/૭/૨૦૧૨ ના રોજ યોજાયેલ ગાંધીનગર ઝોન કક્ષાની ખો-ખોની સ્પર્ધામાં કુલ – ૪ અને તા. ૨૫/૭/૨૦૧૨ ના રોજ રમાયેલ કબડ્ડી સ્પર્ધામાં કુલ – ૪ ખેલાડીઓ જિલ્લા કક્ષા માટે પસંદગી પામેલ છે. ઉપરાંત તા.૨૮/૭/૨૦૧૨ ના રોજ રમાયેલ એથ્લેટિક્સની વિવિધ રમતોમાં વિદ્યાર્થીઓએ પ્રથમ નંબર પ્રાપ્ત કરી ઉત્કૃષ્ટ દેખાવ કરી શાળાનું ગૌરવ વધારેલ છે. : ૧. ૧૦૦ મી દોડ : ડાભી અજયસિંહ ડી. (ધો–૭/એ, પ્રથમ), ૨. ૪૦૦ મી દોડ : પટેલ મયૂર જે. (ધો–૮/એ, પ્રથમ), ૩. ૬૦૦ મી દોડ : ચૌધરી જેતશી એસ. (ધો–૮/એફ, પ્રથમ), ૪. ગોળા ફેંક : રાવત અમિત કે. (ધો–૭/સી, પ્રથમ), ૫. ચક્ર ફેંક : પરમાર ડેલ્વિના એ. (ધો–૮/બી, પ્રથમ), ૬. ૧૦૦ મી દોડ : નિસરતા પાયલ બી. (ધો–૮/સી, પ્રથમ), ૭. ૨૦૦ મી દોડ : નિસરતા પાયલ બી. (ધો–૮/સી, બીજો), ૮. લાંબી કૂદ : બારિયા નિખીલ એ. (ધો–૭/સી, બીજો), ૯. ઊંચી કૂદ : પટેલ કેતન એન. (ધો–૮/એ, બીજો) અને ૧૦. ૨૦૦ મી દોડ : બિહોલા સંદિપસિંહ બી. (ધો–૮/બી, ત્રીજો).

રક્ષાબંધન

શ્રીમતી આર. એન. પટેલ પ્રાયમરી સ્કૂલ, ગાંધીનગર દ્વારા તા. ૩૧/૭/૨૦૧૨ ના રોજ રક્ષાબંધન પર્વ નિમિત્તે 'વેસ્ટમાંથી બેસ્ટ' રાખડી સ્પર્ધાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું, જેમાં ધોરણ ૬થી ૮ ના વિદ્યાર્થીઓએ ઉત્સાહભેર ભાગ લીધો. આ સ્પર્ધામાં વિજેતા વિદ્યાર્થીઓ નીચે પ્રમાણે છે : ૧. કોસ્ટા જય એસ. (ધો–૬/એ, પ્રથમ), ૨. સોલંકી ચંદ્રિકાબહેન એચ. (ધો–૬/બી, દ્વિતીય), ૩. ચૌધરી નિકિતા જી. (ધો–૬/સી, તૃતીય), ૪. પટેલ દૃષ્ટિ પંકજભાઈ (ધો–૭/ઈ, પ્રથમ), ૫. ચૌધરી સાક્ષી એન. (ધો–૭/સી, દ્વિતીય), ૬. દવે મેઘા પી. (ધો–૭/સી, તૃતીય), ૭. પાંડર રામકુમાર ગોવિંદભાઈ (ધો–

૮/સી, પ્રથમ), ૮. પંચાલ પ્રિયા ધારશીભાઈ (ધો–૮/ઈ, દ્વિતીય) અને ૯. ડામોર હર્ષ દિનેશભાઈ (ધો–૮/બી, તૃતીય).

રક્ષાબંધન પર્વ

શ્રી જનતકુમાર ભગુભાઈ પ્રાથમિક વિદ્યાલય, ગાંધીનગરમાં તા. ૧/૮/૧૨ના રોજ સ્વયં રાખડી બનાવી રક્ષાબંધનની અનોખી ઉજવણી કરવામાં આવી હતી. શાળાનાં આચાર્યા શ્રીમતી નીવાબહેન પટેલે વિદ્યાર્થીઓને બાંધવામાં આવેલી રાખડીના સુરક્ષા કવચ સાથે શાળાનાં બાળકો સુરક્ષિત રહે તેવી ગુરુભાવના વ્યક્ત કરી હતી. આ પ્રસંગે બ્રહ્માકુમારી સંસ્થામાંથી સમર્પિત બહેનોએ શાળામાં પધારી તમામ શિક્ષક ભાઈ–બહેનોને રાખડી બાંધી હતી તેમજ વિદ્યાર્થીઓને આશીર્વાદ પાઠવ્યા હતા. ભાઈ–બહેનની અતૂટ પ્રેમની પ્રતીતિ કરાવતા રક્ષાબંધનના પર્વની ઉજવણીના ભાગરૂપે વિદ્યાર્થીઓએ પર્વને અનુરૂપ ગીતો અને વક્તવ્યો રજૂ કરી ઉજવણીને વિશેષ મહત્ત્વ બક્ષ્યું હતું. રાખી બનાવવાની સ્પર્ધામાં ધોરણ – ૬, ૭ અને ૮ ના લગભગ ૧૦૫ જેટલા વિદ્યાર્થીઓએ ભાગ લઈ સુંદર રાખડીઓનું સર્જન કર્યું હતું. સ્પર્ધામાં ઉત્તીર્ણ વિદ્યાર્થીઓ :– ધોરણ–૬ : પારેખ યુગ યુ. (પ્રથમ, ધો–૬/એ), પટેલ યશ કે. (દ્વિતીય, ધો–૬/બી), પટેલ હેત એચ. (તૃતીય, ધો–૬/એફ). ધોરણ–૭ : પટેલ આયુષ પી. (પ્રથમ, ધો–૭/એ, પરમાર મનદીપ એ. (દ્વિતીય, ધો–૭/બી), સાંઘાણી સાહિલ એચ. (તૃતીય, ધો–૭/સી). ધોરણ–૮ : પટેલ પર્વ એમ. (પ્રથમ, ધો–૮/સી), પટેલ મિલવ જે. (દ્વિતીય, ધો–૮/એ), પટેલ ઉમંગ પી. (તૃતીય, ધો–૮/જી).

રમત–ગમત સ્પર્ધાઓ

શ્રીમતી આર. જી. પટેલ માધ્યમિક અને શ્રીમતી એસ. બી. પટેલ ઉચ્ચ માધ્યમિક કન્યા શાળા, ગાંધીનગરના નીચેના વિદ્યાર્થીઓ તાલુકા કક્ષાએ ઉચ્ચ સિદ્ધિ મેળવતાં જિલ્લા કક્ષાની રમતો માટે પસંદગી પામ્યા. **ખો–ખો** U-૧૯ (૧) ચૌહાણ વિલાસ આર. ધો–૧૧/ડી, (૨) ઝાલા હેમાંગી એચ ધો–૧૧/સી, (૩) મોદી રોશની એસ. ધો–૧૧/સી અને **ખો–ખો** U-૧૭ (૧) વાઘેલા મૃગેશા એચ. ધો–૯/બી, (૨) મહેશ્વરી નિશા એમ. ધો–૯/સી, (૩) ખરાડી કિંજલ એસ. ધો–૯/સી. કબડ્ડી : (૧) જાદવ પૂજા આર. ધો–૧૧/ડી, (૨) ઝાલા હેમાંગી એચ. ધો–૧૧/સી, (૩) મોદી નિશા ડી. ધો–૧૧/સી (૪) મોદી રોશની એચ. ધો–૧૧/સી (૫) સિસોદિયા મિલી એચ. ધો–૧૧/સી (૬) પટેલ દિશા કે. ધો–૧૧/સી (૭) વાઘેલા પ્રતીક્ષા પી. ધો–૧૧/એ. **વૉલીબોલ** : U-૧૯ અને U-૧૭ : સ્કૂલની આખી ટીમ. **એથલેટીક્સ** : (૧) નાયક ક્રિષ્ના જી. ધો–૧૨/સી ગોળાફેંક અને ચક્રફેંક પ્રથમ (૨) પટેલ પિંકલ જે. ધો–૧૧/સી ઊંચીકૂદ પ્રથમ (૩) પટેલ ધારા બી. ધો–૧૨/સી ૧૦૦ મી દોડ પ્રથમ. (૪) પટેલ ધારા બી. ધો–૧૨/સી ૪૦૦ મી દોડ પ્રથમ અને U-૧૭ (૧) પટેલ ક્રિષ્ના આર. ધો–૯/ડી ગોળાફેંક પ્રથમ (૨) પરમાર પ્રિયંકા આર. ધો–૯/ડી ૧૦૦ મી. દોડ પ્રથમ. વિદ્યાર્થિનીઓને તૈયાર કરનાર શિક્ષકોશ્રી પટેલ હાર્દિકભાઈ એન. તથા ઉર્વશીબહેન જોષીને અભિનંદન.

વસ્તી શિક્ષણદિન

તા. ૧૧ જુલાઈના રોજ 'વસ્તી શિક્ષણદિન' ની ઉજવણી નિમિત્તે શ્રીમતી આર. જી. પટેલ માધ્યમિક અને એસ. બી. પટેલ ઉ.મા. કન્યા શાળા, ગાંધીનગરમાં વક્તૃત્વ, નિબંધ અને ચિત્ર સ્પર્ધાઓ યોજવામાં આવી હતી, જેમાં ૯ થી ૧૧ ધોરણની વિદ્યાર્થિનીઓએ ભાગ લીધો હતો. વિદ્યાર્થિનીઓએ વિશ્વની વસ્તી, ભારતનું વસ્તીપ્રમાણ, વસ્તી વધવાનાં કારણો, અસરો, વસ્તી નિયંત્રણ, ઉપાયો વગેરે અંગે પોતાના વિચારો રજૂ કર્યા હતા. ઉપરાંત શાળાના બુલેટીન બોર્ડ પર 'વસ્તીવધારા' વિષયક માહિતી લખવામાં આવી હતી. શ્રીમતી રશ્મિબહેને ૨૦૧૧ની વસ્તીગણતરી કોના દ્વારા, કેવી રીતે, કઈ પદ્ધતિથી, તેનું કુલ ખર્ચ, સૌથી વધુ વસ્તી ધરાવતું

રાજ્ય, શહેર, જિલ્લો અને સૌથી ઓછી વસ્તીગીચતા, સાક્ષરતા વગેરે અંગે અદ્યતન માહિતી આપી હતી. વિવિધ હરીફાઈઓનાં પરિણામો આ મુજબ રહ્યાં હતાં. (૧) વક્તૃત્વ હરીફાઈ :– 'આજનો સળગતો પ્રશ્ન વસ્તી વધારો' પ્રથમ નંબરે પટેલ હેમાંગી એમ (ધોરણ–૧૧/સી), દ્વિતીય નંબરે દેસાઈ અમી જી. (ધોરણ–૧૧/એ), તૃતીય નંબરે અડાલજા દામિની બી. (ધોરણ–૧૧/ડી). (૨) ચિત્ર હરીફાઈ :– 'વસ્તી વધારો ભાગરૂપ માટે પડકાર' : પ્રથમ નંબર જાહેરી જસ્મીન એમ. (ધોરણ–૯/ઈ), દ્વિતીય નંબરે બામણિયા પૂજા એસ. (ધોરણ–૯/બી), તૃતીય નંબરે મોદી નિશા ધર્મેશકુમાર (ધોરણ–૧૧/સી). (૩) નિબંધ હરીફાઈ વિષય :– 'વસ્તી વધારો એક અભિશાપ': પ્રથમ નંબર મકવાણા અંજુ માનસિંહ (ધોરણ–૧૧/સી), દ્વિતીય નંબર બાલાસરા મૈત્રેયી દીપકકુમાર (ધોરણ–૧૧/ડી), તૃતીય નંબર પારેખ પૂજા એચ. (ધોરણ–૧૧/સી).

વિશ્વ વિજ્ઞાન દિવસ

એસ. જી. ઇંગ્લિશ મીડિયમ પ્રાથમિક શાળા, ગાંધીનગર દ્વારા જુલાઈ, માસમાં 'વિશ્વ વિજ્ઞાન દિવસ'ની ઉજવણી કરવામાં આવી. આ પ્રસંગે કેટલાક વિદ્યાર્થીઓએ આઈઝેક ન્યૂટન, થોમસ આલ્વા એડિસન, ગ્રેહામ બેલ વગેરે મહાન વૈજ્ઞાનિકોની સિદ્ધિઓ અને શોધોની ઉજવણી કરવા વિવિધ કાર્યક્રમોનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. વિદ્યાર્થીઓએ 'Is Science Boon or Curse' વિશે સુચિંતનીય વક્તવ્યો આપ્યાં હતાં. તેમજ વિવિધ વૈજ્ઞાનિક થીમને ધ્યાને લઈ ચાર્ટસ બનાવ્યા હતા. ઉલ્લેખનીય છે કે આ શાળા દ્વારા પ્રતિમાસે પસંદગીનો કોઈ એક થીમ લઈને કાર્યક્રમનું આયોજન કરવામાં આવે છે. જૂન માસનો થીમ પિતૃદિન નિયત કરવામાં આવ્યો હતો.

વૃક્ષારોપણ

તારીખ ૨૪/૭/૧૨ના રોજ શ્રીમતી આર. જી. પટેલ માધ્યમિક અને એસ. બી. પટેલ ઉ.મા. કન્યા શાળામાં વૃક્ષારોપણ કાર્યક્રમ યોજાયો. આ કાર્યક્રમમાં વનવિભાગના A.C.F. મહેન્દ્રભાઈ પી. પટેલ અને R.F.O. વી. વી. ઠાકોર ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. વૃક્ષારોપણ કાર્યક્રમ અંતર્ગતની વિદ્યાર્થિની દેસાઈ અમી (ધોરણ–૧૧/એ) એ વૃક્ષોના મહત્ત્વ વિશે પોતાના વિચારો રજૂ કર્યા, જ્યારે પરમાર મીનાક્ષી (ધોરણ–૧૧/એ) એ 'એક વૃક્ષ વાવજો' એ સંદેશ આપતું ગીત અને ગોસ્વામી કિંજલે (ધોરણ–૯/બી) 'ધ્રાસકો ધરાને' કાવ્યપઠન કર્યું હતું. ત્યારબાદ શાળાના પટાંગણમાં કુલ ૩૫ રોપાઓ વાવવામાં આવ્યા હતા. વિદ્યાર્થિનીઓએ પણ પોતાના ઘેર છોડ ઉછેરવાનો સંકલ્પ કર્યો હતો. આ ઉપરાંત તારીખ ૧૪ અને ૧૫ જુલાઈના રોજ વનવિભાગ દ્વારા ગાંધીનગરના દરેક સેક્ટરમાં રોપા વિતરણ અભિયાનનું આયોજન કર્યું હતું, જેમાં શાળાની વિદ્યાર્થિનીઓએ સક્રિય ભાગ લીધો હતો.

સર્વગ્રાહી મૂલ્યાંકન

શ્રી કે. એ. પટેલ શિવહરિ સેકન્ડરી એન્ડ હાયર સેકન્ડરી ઇંગ્લિશ મીડિયમ સ્કૂલ, કડીમાં ચાલુ વર્ષે ધોરણ – ૧૦ માં અમલમાં મુકાયેલી શાળાકીય સર્વગ્રાહી મૂલ્યાંકન પદ્ધતિ અંગે માર્ગદર્શન આપવાના હેતુથી ધોરણ–૧૦ ના વિદ્યાર્થીઓ તથા વાલીઓની મિટિંગનું આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું. જેમાં શાળાના શિક્ષકોએ શાળાકીય સર્વગ્રાહી મૂલ્યાંકનનું મહત્ત્વ વાલીઓને સમજાવ્યું હતું.

સેમેસ્ટર માર્ગદર્શન

શેઠ સી. એમ. હાઈસ્કૂલ એન્ડ હાયર સેકન્ડરી સ્કૂલ, ગાંધીનગરમાં વિજ્ઞાન પ્રવાહ ધોરણ ૧૧ ના વિદ્યાર્થીઓ માટે પ્રવેશોત્સવ અને સેમેસ્ટર પદ્ધતિનું માર્ગદર્શન રાખવામાં આવેલ. આ પ્રસંગે ધોરણ ૧૨ માં ઉજ્જ્વળ પરિણામો લાવનાર પ્રથમ દસ વિદ્યાર્થીઓને સન્માનવામાં આવ્યા હતા. કુ. ચેતનાબહેન જોષી અને શ્રી જે. જે. પટેલે આભારવિધિ અને કાર્યક્રમનું સંચાલન કર્યું હતું.

ગ્રંથસૌરભ

શીર્ષક : રવીન્દ્રનાથ ટાગોરનો વિનોદવૈભવ
સંપાદક : પી. પ્રકાશ વેગડ
પ્રકાશક : અમદાવાદ : પાર્શ્વ પબ્લિકેશન, ૨૦૧૨
૮૬ પૃ. કિં. રૂ. ૬૦/–

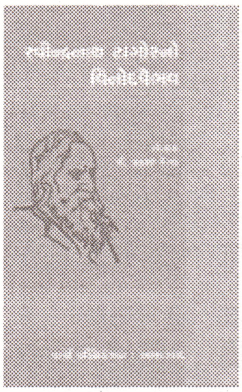

પ્રસ્તુત ગ્રંથના પ્રારંભે સંપાદકે નોંધ્યું છે કે 'રવીન્દ્રનાથ ટાગોર પ્રખર વિનોદવૃત્તિ ધરાવતા મહામાનવી હતા. તેમણે પોતાના સાહિત્યમાં પણ વૈવિધ્યપૂર્ણ અને માતબર હાસ્ય પ્રયોજ્યું છે પણ આશ્ચર્યની વાત છે કે તેમના વ્યક્તિત્વનું આ પાસું અત્યંત પ્રભાવક હોવા છતાં આજ સુધી એની ઘોર ઉપેક્ષા કરવામાં આવી છે. ...અપવાદ તરીકે એક અંગ્રેજી ગ્રંથ જોવા મળ્યો પણ એ ખૂબ નબળો છે. એમાં હાસ્યદૃષ્ટાંતો નહિવત્ અને શુષ્ક વિવરણની ભરમાર છે. એ છે : રામનિવાસ લખોટિયા કૃત 'Tagore as a Humorist', (૧૯૬૧, ૧૨૧ p)'' આ વિધાન કર્યા બાદ સંપાદકે આ પાછળની ઉદાસીનતાનાં સંભવિત કારણો તેમજ રવીન્દ્ર સાહિત્યના પ્રખર અભ્યાસી નીરદ ચૌધરી, મહેશ દવે, રોધેન્સ્ટાઈનના પુત્ર વગેરેનાં મંતવ્યો તપાસ્યાં અને વિક્ટોરિયા ઓકામ્પો, મૈત્રેયી દેવી તથા પ્રતિમા દેવીના અંગત અનુભવોમાંથી પણ પસાર થયા ! સંપાદકશ્રીનું આ તારણ અને શોધયાત્રા – જિજ્ઞાસાવૃત્તિએ મૂઠી ઊંચેરા ધ્યેયનિષ્ઠ, સહૃદયી ગ્રંથાલયી અને સૂચિવિદ્ તથા આકંઠ સાહિત્ય – સંશોધકનું પરિચાયક બની રહે છે, જેની પ્રતીતિ શ્રી પ્રકાશભાઈએ તેમના દ્વારા સંપાદિત–પ્રકાશિત ૧૧ હાસ્ય સંપાદનો, 'વિશ્વનો સંસ્કારવારસો', શતાધિક સંદર્ભસૂચિઓ વગેરેના માધ્યમથી કરાવી છે. ગુજરાતી વાઙ્મયસૂચિ સેવા ક્ષેત્રે તેમનું પ્રદાન ઝળહળતા પ્રકાશસ્તંભ સમાન છે. આ ગ્રંથને આવકારતાં ડૉ. ભરત મહેતાએ કરેલ માર્મિક ટકોર – 'આપણે ભલે સંશોધનો, સંપાદનો મન ફાવે તેમ કરતા હોઈએ પણ આવા ચયનોને સંશોધન / સંપાદન ગણાવાનો આપણે ત્યાં રિવાજ નથી. જ્ઞાનસત્રોના એકેય સરવૈયામાં પ્રકાશભાઈનાં કાર્યો પર કોઈએ પ્રકાશ ફેંક્યો નથી.... આ નિમિત્તે આપણા માપદંડો ઉપર ચઢી ગયેલી ધૂળને આપણે ખંખેરવી જોઈએ. 'વિશ્વનો સંસ્કાર વારસો' એમનું આવું જ સંશોધન સંપાદન છે.... ટાગોર સાહિત્યમાંથી ઊભી થતી, ફળવતી બનતી રસસૃષ્ટિમાં, જીવનદૃષ્ટિમાં એમની વિનોદપ્રિયતાનો ફાળો નાનોસૂનો નથી. એ તરફ પ્રકાશ ફેંકી પ્રકાશભાઈએ ટાગોર સાહિત્યના રસપ્રદ પરિમાણ તરફ આપણું ધ્યાન ખેંચ્યું છે એ બાબતને ગંભીરતાપૂર્વક નોધવી જોઈએ' – પ્રકાશભાઈના પ્રદાનના મૂલ્યાંકન માટે ધ્યાનાર્હ બની રહે છે.

સંપાદક – સંશોધક પ્રકાશભાઈએ ટાગોરના વિનોદવૈભવનો મધપૂડો તૈયાર કરવા માટે ગુજરાતીમાં અનુદિત ટાગોર સાહિત્યનું અવગાહન કરીને તેમાંથી પસંદગીના ૩૧ ગ્રંથો, ૩ હિન્દી અનુવાદો અને ટાગોર વિષયક ૧૧ અંગ્રેજી ગ્રંથોનો આધાર લીધો છે. ગુજરાતી ગ્રંથોમાં મૂળ રચનાઓના અનુવાદો ઉપરાંત ટાગોર વિષયક સાહિત્યનો પણ ઉપયોગ કર્યો છે. ટાગોરની વિનોદવૃત્તિ તેમના પત્રસાહિત્ય, જીવનચરિત્ર, ટૂંકીવાર્તા, પ્રહસન, નિબંધ, પ્રવાસ અને કવિતામાંથી

વીણવા ઉપરાંત તેમના જીવનના હાસ્યપ્રસંગોમાંથી પણ વીણીને નોંધી છે. અહીં વિનોદ – રમૂજ વ્યક્ત કરતાં મૂળ વિધાનોનો માત્ર સંગ્રહ ન કરતાં વિનોદ સૂચક સંબંધિત ઘટના અને કૃતિનો સંદર્ભ અને પરિચય લાઘવતાપૂર્વક આપ્યો છે, તેમજ એક કૃતિના એકથી વધુ અનુવાદો તપાસવાનું પણ ચૂકયા નથી, જે વિશેષ ધ્યાનાર્હ બની રહે છે. સાથે સાથે સંપાદકે પ્રસંગોપાત્ત એક ભાવક તરીકે આ વિનોદવૃત્તિનું મૂલ્યાંકન પણ કર્યું છે અને કોઈ વ્યક્તિમાં વિનોદવૃત્તિ માટે શું અપેક્ષિત બની રહે છે તે જણાવવાનું ચૂકયા નથી. તેમના જ શબ્દોમાં 'આ ગમ્મત તેમની મહાનતા છે. કેમકે એ માટે વિદ્વત્તા અને અહંકાર ત્યજવો પડે, ઊંચનીચનો ભેદભાવ ભૂલવો પડે અને બધા લોકો સાથે આત્મીયતા અને નિખાલસતા દાખવવી પડે.' અર્થાત્ આવા ગુણોથી સંપન્ન વ્યક્તિ જ વિનોદવૃત્તિ પોષી શકે.

ગુરુદેવના વિનોદનું વિષય ફલક પણ ઘણું વ્યાપક રહ્યું છે, જેમકે સાહિત્ય, સાહિત્યિક ચોરી, સંપાદકીય વૃત્તિ, સાહિત્યનું સ્તર, વિવેચન, કવિતાશિક્ષણ, કવિત્વશક્તિ, શિક્ષણ, સ્ત્રીઓ, સ્ત્રીપુરુષ સંબંધો, સમાજ, ચિત્રકળા, નસીબ, કાળીઘાટ ઉપર બકરાંનો ભોગ, કાળગ્રસ્ત રૂઢિઓ વગેરે. અહીં વાચ્યાર્થ તરીકે ભાવકને ટાગોરની વ્યંગ – વિનોદવૃત્તિ જોવા મળે છે, પરંતુ આ બધા વિષયો પાછળ ગુરુદેવનું ચિંતન, બૌદ્ધિક ચાતુર્ય, જીવનદૃષ્ટિ, કુટુંબભાવના, સાહિત્ય પ્રત્યેનો અભિગમ વગેરેનાં દર્શન થાય છે. હળવી શૈલીમાં કવિ પોતાને શું અભિપ્રેત છે તેનો અણસાર આપી દે છે. કવિવરના વ્યંગ – વિનોદમાં રહેલ ગાંભીર્ય અને વૈવિધ્યશીલતાનાં કેટલાંક ઉદાહરણો દૃષ્ટવ્ય છે :

અભિપ્રાય : ગુરુદેવના અભિપ્રાયોનો વ્યાપારી ઉપયોગ થતાં તેમના સેક્રેટરીએ સલાહ આપી, 'બાબુ મોશાય, તમે જેવા-તેવા માણસોને તમારો અભિપ્રાય આપી દો છો એ યોગ્ય નથી' લિયોનાર્દનો ગંભીર ચહેરો જોઈને તેમને રમતસૂઝી, 'ડિયર લિયોનાર્દ, હું જેવા-તેવા અભિપ્રાયો તો નથી આપતો ને ? આ જુઓ છો ને મારી દાઢી ! મેં રેઝર બ્લેડ માટે કદી ઊંચો અભિપ્રાય નથી આપ્યો ! અને હસી પડ્યા.'

ગાંધી–ટાગોર : જાન્યુઆરી ૧૯૩૦માં અમદાવાદ આવેલા ટાગોરનું સ્વાગત કરતાં ગાંધીજીએ વિનોદમાં કહ્યું : 'કવિશ્રી ! ઢીલા ઢાલા કેમ ચાલો છો ?'

મલકાઈને કહ્યું : 'સિત્તેરનો થયો એટલે તમારા કરતાં ઘણો મોટો કહેવાઉ ને ?'

ગાંધીજીએ સિક્સર મારી : 'તમારી એ વાત સાચી, પણ જ્યાં સાઈઠ વરસનો વૃદ્ધ નાચી શકતો નથી, ત્યાં સિત્તેર વરસનો યુવાન કવિ હજીએ નાચી શકે છે !' અને હસી પડ્યા.

ભાનુસિંહ ઠાકુરની પદાવલિ : કવિવરે વૈષ્ણવ ગીત કવિઓથી પ્રભાવિત થઈ છદ્મ નામ હેઠળ કેટલાંક કાવ્યો 'ભારતી'માં છપાવ્યાં અને તેમના મિત્રને બતાવીને કહ્યું : બ્રહ્મસમાજના પુસ્તકાલયમાંથી શોધ કરતાં મને ભાનુસિંહ નામક જૂના કવિનાં ગીતો મળ્યાં તે મેં ઉતારી લીધાં છે અને મિત્રને વાંચી સંભળાવ્યાં. કાવ્યરસિક ઉત્સાહી મિત્ર તરત જ બોલી ઊઠ્યા : 'આવી કવિતા તો વિદ્યાપતિ કે ચંડીદાસ પણ લખી શકે નહિ !' મને હસ્તપ્રત આપો, છપાવવા માટે અક્ષયબાબુને મોકલી આપું. પોતાની ગમ્મત કામિયાબ થતાં રવિબાબુ ખડખડાટ હસી પડ્યા અને કહ્યું : 'આ કાવ્યોનો કર્તા હું પોતે છું !'

આ કાવ્યોની એક મોટી ગમ્મત સરજાઈ. જર્મનીમાં અભ્યાસ કરી રહેલા નિશીકાંત ચેટરજીએ પોતાની પીએચ.ડી. થીસિસ 'Comparative Study of the Short European Poetry With Bengali Lyrical Songs'માં ભાનુસિંહને એમ કહીને બિરદાવ્યા છે કે કોઈપણ વર્તમાન કવિ

તેમની કાવ્યપ્રતિભાને પહોંચી શકે એમ નથી. એ શોધ માટે તેમને ડૉક્ટરેટની પદવી એનાયત કરવામાં આવી !

આપણી સંશોધનવૃત્તિ ઉપરનું આ એક ભીષણ વ્યંગ છે. આ પ્રસંગ ઉપરથી ટાગોરે એક હાસ્યનિબંધ લખ્યો – 'ભાનુસિંહ ઠાકુરનું જીવન' આ લેખે મનોરંજનનો ભરપૂર મસાલો પૂરો પાડ્યો હતો, જેમાં તેમના હાસ્યસર્જનનો ઉન્મેષ પણ દૃષ્ટિગોચર થાય છે. (પૃ. ૩૧)

હળવી પળો : ગુરુદેવની ૭૭ મી જન્મજયંતી પ્રસંગે તેમને અભિનંદન આપવા મૈત્રેયી દેવી અને તેમના પતિ ડૉ. સેન અને મૈત્રેયી દેવીનાં નાનાં બહેન ચિત્રા ગયાં હતાં. તેમને જોતાં જ ગુરુદેવે ચાંચલ્યભર્યું સ્મિત ફરકાવતાં કહ્યું : 'અરે ડૉક્ટર ! તમે તો જબરા નસીબદાર છો ! એક હકની ને બીજી લટકાની ! વાહ રે ! અમારા તો આવાં નસીબ નહોતાં !'

સુરેન્દ્રનાથ દાસગુપ્તાના ઘેર ગયેલા રવીન્દ્રનાથે તેમની પુત્રી મૈત્રેયી દેવીએ ઘોડેસ્વારનું દોરેલું એક ચિત્ર દીવાલ ઉપર લટકતું જોતાં બોલી ઊઠ્યા : 'સુરેન્દ્રબાબુ ! આ નવયુવાન જ આવવાનો છે કે શું ? અને હસી પડ્યા.'

વિવેચન : આચાર્ય હજારીપ્રસાદે ટાગોરની કાવ્યપ્રતિભા ઉપર લખેલો લેખ જોઈને ગુરુદેવે કહ્યું : 'ઘણો સારો લેખ છે. મને એ વાતનો આનંદ છે કે તેં અભ્યાસ કરીને લખ્યો છે.' પછી જરા વિનોદના સ્વરમાં ઉમેર્યું, 'મેં એવા વિવેચકો જોયા છે જે વાંચ્યા વિના લખી નાખે છે !'

હરીફ : એકવાર કોઈએ રવીન્દ્રનાથને પોતાનો નવો કાવ્યસંગ્રહ ભેટ મોકલાવ્યો અને રમૂજ ખાતર આગળના પાનમાં મોકલનાર તરીકે 'ટાગોરનો હરીફ' લખ્યું. સમયાન્તરે કવિ સંમેલનમાં કવિવર કાવ્યપાઠ કરી રહ્યા હતા તેવામાં કૂતરાના ભસવાનો અવાજ સાંભળતાં હસતાં હસતાં કહ્યું : 'તમે મારું ગીત સાંભળવા ઇચ્છતા હો તો તમારે સૌથી પહેલાં મારા 'હરીફ'ને ચૂપ કરાવવો પડશે !' અને હસતાં હસતાં કાવ્યસંગ્રહ આપનારનો પરિચય આપ્યો.

રવીન્દ્રનાથની વિનોદવૃત્તિ વિશે મૈત્રેયી દેવી, સુનીતિકુમાર ચેટરજી, ભોળાભાઈ પટેલ અને ટાગોરનાં પુત્રવધૂ પ્રતિમા દેવીનાં નિરીક્ષણો અને ટાગોર સ્વયંની વિનોદ વિભાવના તેમના જ શબ્દોમાં તુલનાત્મક પરિપ્રેક્ષ્યમાં મૂકી આપીને પ્રસ્તુત વિષય સંદર્ભે ભાવિ સંશોધકો માટે એક કેડી કંડારી આપી છે. સંપાદકે ગુરુદેવનો વિનોદ માણ્યો છે, તેનું ચિંતન કર્યું છે જેની પ્રતીતિ ગ્રંથાન્તે વ્યકત કરેલા શબ્દોમાં પ્રસ્ફૂટિત થાય છે : 'વિનોદ એ રવીન્દ્રનાથની સહજ પ્રકૃતિ હતી, એ તેમનો અસલી ચહેરો હતો. વિનોદવૃત્તિને તેઓ માનવજાતનું શ્રેષ્ઠત્વ માનતા હતા અને એ શ્રેષ્ઠત્વ તેમણે જીવનના અંત સુધી જાળવી રાખ્યું હતું. તેમની દાર્શનિકતા ને ગહન – ગંભીરતા એ તેમની પ્રકૃતિ નથી, એ તેમની બૌદ્ધિકતાની ઊપજ છે.' – દ્વારા કરાવી છે.

– મણિભાઈ પ્રજાપતિ

શીર્ષક : સ્નાતક પછી શું ?
લેખન – સંકલન : આર. એન. કોટક સંપા. જગદીશ પટેલ
પ્રકાશક : અમદાવાદ : લિબર્ટી બુક ડીપો, ૨૦૧૨ ૧૬૦ પૃ. કિં રૂ. ૯૦/-

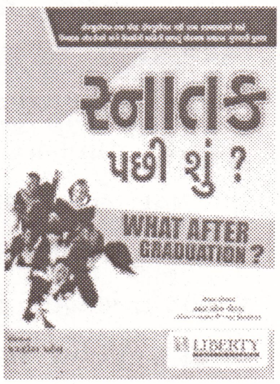

ધોરણ – ૧૨ પાસ કર્યા બાદ ઘણી વાર યોગ્ય માર્ગદર્શન કે ચોક્કસ ધ્યેયના અભાવમાં ભવિષ્યનો ખ્યાલ રાખ્યા સિવાય ગાડરિયા પ્રવાહમાં તણાઈને ઉપલબ્ધ સ્થાનિક અનુકૂળતાઓને ધ્યાને લઈ કૉલેજમાં પ્રવેશ મેળવી લેવાનું વલણ જોવા

મળે છે. આજની સમસ્યાનો ઉકેલ આવતી કાલ ઉપર લાદવાથી ત્રણ વર્ષ બાદ સમસ્યામાં ઉમેરણ સાથે પ્રશ્ન ઉદ્ભવે છે કે સ્નાતક તો થઈ ગયા, હવે શું? સ્નાતકની ડિગ્રી બાદ અને નોકરી મેળવવી દોહ્યલી થઈ જતાં વિદ્યાર્થી હતાશા અનુભવતાં અસમંજસ સ્થિતિમાં મુકાઈ જાય છે. હકકીતમાં સ્નાતક પછી વિદ્યાર્થી માટે અનેકવિધ અપાર શક્યતાઓનાં દ્વાર ખૂલી જાય છે. તેણે પોતાની સામેના પડકારને ઝીલી લઈને તેનો દૃઢતાથી સામનો કરવા તૈયાર રહેવાની જરૂર છે. તેની નજર સમક્ષ સ્વામી વિવેકાનંદ પ્રદત્ત સૂત્ર 'ઉઠો, જાગો અને ધ્યેયપ્રાપ્તિ સુધી મંડ્યા રહો' સતત તરવરતું રહેવું જોઈએ અને તેને સાકાર કરવા કટિબદ્ધ થવું જોઈએ.

અહીં લેખકે સ્નાતક પછી પ્રાપ્ય ૬ મુખ્ય વિકલ્પો : ૧. મૂળ વિષય ફેકલ્ટીમાં અનુસ્નાતક અભ્યાસ, ઉદા. તરીકે એમ.એ., એમ.એસ.સી. વગેરે. ૨. સ્નાતક કક્ષાના સ્પેશિયલ કોર્સ, ઉદા. તરીકે એલએલ.બી., બી.એડ, લાઇબ્રેરી સાયન્સ, બી.પી.એડ. વગેરે. ૩. પ્રોફેશનલ અનુસ્નાતક ડિગ્રી / ડિપ્લોમા, ઉદા. તરીકે એમ.બી.એ., એમ.સી.એ, એમ.એલ.ડબલ્યૂ વગેરે. ૪. પત્રાચાર પાર્ટ ટાઈમ કોર્સિસ, ઉદા. તરીકે સી.એ., સી.એસ. વગેરે. ૫. રોજગારલક્ષી સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષાઓ ઉદા. તરીકે બેંક ઓફિસર, ગુજરાત એડમિનિસ્ટ્રેટીવ સર્વિસ, મિલેટરી વગેરે અને ૬. ઉદ્યોગ સાહસિકતા – અભ્યાસક્રમો દર્શાવીને તે અંગે છણાવટ કરી છે. સ્નાતકની ડિગ્રીથી સંતોષ ન અનુભવતાં સ્નાતકોત્તર વ્યવસાયલક્ષી અભ્યાસક્રમો કે જે થકી નોકરી મળવાની શકયતાઓ વધી જાય છે તેની અને વિવિધ પ્રકારની સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષાઓ માટે તૈયારી આરંભવા લેખકે ભારપૂર્વક અપીલ કરી છે. સ્પર્ધાત્મક પરીક્ષાઓ અંતર્ગત બેંક, રેલવે, ભૂમિદળ, હવાઈદળ, એરફોર્સ, કોસ્ટલ ગાર્ડ, સ્ટાફ સિલેકશન કમિશન, ગુજરાત જાહેર સેવા આયોગ તથા ગૌણ સેવા પસંદગી મંડળ / પંચાયતનું સેવા પસંદગી મંડળ, પોલીસ વગેરે ક્ષેત્રોની પરીક્ષાનું માળખું, અભ્યાસક્રમ, આવશ્યક લાયકાત, વયમર્યાદા, પસંદગી પ્રક્રિયા, જે તે સંસ્થાની વેબસાઈટનું એડ્રેસ, ફોન નંબર અને સંસ્થાનો જાણવા જોગ રસપ્રદ મિતાક્ષરી શૈલીમાં પરિચય વગેરે સંબંધી માહિતી કાળજીપૂર્વક આપવામાં આવી છે. ઉદા. તરીકે બેંક અને વીમા કંપનીઓ, ભારતીય રેલવે, ગુજરાત જાહેર સેવા આયોગ વગેરે સંબંધી સંસ્થા પરિચયો વિદ્યાર્થીઓને જ્ઞાનસમૃદ્ધ કરે તેવા છે. આ વિગતોના આધારે વિદ્યાર્થી પોતાની ક્ષમતા તપાસીને અંગત રસ–રુચિને ધ્યાને લઈ કેટલાક વિકલ્પો સાથે ક્ષેત્રો પસંદ કરી ધ્યેયનિષ્ઠ મહેનત કરે તો અચૂક સફળતા હાંસલ કરી શકે છે. આ પ્રાથમિક માહિતીના આધારે વિદ્યાર્થી પોતાની સજ્જતા કેળવી શકે છે. અહીં UPSCની ભરતી પરીક્ષાઓ અને સિવિલ સર્વિસ ભરતી પરીક્ષાઓ અને તત્સંબંધી આનુસંગિક પાસાંઓ વિશે વિસ્તારથી માહિતી આપવામાં આવી છે. આ ઉપરાંત અનુસ્નાતક અભ્યાસ માટે ગુજરાતની અને દેશની પ્રમુખ યુનિવર્સિટીઓની યાદી નામ – સરનામાં, વિવિધ અભ્યાસક્રમો માટે દૂરવર્તી શિક્ષણની સગવડો, વિદેશ અભ્યાસની પ્રક્રિયા વગેરે તેમજ સ્નાતકોને સ્વરોજગારી ઊભી કરવા માટે લોનધિરાણ સહાય આપતી કેટલીક સંસ્થાઓના પરિચયો, પ્રવૃત્તિઓ અને સરનામાં વગેરે બાબતોને આવરી લેવામાં આવી છે.

સમગ્રતયા આ પુસ્તિકા ખરા અર્થમાં જ્ઞાન અને માહિતીસભરકોશ સમાન બની છે માત્ર વિદ્યાર્થીઓ જ નહીં પરંતુ વાલીઓ અને શિક્ષકોએ પણ આ પુસ્તિકાનું વાચન કરવા જેવું છે, જે અંતતઃ ઉભયપક્ષે લાભદાયી બની રહેશે. અહીં માત્ર માહિતીનું સંકલન જ નથી. પરંતુ, પ્રસ્તુત વિષય સંદર્ભે લેખકનો સુદીર્ઘ અનુભવ પણ વાચા પામ્યો છે, જેનો મોટો લાભ તેના વાચકને મળી રહે છે.

– મણિભાઈ પ્રજાપતિ

સંસ્થા પરિચય

મમતા આઈ.એ.એસ. ટ્રેનિંગ સેન્ટર : એક પરિચય

સર્વ વિદ્યાલય કેળવણી મંડળ સંચાલિત મમતા આઈ.એ.એસ. ટ્રેનિંગ સેન્ટર, સેક્ટર–૨૩, ગાંધીનગરની સ્થાપના સર્વ વિદ્યાલયના ભૂતપૂર્વ, તેજસ્વી અને યશસ્વી વિદ્યાર્થી તથા અગ્રણી ઉદ્યોગપતિ સ્વ. શ્રી નરસિંહભાઈ કે. પટેલે ઈ.સ. ૨૦૦૨માં કરી હતી. વર્ષ : ૨૦૧૦–૧૧માં આ સેન્ટરને સ્પીપા સમકક્ષ બનાવવાનું સૂચન સંસ્થાના સ્વ. ચેરમેનશ્રી માણેકલાલ એમ. પટેલ સાહેબ તથા તત્કાલીન વાઈસ ચેરમેન શ્રી વલ્લભભાઈ એમ. પટેલે કર્યું હતું. તેઓશ્રીના સૂચન મુજબ સ્પીપાના ભૂતપૂર્વ સંયુક્ત નિયામક શ્રી સતીશભાઈ પટેલની 'સલાહકાર' તરીકે સેવાઓ લેવામાં આવે છે. સ્પીપાના અભૂતપૂર્વ વિકાસના તેઓશ્રી પ્રણેતા છે.

સંસ્થામાં ગ્રંથાલયને સમૃદ્ધ કરવા આશરે બે લાખ રૂપિયાની કિંમતનાં નવાં પુસ્તકો ખરીદવામાં આવ્યાં છે. ગ્રંથાલયમાં ૧૬ દૈનિક સમાચાર પત્રો, ૫૦ જેટલાં સામયિકો, ગુજરાતી વિશ્વકોશ, વિવિધ ભાષાના શબ્દકોશો ઉપરાંત આશરે ૨૫૪૦ જેટલાં મહત્ત્વપૂર્ણ પુસ્તકો ઉપલબ્ધ છે. આ ઉપરાંત સતત નવું અભ્યાસકેન્દ્રી સાહિત્ય ગ્રંથાલયમાં ઉમેરાતું જાય છે. વાંચવા માટે અલગ-અલગ કેબિનો તથા અલગ વર્તમાનપત્ર ખંડ તેમજ માત્ર ન્યુઝ અને નોલેજની ચેનલોવાળા ટી.વી. રૂમની વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. વિઝ્યૂઅલ પ્રેઝન્ટેશન માટે અલગ સેમિનાર હૉલની પણ સગવડ વિકસાવવામાં આવી છે. વિદ્યાર્થીઓ માહિતીની દુનિયામાં પાછળ રહી ન જાય તે હેતુથી Computer Lab, ઇન્ટરનેટના જોડાણ સાથે બનાવવામાં આવી છે જે કદાચ સમગ્ર ગુજરાતમાં અજોડ છે. અહી વિદ્યાર્થીઓ વિવિધ વેબસાઈટસ સર્ફ કરીને પોતાનું જ્ઞાન વધારી શકે છે.

સેન્ટરમાં વિદ્યાર્થીઓ માટે બે પ્રકારની બેચ ચલાવવામાં આવે છે. (૧) નિયમિત બેચઃ જેમાં લેખિત અને મૌખિક પ્રવેશ પરીક્ષા દ્વારા પ્રત્યેક વિદ્યાર્થીને ચકાસીને મેરિટના ધોરણે પ્રવેશ આપવામાં આવે છે. જે નિયમિતપણે સોમથી શનિ સવારે ૯થી ૫ કલાક સુધી ચલાવવામાં આવે છે. આ બેચ ફુલટાઇમ છે. (૨) વીક એન્ડ બેચ : દર રવિવારે. શાળા–કૉલેજના વિદ્યાર્થીઓ તેમજ નોકરી કરતા ઉમેદવારો માટે ચલાવવામાં આવે છે. સમગ્ર ગુજરાતમાંથી સારા વિદ્યાર્થીઓ મળી રહે તે માટે કારકિર્દી માર્ગદર્શનના જાહેર સેમિનાર પણ યોજવામાં આવે છે. આ વર્ષે પણ બેથી વધુ સેમિનારનું આયોજન થયું હતું. જેમાં શ્રી સતીશભાઈ પટેલનું પ્રેરક માર્ગદર્શન મળ્યું હતું.

'સ્પીપા'માં પ્રવેશ મેળવવા ઇચ્છતા, પરંતુ મર્યાદિત પ્રવેશ સંખ્યાને કારણે પ્રવેશવંચિત વિદ્યાર્થીઓને 'સ્પીપા'નું વાતાવરણ અને સંતોષ મળે તે હેતુથી સ્પીપાની જ ફેકલ્ટીને આ કેન્દ્રમાં કોચિંગ માટે બોલાવવામાં આવે છે. વધુમાં સ્પીપામાં જ્યારે દિલ્હીના તજજ્ઞોના વ્યાખ્યાનોનું આયોજન થાય તે વ્યાખ્યાનનો લાભ આ કેન્દ્રના વિદ્યાર્થીઓને મળે તેનું પણ આયોજન કરવામાં આવે છે. આ બાબતનો, આ કેન્દ્રના વિદ્યાર્થીઓને સંતોષ અને આનંદ છે. દિલ્હીના સુવિખ્યાત કલાસીસ જેવા કે વાજીરામ એન્ડ રવિ, એએલએસ

વગેરેમાંથી ટેસ્ટ પેપર સીરીઝ મંગાવીને સંખ્યાબંધ વીકલી ટેસ્ટ લેવામાં આવે છે. તેનાથી તેમની પરીક્ષાલક્ષી તૈયારી ખૂબ સારી થઈ શકી છે.

વહીવટી ક્ષેત્રોમાં ઉત્કૃષ્ટ કામગીરી કરેલ હોય તથા ફેકલ્ટી તરીકે જેમની પ્રતિષ્ઠા બંધાઈ ચૂકી હોય તેવા નિષ્ણાત તજજ્ઞોને આ કેન્દ્રમાં વ્યાખ્યાન આપવા નિમંત્રવામાં આવે છે. તેના કારણે વિદ્યાર્થીઓને પ્રેરક – પ્રોત્સાહક તેમજ પરીક્ષાલક્ષી માર્ગદર્શન પૂરતા પ્રમાણમાં મળી રહે છે અને તેથી જ સારા પરિણામની આશા રાખી શકાય છે. આમંત્રિત કરવામાં આવનાર તજજ્ઞોમાં શ્રી વી. આર. એસ. કૌલગી (રિટાયર્ડ IAS), શ્રી દિલીપભાઈ રાણા (IAS), શ્રી વિજય ખરાડી (IAS), શ્રી ધવલ પટેલ (IAS), શ્રી ધ્રુમન નિંબાળે (IPS), શ્રીમતી લીના પાટીલ (IPS), શ્રી હીતેશ જોયસર (IPS), શ્રી મનીષ અજુડિયા (IRS), શ્રીમતી ભૂમિકા પટેલ (IRS), શ્રી મનહર યાદવ (IFS), શ્રી આનંદ પટેલ (IAS), શ્રી સુજલ મયાત્રા (IAS), શ્રી રોહિત શુક્લ, શ્રી હેમંત શાહ, શ્રી સતીશ વ્યાસ, શ્રી ચીનુ મોદી ઇત્યાદિનો સમાવેશ થાય છે.

વિદ્યાર્થીઓ માટે રાત્રિના ૧૨ કલાક સુધી વાંચવાની સગવડ કરી આપવામાં આવી છે તેમજ પરીક્ષાની નજીકના સમયમાં મોડી રાત / વહેલી સવાર સુધી આ સગવડો વિસ્તારવાનું આયોજન કરવામાં આવ્યું છે. વિદ્યાર્થીઓની હાજરી ફરજિયાત બનાવવામાં આવી છે. પ્રત્યેક સેશનમાં હાજરી નોંધવાની અને ગેરહાજરી ચલાવી નહીં લેવાની વ્યવસ્થા કરવામાં આવી છે. તેમજ સેશન દરમિયાન શાંતિ જળવાઈ રહે અને કોઈ ખલેલ ન પડે તે હેતુસર સવારે – ૯.૦૦થી સાંજે ૫.૦૦ સુધી બધાના મોબાઈલ એક નિશ્ચિત જગ્યાએ મૂકાવી દેવામાં આવે છે, તેનું સારું પરિણામ જોવા મળ્યું છે.

'પહાડની બરફની પીઠ પર ઘણા લોકો ઊંચે સુધી ચઢ્યા છે. નીચે ઊભેલા સાથીઓને સાદ પાડે છે. બાળકો, કિશોરો, મહિલાઓ સૌ બરફનો આનંદ લઈ રહ્યાં છે. એક જાડા સરદારજી સરકવા જતાં લપસી ગોથમડું ખાઈ ગયા ને પછી તો ઝડપથી નીચે ગબડ્યા હતા.... બધાને એમણે વિનોદ પૂરો પાડ્યો. કેટલાંક નવદંપતી એકબીજાને બરફના ગોળાથી પ્રહાર કરવાનો આનંદ લેતાં હતાં... આ માનવમેળામાં હું વળી પાછો મને એકાકી અનુભવવા લાગ્યો. કદાચ રોહતાંગની ધારે ન જવાયું તેથી. રસ્તાની ધારે એક શિલા પર બેસી તટસ્થભાવે સૌ પ્રવાસીઓને જોવા લાગ્યો. આટલી ઊંચાઈએ એકલા હોવાના ભાવને દૂર કેમ કરવો ? આસપાસ ઊભેલા પહાડો પણ પછી તો મને એકાકી લાગ્યા. દૂર એક પહાડ પરથી પડતો ધોધવો પણ એકાકી લાગ્યો. આટલા બધા કલાકોમાં હું એક શબ્દ પણ બોલ્યો નથી, એ યાદ આવ્યું. આ વિરાટ સાંનિધ્યમાં, આત્મવિસ્મૃત થવાની ક્ષણોમાં આત્મભાન પ્રબળ થઈ આવ્યું. હતું. (પૃ. - ૫૧ 'દેવોની ઘાટી')

ટાઈપસેટિંગ અને મુદ્રક : શારદા મુદ્રણાલય, ૨૦૧, તિલકરાજ, પંચવટી પહેલી લેન, આંબાવાડી, અમદાવાદ-૩૮૦૦૦૬ ફોન : ૨૬૫૬૪૨૭૯

પ્રકાશક : કુલસચિવ, સર્વ વિશ્વવિદ્યાલય, સેક્ટર-૧૫, ગાંધીનગર-૩૮૨૦૧૫ ફોન : ૨૩૨૪૪૬૯૦

એસ. એસ. પટેલ કોલેજ, ઓફ એજ્યુકેશન, ગાંધીનગર દ્વારા તા. ૧૬–૧૭ જુલાઈ, ૨૦૧૨ના દિવસોમાં આયોજિત પરિસંવાદ સમારોહ પ્રસંગે હે.ઉ.ગુ. યુનિવર્સિટીના પૂર્વ ઉપકુલપતિ ડૉ. દાઉદભાઈ ઘાંચીનું સ્વાગત કરતા ડૉ. સંજય ગુપ્તા

મમતા આઈ.એ.એસ. ટ્રેનિંગ સેન્ટર, ગાંધીનગરના ગ્રંથાલય / વાચનાલયનાં બે દશ્યો

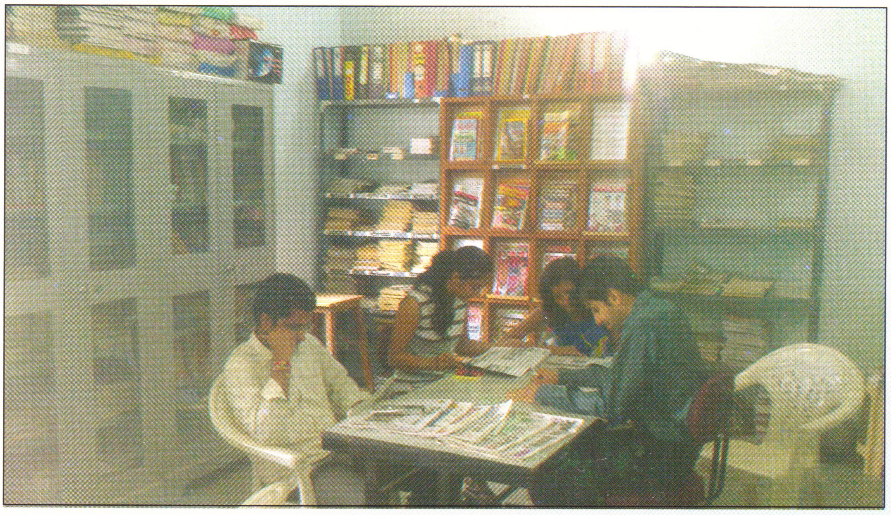

Sarva Vishwavidyalaya Vṛtta : *News Letter of Kadi Sarva Vishwavidyalaya, Gandhinagar*
Year 2, Issue No. 4 July-August, 2012
Editor : Manibhai Prajapati
Published by Registrar, Kadi Sarva Vishwavidyalaya, Sector-15,
L.D.R.P. Engineering College Campus, Gandhinagar-382015

એસ. એસ. પટેલ કોલેજ, ઓફ એજ્યુકેશન, ગાંધીનગર દ્વારા તા. ૧૬–૧૭ જુલાઈ, ૨૦૧૨ના દિવસોમાં આયોજિત પરિસંવાદ પ્રસંગે મંચસ્થ મહાનુભાવો : ડૉ. કનુભાઈ પટેલ, શ્રી ડી.ટી.કાપડિયા, ડૉ. જિતેન્દ્ર પંચોલી, ડૉ. વીણાબહેન પટેલ વગેરે.